Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

उत्कलीय कवि विभूति

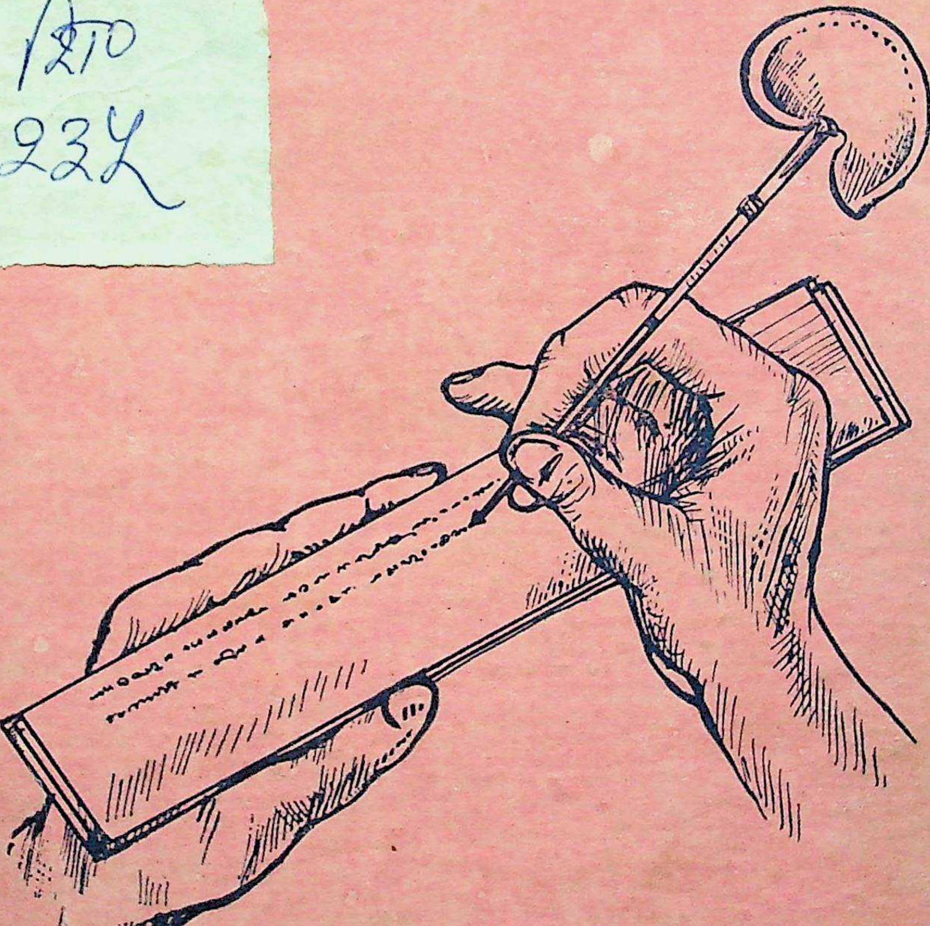

उत्कल नागरी लिपि परिषद

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

शि०२३५

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

उत्कलीय कविविभूति

(उत्कलके प्रसिद्ध कविओंकी रचनाओंका संग्रह)

प्रकाशक—

उत्कल नागरी लिपि परिषद

गांधिनगर, कोरापुट—764020

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

Utkaliya Kavibibhuti

(A collection of poems by
the famous poets of Orissa.)

Published by :

Utkal Nagari Lipi Parishad

GANDHI NAGAR

Koraput—764020

First Print—1987

Printed at :

KALYAN PRESS

Kalyani Nagar

Cuttack—753013

Price : Rs. 30-00 (Rupees Thirty only)

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

सूचीपत्र

कबि	पृष्ठा
मुखबंध	
ओडिया लिखित बर्णमाळा	
भारत गीतिका	1
आदियुग (सप्तमरु पंचदश शताब्दी)	
काह्नु पाद	2
लुइ पाद	2
सरह पाद	3
भुसुक पाद	3
सारळा दास	4
मध्ययुग (षोडशरु ऊनबिंश शताब्दी)	
अर्ज्जुन दास	7
बळराम दास	10
जगन्नाथ दास	14
अच्युतानंद दास	18
देबदुर्लभ दास	26
लोकनाथ बिद्याधर	32
शिशु शंकर दास	33
भूपति पंडित	35
कार्त्तिक दास	36
नरसिंह सेण	3)
दीनकृष्ण दास	38
उपेंद्र भंज	40
बिश्वनाथ खुंटिआ	46
ब्रजनाथ बड़जेना	46
अभिमन्यु सामंतसिंहार	48
सालबेग	51
बनमाळी दास	52
भक्तचरण दास	52
गोपाळ कृष्ण	54
यदुमणि महापात्र	54
गौरचरण	55
भीम भोइ	56
बळदेब रथ	57
साधु दास	59
आधुनिक युग (ऊनबिंश शताब्दीरु स्वाधीनता पर्य्यंत)	
राधानाथ राय	60
फकीर मोहन सेनापति	62
मधुसूदन राओ	65
गंगाधर मेहेर	69
नंदकिशोर बळ	74
नारायण मोहन दे	75
कुंतळा कुमारी साबत	78
पद्मचरण पट्टनायक	79
मधुसूदन दास	80

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

कवि	पृष्ठा
गोपबंधु दास	80
नीळकंठ दास	82
गोदाबरीश मिश्र	83
लक्ष्मीकांत महापात्र	87
गोदावरीश महापात्र	88
बळभद्र देब	89
बैकुंठ नाथ पट्टनायक	90
अन्नदा शंकर राय	91
अपर्ण्णा देबी	92
बिश्वनाथ बाबा	93
गोलक चंद्र प्रधान	93
चिंतामणि महांति	95
बांछानिधि महांति	97
मायाधर मानसिंह	97
कालिंदी चरण पाणिग्राही	99
बीर किशोर दास	100
अनंत पट्टनायक	101
राधामोहन गडनायक	102
बैष्णब महापात्र	105

स्वाधीनता-उत्तर कविता

(१९४७-१९६०)

कवि	पृष्ठा
सच्चिदानंद राउतराय	106
रामकृष्ण नंद	110
कृष्णचंद्र त्रिपाठी	112
कुंजबिहारी दाश	113
गुरुप्रसाद महांति	116
बेणुधर राउत	117
चिंतामणि बेहेरा	118
बिद्युत्प्रभा देबी	119
बिनोदचंद्र नायक	121
गोपाळचंद्र मिश्र	122

अधुनातन कविता

कवि	पृष्ठा
रमाकांत रथ	123
ब्रजनाथ रथ	124
सीताकांत महापात्र	126
यदुनाथ दास महापात्र	126
रबींद्र सिंह	127
दीपक मिश्र	129
सौरींद्र बारिक	130
नृसिंह कुमार रथ	131
ब्रह्मोत्री महांति	132
सौभाग्य मिश्र	133
राजेंद्र किशोर पंडा	134
सरोज रंजन महांति	135
प्रतिभा शतपथी	137
कमळाकांत लेंका	137
फनी महांति	139
हृषीकेश मल्लिक	141

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

कबि	पृष्ठा
परिशिष्ट	
(पंचदश शताद्वी)	
मार्कण्डेय दास	142
(षोडश शताद्वी)	
यशोबंत दास	145
शंकर दाश	147
(सप्तदश शताद्वी)	
भीमा धीबर	149
प्रताप राय	152
रघुनाथ हरिचंदन	154
बृन्दाबती दासी	155
दाशरथि दाश	156
कृपासिंधु दास	157
दनेइ दास	159
(बिंश शताद्वी)	
नित्यानंद महापात्र	159
काळिचरण पट्टनायक	160
कुंजबिहारी त्रिपाठी	161
आचार्य. हरिहर दास,	
भागीरथि महापात्र ओ	
गोपबंधु चौधुरी	164
लोकगीत—	
चक्रधर महापात्र	166
ड० कुंजबिहारी दाश	168
(सप्तदश शताद्वी)	
धनंजय भंज	169
त्रिबिक्रम भंज	172
(अष्टादश शताद्वी)	
सदानंद कबिसूर्य्य. ब्रह्मा	174
केशब पट्टनायक	176
(बिंश शताद्वी)	
ज्ञानींद्र बर्मा	178

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

मुखबंध

भारतर बिभिन्न प्रादेशिक साहित्य बिभिन्न लिपिरे यथा— नागरी, बेङ्गली, पंजाबी, गुजुराटी, ओड़िआ, तेलुगु, कर्णाटकी, मालयालम, तामिल, फार्शी-आरबिक प्रभृति लिपिरे लिखित हुए। तेणु गोटिए प्रदेशर लोकमाने अन्य प्रदेशर साहित्य पढिबा संभव हुएनाहिँ। किंतु लिपिर बिभिन्नता सत्त्वे सबु भारतीय प्रादेशिक-भाषामानंक मध्यरे बहु साम्य रहिछि। एहि असुबिधाकु दृष्टिरे रखि पूज्य बिनोबाजी नागरी लिपिकु भारतर संयोजक लिपि भावरे ग्रहण करिबा उद्देश्यरे निखिळ भारत नागरी लिपि परिषद गठन करिछंति। नागरीलिपि उत्तर भारतर बहु भागरे ओ महाराष्ट्ररे प्रचळित। भारतर संस्कृत ग्रन्थ गुडिक एहि लिपिरे साधारणतः प्रकाशित हुए। दक्षिणभारत ओ उत्तरभारतर प्रमुख लिपि गुडिक (फार्शी-आरबिक लिपिकु छाडि) प्राचीन भारतर ब्राह्मी लिपिरु बिवर्त्तित। तेणु देबनागरी लिपि सहित अन्यान्य लिपिर सूक्ष्म साम्य मध्य लक्षणीय।

उत्कळ नागरी लिपि परिषद हेउछि भारतीय नागरी लिपि परिषदर एक प्रादेशिक अंगीकृत शाखा। नागरी लिपिर ब्रहुळ प्रचार उद्देश्यरे उत्कळ नागरी लिपि परिषद पक्षरु नागरी लिपिरे मासिक "ओडिआ बिश्वनागरी" पत्रिका प्रकाशित होइ आसुअछि।

प्रथमतः ओड़िआ पद्य साहित्यर एक क्षुद्र संकळनकु भारतर अन्य प्रदेशबासीमानंक समक्षरे नागरी लिपि माध्यमरे उपस्थापित करिबा पाइँ एहि परिषद अनेक दिनरु उद्यम करि आसुथिला। एहि परिप्रेक्षीरे परिषदर कार्यकारी सभ्यमानंकर अनुरोधक्रमे ओड़िशा सरकारंकठारु ट १२०००-०० (बार हजार टंका) अनुदान मिळिबारु

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

एहि कार्य. सुगम हेला। तेणु आमर मुख्यमंत्री श्रीयुक्त जानकीवल्लभ पट्टनायक महोदयंकु परिषद आंतरिक कृतज्ञता ज्ञापन करुअछि। ओडिआ पद्य साहित्य संकळन करिबार दायित्व कार्य.कारी सभ्य-मानंक द्वारा ओडिआ भाषातत्त्वज्ञ तथा अवसरप्राप्त (ओडिआ ओ संस्कृत) प्रफेसर डक्टर कुञ्जविहारी त्रिपाठीङ्क उपरे न्यस्त करायाइ-थिला। एहि संकळनर निरीक्षण ओ चूडांत प्रस्तुति पाइँ एक कार्य.कारी कमिटि डक्टर कुञ्जविहारी त्रिपाठी, श्रीमती अन्नपूर्णा महाराणा (चुनि अपा), प्रिनसपाल श्रीयुक्त शत्रुघ्न नाथ, प्रफेसर डक्टर कृष्णचंद्र आचार्य, डक्टर चद्रशेखर महापात्र ओ अध्यापिका प्रतिभामञ्जरी रथंकु नेइ गठित होइथिला। एहि प्रसंगरे कार्य.कारी कमिटिर दुइटि अधिबेशन यथाक्रमे कटक गोपबंधु भवनरे ओ उत्कळ बिश्वबिद्यालय संस्कृत बिभागरे अनुष्ठित होइथिला। द्वितीय अधिबेशनरे डक्टर त्रिपाठी तांकर ओडिआ पद्य साहित्य संकळन उपस्थापित करिथिले एवं ताहा कमिटिर सदस्यमानंक मतामत सह स्वीकृत होइथिला। संकळनटिर सूचीपत्र लिखित हेबा परे ताहा उत्कळ नागरी लिपि परिषदर सभापति पद्मभूषण डक्टर राधानाथ रथंक समक्षरे उपस्थापित करायाइथिला ओ से ताहाकु स्वीकृति प्रदान करिथिले। परिषदर अनुरोध क्रमे संकळनटिर मुद्रण पाइँ आवश्यकीय कागजर कियदंश मध्य से साहाय्य करिछंति। एथिपाइँ परिषद तांक निकटरे कृतज्ञ ॥ इति ॥

सर्वोदय समिति, गांधिनगर
कोरापुट—७६४०२०
ता १-१-८८

अक्षय कुमार महांति
संपादक
उत्कळ नागरी लिपि परिषद

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

संपादकीय

बहु बर्ष धरि ओड़िआ अध्यापक भाबरे लाभ करिथिबा अभिज्ञता मोते एहि संकळनटिर पांडुलिपि प्रस्तुत करिबारे साहाय्य करिछि । संकळनर प्रस्तुति समयरे केतेक क्षेत्ररे गोटिए गोटिए निर्दिष्ट काब्यरु उद्धृति ग्रहण करिबा पाइँ समग्र काब्यटिकु पुनर्बार अध्ययन करिबाकु होइछि । एहि प्रसंगरे बिगत १९७२ मसिहार नभेंबर मास २३ तारिखरे प्रकाशित मो द्वारा रचित A Brief History of Oriya Literature र मुखबंधरे मोर मंतब्य आंशिक सफळ हेला बोलि मुँ बिशेष आनंदित । (१) ये.उँ आधुनिक कबिमानंकर कबितांश सकळनटिरे संगृहीत, सेमानंक ठारे मुँ कृतज्ञता प्रकाश करुछि । संकळन कार्यरे मोते प्रफेसर डक्टर कृष्णचंद्र साहु, प्रफेसर डक्टर नित्यानंद शतपथी, प्रिन्सिपाल डक्टर धनेश्वर महापात्र, अध्यापक डक्टर कृष्णचद्र बेहेरा, अध्यापक बैष्णब चरण सामल, अध्यापिका गीताञ्जळि मिश्र, ओडिशा जगन्नाथ कंपानी आदि साहाय्य करिथिबारु मुँ सेमानंकु धन्यबाद प्रदान करुछि । केतेक असुबिधा दृष्टिरु संकळनटिरे केतेक साहित्यिक बंधुमानंकर कबिता देइ नपारि थिबारु मुँ सेमानंक ठारे क्षमा प्रार्थना करुछि । नागरी लिपिरे पुस्तकटिर मुद्रण पाइँ प्रारंभरे बहु असुबिधार समुखीन हेबाकु पडिछि । किंतु परिशेषरे संस्कृत ओ ओडिआ भाषारे बिशेषज्ञ प्रिन्सपाल डक्टर धनेश्वर महापात्र एहाकु निजर कल्याण प्रेस्‌रे स्वकीय तत्त्वाबधानरे मुद्रण कराइछंति । प्रकृतरे, तांकर प्रचेष्टा बिना ए पुस्तक मुद्रित होइपारि नथांता । तेणु मुँ तांकु आंतरिक कृतज्ञता जणाउछि ।

बिनीत

प्रफेसरपड़ा — कुञ्जबिहारी त्रिपाठी

कटक–३ — ता १-१-८८

---

1. It is intended that this sketch of Oriya literature will be followed by a second part consisting of selected texts from various authors to be printed in Nagari Script.

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

ओडिया लिखित वर्णमाला

स्वरवर्ण

ह्रस्व— अ इ उ ऋ

दीर्घ— आ ई ऊ ॠ ए ओ

सन्ध्यक्षर— ऐ औ

साधारणतः यह माना जाता है कि 'अ' का दीर्घस्वर 'आ' है। लेकिन वास्तव में 'अ' और 'आ' के बीच गुणगत पार्थक्य होने के कारण 'अ' का दीर्घ स्वर 'आ' नहीं माना जा सकता है। ८, ९, १० नम्बर के स्वर-चिह्न साधारणतः ओडिया में व्यवहृत नहीं होते। इनके सिवा दूसरे स्वर व्यंजन के बाद आने पर संक्षिप्त रूप ग्रहण करते हैं। यथा क् के बाद आने से क्रमशः क, का, कि, की, कु, कू, कृ, के, कै, को, कौ हो जाता है।

	अल्पप्राण	महाप्राण	सघोष अल्पप्राण	सघोष महाप्राण	अनुनासिक
कण्ठ्य	क	ख	ग	घ	ङ
तालव्य	च	छ	ज	झ	
मूर्धन्य	ट	ठ	ड	ढ	ण
दन्त्य	त	थ	द	ध	न
ओष्ठ्य	प	फ	ब	भ	म

अन्तस्थ वर्ग

य	य़ (उच्चारण में ज)	र (कंपित)	ल (पार्श्विक)	ळ (ताडित)

ब श ष स ह

अन्तस्थ वर्णों के अन्त में 'क्ष' एक अक्षर के रूप में गृहीत होता है। वास्तव में यह एक युक्त वर्ण है।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

उच्चारण-वैशिष्ट्य

स्वर वर्ण 'ऋ' (र+उ) 'रु' के रूप में उच्चारित होता है। इसलिए ओडिया भाषामें 'ॠ' नहीं है। प्राचीन ओडिया में 'ल' का 'लृ' के रूप में लिखते थे। इसलिए ओड़िया में (लृ) का भी अस्तित्व नहीं है।

'च' वर्ग के पहले चार व्यंजनों को स्पृष्ट घृष्ट (Affricate) रूप में लिया जा सकता है। क्योंकि उनके उच्चारण में अल्प घर्षण ध्वनि सुनाई पडती है। बहुत लोगों द्वारा ओडिया त वर्ग दन्त्य कहा जाने पर भी वास्तव में यह दन्तमूलीय है। 'ड' और 'ढ' पद के आदि में न आने से शिथिल रूप में उच्चारित होते है (जैसा हिन्दी भाषा में)। ग्रियर्सन ने इनको मूर्धन्येतर कहा है। साधारणतः 'य' पद के आदि में रहने के कारण 'ज' के समान उच्चारित होता है और लिखने में य चिह्न द्वारा प्रकट किया जाता है। जैसे— समय', लेकिन 'यात्री', उच्चारण में जात्री, वङ्गळा में भी ऐसा ही है। मागधी-प्रसूत भाषा-गोष्ठी के बीच 'ळ' ध्वनि ओडिया का वैशिष्ट्य है। यह कभी पद के प्रारम्भ में नहीं आता है। यह एक सातिशय ताडित ध्वनि है (Highly Flapped Sound)। व्यंजन ध्वनि के समान उच्चारण न करने से हिन्दी की 'व' ध्वनि 'ब' (B) के रूप में उच्चारित होती है। श, ष, और स ध्वनियों में से ओडिया में केवल 'स' ध्वनि उच्चारित होती है। अर्थात ओडियाभाषी लोग इन तीन उष्म वर्गों का उच्चारण केवल 'स' रूप में करते हैं। व्यापक अर्थ में दन्त्य कहा जाने पर भी 'स' वास्तव में ओडिया उच्चारण के अनुसार दंतमूलीय है। ओडिया के दुसरे कई युक्ताक्षरों का उच्चारण नीचे दिया गया है :—

क्ष = ख या ख्य यथा—साखी, (साक्षी) भिख्युक

म्ह = म्भ, ह्न = ंघ यथा—नरसिंघा। ज्ञ—ग्यं, ण्य—न्य

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

र्ण = र्न, र्य = र्ज्य, ष्ण = स्न या ष्टं यथा कृष्ण—कृस्न या कृष्टं
ह्न = न्ह, ह्य—ह्य, न्य—ज्य (न्याय्य न्याज्य)

ओडिया भाषा का यह वैशिष्ट्य है कि इसमें साधारणतः अकारान्त शब्द बिरामान्तक न होकर अकारान्त उच्चारित होते हैं। यथा—

ओडिया	हिन्दी और बंगभाषा आदि में
राम	राम्
बन	बन्
जन	जन्

लिंग

संस्कृत भाषा का व्याकरण गत लिंग (Grammatical Gender) ओडिया में नहीं चलता। यह माना जा सकता है कि कथित ओडिया केवल स्वाभाविक (Natural) पुंलिंग और स्त्रीलिंग है, क्योंकि पुंलिंग और नपुंसक लिंग को लेकर शब्दाकृति में पार्थक्य नहीं है। लेकिन साहित्यिक ओडिआ में कई अंशों तक संस्कृत का व्याकरणगत लिंग प्रयुक्त होता है। जो कुछ भी हो, हिन्दी भाषा में शब्दों के लिंग को लेकर जो अनियमितता है, वह ओडिया भाषा में बिलकुल नहीं है।

शब्दरूप

कारक और उसका चिह्न

संस्कृत व्याकरण के अनुसार ओडिया में निम्नलिखित कारक है—कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण। सम्बंध पद क्रियान्वयी न होने के कारण कारक पदबाच्य नहीं है। कर्ता के एक वचन में कोई भी बिभक्ति या चिह्न अपरिहार्य नहीं है। कर्ता के बहुवचन में एमाने, गुडाक आदि चिह्न लगाते है। पहले दोनों

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

साधारणतः मननशील प्राणी के प्रति प्रयुज्य है दूसरे कारकों मे जो चिह्न लगते हैं वे तीन प्रकार के हैं (१) अपभ्रंश से दाय-स्वरूप प्राप्त ए—उ।

(२) अनुप्रयोग (Post Position)

(३) अनुप्रयोगस्थानीय शब्द। निम्न उदाहरण हैं—

कारक	कारक-बिभक्ति	अनुप्रयोग	अनुप्रयोगस्थानीय
कर्म	—	कु, के *	*
करण	ए	रे	देखि, द्वारा आदि
संप्रदाय	—	कु, के *	पाइँ, लागि, काजे *
अपादान	उ	रु, तु *	ठुं, ठारु, ठातु * अपेक्षा, हालिकि, चाहि
संबन्धपद	—	र, न *	—
अधिकरण	ए	रे, ने *	ठि, ठारे, थि, ठाने *

तारकांकित चिह्न पश्चिमी ओडिया में प्रचलित हैं। ये विभक्तियाँ अनुप्रयोगस्थानीय शब्द के एकवचन में संज्ञा के अव्यवहित के बाद लगती हैं। बहुवचन में अनुप्रयोग और अनुप्रयोगस्थानोय शब्द–ङ्क-(ङ्क र) या मानंक के साथ न लगाये जाकर संज्ञा के साथ लगाये जाते हैं।

सर्वनाम

नीचे लिखे सर्वनाम ओडिया में व्यवहृत होते हैं—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम वैयक्तिक	मुँ, मुंअि *	आमे, (आम्भे) आमेमाने, आम्माने *
द्वितीय वैयक्तिक- (असम्मानात्मक)	तु, तुअि,	तुमे, (तुम्भे) तुमेमाने, तुम्मामे*
तृतीय वैयक्तिक—		
दूरनिर्देशक	से; हे	सेमाने, हेमाने*
सह-संपर्कवाचक		

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

निकट-निर्देशक—एं, अि* एमाने, अि-माने*
संपर्क-वाचक—ये. येउँ, येन्* ये.माने, ये.अँमाने, ये.नमाने*
प्रश्न-वाचक—के, केउँ, केन्* केउँ माने, केन्-माने*
सम्मान-वाचक—आपण, अपन्* आपण-माने, आपन-माने*
आत्म-वाचक—आपणा. आपे, अप्ना*

तारकाचिह्नित रूप पश्चिमी ओडिआ में व्यवहृत होते हैं। सर्व (सबु), अन्य (आन), आदि सर्वनाम भी ओडिया में प्रचलित हैं।

प्रथम वैयक्तिक और द्वितीय वैयक्तिक सर्वनाम के कर्म और संप्रदान के एकवचन में क्रमशः 'मोते''तोते'(मुझे, तुझे) व्यवहृत होते हैं।

एकवचन में, विभक्ति, अनुप्रयोग, और अनुप्रयोगस्थानीय शब्द षष्ठी एकवचन के रूप सहित (यथा—मोर, मोर्*, तो, तोर, तोर्* ता, तार, तार्*) युक्त होते हैं।

बहुवचन में, षष्ठी बहुवचन के रूप क साथ यथा—आंभमानंकर, आममानंकर, आम्मानंकर* तुम्भमानंकर, सेमानंकर आदि युक्त होते हैं।

क्रिया

ओडिआ में क्रिया रूप काफी सरल और प्रणालीबद्ध है।

अनुज्ञा (लोट) को मिलाकर क्रिया के १५ काल और अवस्थाएँ हैं। अछि, अटे, थाए, याअे, गला, आदि कई अपूर्ण या खंडित क्रियाओं को छोडकर दूसरे सब धातु (या क्रिया) के १५कालों और अवस्थाओं के (In the tenses and moods) निम्नांकित रूप हो सकते हैं—

१-वर्तमान शुद्ध	२-वर्तमान असंपन्न	३-वर्तमान संपन्न
४-अतीत शुद्ध	५-अतीत असंपन्न	६-अतीत संपन्न
७-भविष्यत् शुद्ध	८-भविष्यत असंपन्न	९-भविष्यत संपन्न

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

१०-संभाव्य शुद्ध (अभिप्रायात्मक)   ११-संभाव्य असंपन्न   १२-संभाव्य संपन्न

१३-आभ्यासिक असंपन्न १४-आभ्यासिक संपन्न

१५-अनुज्ञा (अवस्था)

धातुरूप

कर	था	अछ
सामान्य शुद्ध	असंपन्न	संपन्न
प्रथम पु० एकवचन करइ, करे	करुअछि	करि-अछि
ब०व०, करु	—अछु	करिअछु
म० पु० ए० वचन करु	करुअछु	करिअछु
ब० व०—कर	करुअछ	करिअछ
अन्य पु० ए० व० करइ, करे	करुअछि	करिअछि
ब० व०—करंति,	करुअछंति	करिअछंति
अतीतकाल—		
प्रथम पु० ए० व० करिलि, कलि	करुथिलि	करिथिलि
ब० व०—करिलु, कलु	करुथिलु	करिथिलु
मध्यम पु० ए० व० करिलु, कलु	करुथिलु	करिथिलु
ब० व०—करिल, कल	करुथिल	करिथिल
अन्य पु० ए० व० करिला, कला	करुथिला	करिथिला
ब० व०—कारले, कले	करुथिले	करिथिले
भविष्यतकाल—		
प्र० पु० ए० व० करिबि	करुथिबि	करिथिबि
ब० व०—करिबु	करुथिबु	करिथिबु
म० पु० ए० व० करिबु	करुथिबु	करिथिबु
ब० व०—करिब	करुथिब	करिथिब
अ० पु० ए० व० करिब	करुथिब	करिथिब
ब० व०—करिबे	करुथिबे	करिथिबे
सम्भाव्य—		
प्र० पु० ए० व० करन्ति	करुथान्ति	करिथान्ति
ब० व०—करन्तु	करुथान्तु	करिथान्तु

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

म° पु° ए° व° करन्तु	करुथान्तु	करिथान्तु
ब° व°—करन्त	करुथान्त	करिथान्त
अ° पु° ए°व° करन्ता	करुथान्ता	करिथान्ता
ब° व°—करन्ते	करुथान्ते	करिथान्ते

आभ्यासिक—

प्र° पु° ए° व°	करुथाइ	करिथाइ
ब° व°	करुथाउ	करिथाउ
म° पु° ए°व°	करुथाउ	करिथाउ
व° व°	करुथाअ	करिथाअ
अ° पु° ए° व°	करुथाइ	करिथाइ
ब° व°	करुथान्ति	करिथान्ति

(कर और था धातु)

अनुज्ञा

प्र° पु° ए° व°—

ब° व°—

म° पु° ए° व°—कर, था

ब° व°—कर, थाअ

अ° पु° ए° व°—करु, थाअ्

व° व°—करन्तु, थाआन्तु

णिजंत क्रिया या प्रेरणार्थक क्रिया

साधारणतः अणिजंत धातु में प्रेरणार्थक प्रत्यय आ (प्राकृत—आव, संस्कृत—आप) लगाकर अणिजंत क्रिया की तरह रूप चलाने से णिजंत क्रिया बनती है।

अणिजंत	णिजंत तृतीय पु° एकवचन, प्रथम पु° एक व° में तिङन्त 'इ' स्थान में ए होता है।
करइ	कराए
करिला	कराइला
करिब	कराइब
जाणइ	जणाए
खाअइ	खुआए

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

असमापिका क्रिया

धातु में 'इ' प्रत्यय (पद्य में 'इ' या इण) के मिलाने से असमापिका क्रिया बनती है। जैसे—कर+इ=करि, (कर+इग=करिण) 'कहि, छाडि' आदि।

तुमुनंत क्रिया

धातु में 'इबाकु' मिलाने से तुमुनंत क्रिया बनती है। यथा—कर+इबाकु=करिबाकु, खा+इबाकु=खाइबाकु। 'इबालागि' और 'इबापाइँ' भी उसी अर्थ में लिये जा सकते हैं।

मिश्रक्रिया

हिन्दी की भाँति ओडिआ में भी विभिन्न प्रकार की मिश्र क्रियाएँ व्यबहृत होती हैं। यथा—संभाव्य देइपारइ, समाप्तिसूचक थोइदिअ, अचानक भावसूचक (Indicating Suddenness) कहि पकाइले, बसि पड़िले।

क्रियात्मक विशेषण—(Participles)

ओडिया में क्रियात्मक विशेषण को प्रधानतः तीन भागों में बिभक्त क्रिया जा सकता है। यथा—बर्तमान क्रियात्मक बिशेषण, अतीत क्रियात्मक बिशेषण, भबिष्यत् क्रियात्मक विशेषण।

पहले का उदाहरण – थाउँ, थाऊण, थाआन्ता।

दूसरे का—करा, करिला (कला) करिथिला।

तीसरे का—करिबा. करिथिबा, (अतीत अर्थ में)।

संप्रतिबंध (Conditional) e. g. सूर्य उइँले पद्म फुटे If the sun rises etc. क्रियात्मक बिशेषण—उन्होंने कहा कि मैं करुँगा। यह अव्यय स्वरूप है।

क्रियांत निपात

ओड़िया में क्रिया के अन्त में 'णि' का प्रयोग कई विशिष्ट अर्थों में होता है। जेसे 'कलाणि' (He has finished doing).

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

भारत गीतिका

(पूरबी राग—काबालीतालाभ्यां गीयते)

सर्वेषां नो जननी भारत-धरणी कल्पलतेयम्

जननीवत्सलतनयगणैस्तत् सम्यक् शर्म विधेयम् ।। ध्रुवम्

हिमगिरि-सीमन्तित-मस्तकमिदमम्बुधिपरिगतपार्श्वम्

अस्मज्जन्मदमन्मदमनिशं श्रौतपुरातनमार्षम् ॥ १ ॥

विजनितहर्षं भारतवर्षं विश्वोत्कर्षनिदानम्

भारतशर्मणि कृतमस्माभिर्नवमिदमैक्यविधानम् ॥ २ ॥

उत्कलगौड़ान्ध्रीयाः संसदि ये वयमत्र समेता

एते चापरजनपदजा ननु भारतविहितनिकेताः ॥ ३ ॥

भारतहितसम्पादनमेव हि कार्यमिष्टमविपाकम्

भारतवर्जं किमपि न कार्यं निश्चितमित्यस्माकम् ॥

भारतपङ्कजदलमिदमुत्कलमण्डलमिति विदितं यत्

तस्य कृते वयमत्र समेता विहितात्रोत्कलसंसत् ॥ ५ ॥

भारतमेका गतिरस्माकं नापरास्ति भुवि नाम

सर्वादौ परिषत्कर्मणि तत् भारतमेव नमामः ॥ ६ ॥

(कविवर राधानाथ)

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

काह्नुपाद

आगम-वेअ-पुराणे पण्डिआ माण वहन्ति
पक्क सिरिफळ अळिअ जिम वाहेरिअ भमन्ति ।

(ओडिआ)

आगम-वेद-पुराणे पण्डिते मान वहन्ति
पक्क श्रीफळे आळमाने यथा बाहारे भ्रमन्ति ॥

(दोहाकोष)

●

लुइपाद

(राग—पटमञ्जरी)

काआ तरुबर पञ्च वि डाळ
चञ्चळ चिए पइठा काळ ॥
दिढ करिअ महासुह परिमाण
लुइ भणइ गुरु पुछिअ जाण ॥ ध्रुवपद ॥
सअळ समाहिअ काहि करिअइ
सुख दुखे ते निचित मरिअइ ॥
एड़िअ उ छान्दक बान्ध करणकपटेर आस
सुनुपाख भिडि लेहु रे पास ॥
भणइ लुइ आह्मे भ्राणे दिठा
धमण चमण बेणि पिण्डि वइठा ॥

(दोहाकोष)

●

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

सरहपाद

घरेँ अच्छइ बाहिरे पुच्छइ
पइ देक्खइ पडिवेसी पुच्छइ ।

(ओड़िआ)

घरे अछइ, बाहारे पुछइ
आपे देखइ, प्रतिवेशी पुछइ ॥

(दोहाकोष)

भुसुकपाद

(राग—पटमञ्जरी)

काहे रे घेणि मेलि अच्छइ कीस
वेढिल हाक पडइ चौदिस ॥

आपणा मांसे हरिणा बैरी
खणह न छाडइ भुसुक अहेरी ॥ ध्रुवपद ।

तिण न छुपइ हरिणा पिवइ न पाणी
हरिणा हरिणीर निळअ न जाणी ॥ ३

हरिणी बोलइ सुण हरिणा तो
ए बन छाड़ी होहु बिभान्तो ।

तरसन्ते हरिणीर खुर न दीसइ
भुसुक भणइ मूढ हिअहि न पइसइ ॥ ४

(दोहाकोष)

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

सारलादास

मङ्गळाचरण

जयतु दधिमङ्गळ बिघ्नराज । याहार प्रसने सिद्ध होअइ सर्बकार्य ।
जयतु बिघ्ननाशन मङ्गळ गजानन । मङ्गळ योगेश्वर पार्बतीनन्दन ॥ २

श्री बि ननाथ चरणे मोर सेबा ।
श्रीमहाभारत कहिबि प्रसन मोते होइबा ॥ २६

तव पादपद्मे मोर बिनये भगति ।
प्रसुधरनाथ सदये गणपति ॥ २७

आदि अन्त मध्य तु अटु सर्बथाने ।
ग्रन्थ भिआइलु तु भूत भबिष्य बर्त्तमाने ॥ २८

श्रीमाता श्रीचरणे मुहिँ निज दास ।
बइयन्ति शूद्रमुनि ग्रन्थिकार सारोळा दास ॥ २९

जम्बोदीप भ्रथखण्ड ओड़राष्ट्र मण्डळे ।
उत्पळेश्वर लिङ्ग चित्रउत्पळा दक्षिण कूळे ॥ ३०

जइन्ता निज भुबन यायनप्र कटक बारागसि ।
कुशस्थळी द्वारकाक्षेत्र पुण्यबासी ॥ ३१

श्रीजम्बेश्वरलिङ्ग मउदधि उत्तर तटे ।
नीळ सुन्दर पर्बत नीळ कल्पबटे ॥ ३२

बिजये रामकृष्णे सुभद्रा नामे ब्रह्मा ।
चारिलक्ष बतिशि सहस्र बरषकु बउदलये माहातमा ॥ ३३

कळिकाळ धंसनकु भोग कोटि पूजा ।
प्रळम्बिते खटइ श्रीकपिळेश्वर माहाराजा ॥ ३४

सुनीळ सुन्दर गिरि उत्तर कछाडे ।
सारभूमि तीर्थखण्डि ईशान्य पूर्बदिग आडे ॥ ३५

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

चन्द्रभागे नामे एकइ नदी गोटि ।
वृद्धमाता सङ्गे से मउदधि जाइ फुटि ॥ ३७

तहिँर अनुज सारोळा बोलि ग्रामे ।
विजय माहेश्वरी सारोळा चण्डी नामे ॥ ३८

माहा योगेश्वरी से परम बइष्णबी ।
प्रतक्षे बर दिअइ से परम साधेबी ॥ ३९

बाञ्छा सार्थुक से देबीर अटइ ।
पापाण होइकरि बाञ्छा ताहार फुटइ ॥ ४०

सर्व मङ्गळा रूप मातङ्गि मतभोळि ।
ग्रन्थरस शुणइ से प्रसन्ने कुतोहळी ॥ ४१

सारोळा चण्डी नाम अटइ से देवी ।
ताहार पुत्र मुँ सारोळा दास कबि ॥ ४२

प्रसन्ने आग्यां मुकुइ देलेक शाकम्बेरी ।
लभ तु कपिळास माहाभारत ग्रन्थ करि ॥ ४३

शुणि बुधजने न धर आन चित्त ।
जन्मेण मुरुख मुहिँ नोहइ पण्डित ॥ ४४

(सारळा महाभारत आदिपर्ब)

(डक्टर धनेश्वर महापात्रङ्क पी. एच्. डि. निबन्धरु)

भानुमती स्वयम्बर

अक्षत पाइण आसन्ति राजागणमाने ।
प्रबेश होइले याइ बिजयानम्र स्थाने ॥

पादाअर्घ्य पादासन घेनिण भूमन्युराजा ।
समग्र नृपतिमानंकु करइ पादपूजा ॥

कळिङ्ग उड्रङ्ग बङ्ग ये. तेलङ्ग ।
खाञ्जण देश ये. तिहुड़ि देश भाग ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

चिरदेश बोरदेश महातिरण देश ।
भोट देश मन्दार देश काँचि ये. देश ॥

मङ्गळा देश डाहाळ देश देश बेलाउळ ।
क्षीरण देश खेचर देश देश ये. भूपाळ ॥

माळव देश गुर्जर देश देश मरहट ।
मगध देश मत्स्य देश देश ये. गुजराट ॥

काशी देश कउशिक देश देश ये. कुबुज ।
उज्जयिनी देश पारिजात कनाउज ॥

क्षेत्र देश बिक्षेत्र देश देश ये. गान्धार ।
नीळ देश अनीळ देश देश ये. नेपाळ ॥

शाखा मण्डळ भाखा मण्डळ बजूगिरि मण्डळ ।
शोणित मण्डळ ये. कणय-मण्डळ ॥

मेरु मण्डळ जना आसन्ति ।
सकळ मलय मण्डळ मन्दारमण्डळ आवर पद्म ये. मण्डळ ॥

कमल मण्डळ याजनम मण्डळ अमर मण्डळ कुञ्जगळ मण्डळ ॥

करुणा मण्डळ इन्द्रप्रस्थ ये. मण्डळ ।
एमन्ते कति भूमण्डळ जम्बुद्वीप पृथिवी ॥
बारराष्ट्र करिण एहा भिआइले ययाति ॥ (इत्यादि)

(सारळा महाभारत आदिपर्व)
(ए. बि. महान्तिङ्क संकळित)

लाखबिन्धा सभारे द्रौपदीङ्क बर्णना

सभारे थाइ बोइला काळदमन ।
कन्यार शरीर त अळङ्काररहीन ॥

दुर्योधन बोइला होइल कि बाई ।
शरीरकु भारा बोलि अळङ्कार न बोहि ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

चाहान्ते सबुरि शरीर यिब फाटि ।
संसार निमन्ते तळकु कला दृष्टि ॥

किञ्चित करि ये.बे चाहिंब सभाकु ।
अनेक हत्या दोष लागिब ताहाकु ॥

स्तिरी सुलक्षणि अटइ सुज्ञानी ।
पापकु भय करि न चाहिंला मानिनी ॥

एहा नासारु बाहार ये.बण पवन ।
लिम्ब साहाड़ारे लागिले हेब चन्दन ॥

ताम्बूळ बिहीने अधर रङ्ग अत्यन्त ।
बाळ आदित्य ज्योतिकि जिणइ सतत ॥

बिम्बफल पटान्तर नुह बृद्ध काळे ।
तहुँ लज्जाभरे झडि पडइ भूतळे ॥

जाइ पाखुडा जिणइ तार नखरेख ।
पटान्तर योगु बढुअछि तार शिख ॥

ये.सनेक जळरे गमइ हंस पन्ति ।
चाळन्ते सुन्दरीर तेसन पादगति ॥

इत्यादि

--*--

अर्जुन दास

जगन्नाथ वन्दना

नाम जगन्नाथ श्रीमुख कळा । विकच श्वेतपद्म बेनि डोळा ।
दास वत्सळ शून्य टूळ काये । आपणे ओड़िशारे राजा होये ।।
से जगन्नाथ पद्मपाद बास । मधुप शिशु अरजुनि दास ॥

(कल्पलता काव्य— द्वितीय छान्द)

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

राजकुमारी कल्पलतार रूप वर्णना

जगतमोहिनी शिरोमणि सर्बसुलक्षणी बामा ।
सकळगुणे गुणनिधि आन देइ नाहिँ उपमा ॥
कुमारपूर्णमी शशधर प्रसन्न बदन कान्ति ।
कुरङ्गी नयन कटाक्षकु सुषमा येक भ्रान्ति ।
सुगन्ध मधुर लुबुधेण भ्रू लता मधुपपन्ति ।
कपोळे मदनफळ कि से कस्तूरी तिळेक कान्ति ॥
सुनासा कुटिळ कबरी कळा मनसिजर द्रोण माळा ।
सुरङ्ग अधर बन्धूलीफुल कौमुदी दन्तरुचिरा ॥
बहइ बने मृत्यु सञ्जिबनी मधुर पिकर ा ाणी ।
कनक-कळस कमनीय निन्दइ मधुपश्रेणी ॥
कळपलता शाखा भुज बेनि मध्य केशरी ठाणी ।
नितम्ब मदन सिंघासन त्रिभुबन सार तरुणी ॥
जघन मत्तवारण चरण स्थळ कमळ ।
कनक कद्ळी जानुबेनि बाहे बाजेणी सरळ ॥
(कल्पलता काव्य— तृतीय छान्द)

नबोढा कन्याङ्कु उपदेश

अन्तपुरे पशिण जनक महीपति ।
चारि कुमारीङ्कु कोळे घेनि तिआरन्ति ॥
झरझर नयनरु बहे नीरधार ।
आकुळ समस्त सीमन्तिनी अन्तपुर ॥
जानकीर मुख चाहिँ बोलन्ति बचन ।
तुम्भे मो चारि कुमारी जीबर जीबन ॥
मिथिळा छाडिण आज अयोध्याकु यिब ।
पति पाद सेबि पिता माता न लोडिब ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

शुणि मइथिळी गद्‌गद गुरुशोक ।
देखिण रोदन्ति अन्तपुरे जेते लोक ॥
के कर पणन्ते आर करे लुअ पोछि ।
बोलन्ते जेमन्त परि त्रिहि गढिअछि ॥
सान सान सखीमाने बेढि रोदुछन्ति ।
कुरङ्गी नयनी लुअ अञ्चळे पोछन्ति ॥
कोळ करि चारि कुमारीङ्कि चारि माये ।
कथा कहि लोडिले अधर कम्प होये ॥
क्रोध संहरिण अति दुःखे तिआरन्ति ।
स्तिरी संसारकु एका परपुअ प्रीति ॥
शाशु शशुरङ्क मन रञ्जि तुम्भे थिब ।
कान्त बइराग हेले मने न धरिब ॥
स्वभावे हे स्वामी त बोलिण सेवा करि ।
निरन्तरे ताहार कोपकु सिना डरि ॥
ता तहुँ देवता आन जुवतीङ्कि नाहिँ ।
सबु पाशोरिब एका पति सेवा पाइँ ॥
पति सेवा कले पतिव्रता बोलि जाणि ।
पति सेवा कले इह पर लोक जिणि हे ॥
पति द्रोह कले जुबतीङ्कि पार नाहिँ ।
पति पद छाडि आन गति अछि काहिँ ॥
पतिकि सन्तोष कले सर्ब देबे तोष ।
सकळ भुबने ताकु शुभे साधु घोष ॥
एतेक तिआरि कुमारीङ्कु सज करि ।
पश्चिम दुआरे दोळि हान्दोळा उतारि ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

एक सुखासने बर कनिआन्त बसि ।
जय जय बोलि देबे फुलन्त बरषि ॥

दशरथ छामुरे जनक आसि होये ।
कर योडि बिनय बचनमान कहे ॥

(रामबिभा काव्य—द्वादश छान्द)

—*—

बलराम दास

सोमनाथ महापात्र कोळे होइलि सम्भूत ।
यहुँ पिता मोर बिष्णुरे भकत ॥

तेणु से जगन्नाथ दया मोते कले ।
रामायण ग्रन्थ मो मुखे बखाणिले ॥

(जगमोहन रामायण—लङ्काकाण्ड)

हरधनुभङ्ग

एथु अनन्तरे शुणिमा रसबाणी ।
निशबद होइण देखन्ति सर्बप्राणी ॥

कोदण्ड धरिण अछन्ति दाशरथि ।
गुण देबाकइ करन्ति राम मति ॥

श्रीरामंकु चाहिँ लक्ष्मण योडे कर ।
बोले मर्डाळ तुआँइ ये. धनु न धर ॥

राजामाने मिळिग अछन्ति समस्त ।
नमस्कार कला प्राय दिशिब रघुनाथ ॥

शुणिण रघुनाथ हसन्ति मने मन ।
भला बिचारि तु रे कहिलु लक्ष्मण ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

पृथीर भितरु हादे शुभिला बचन ।
मोते तु रक्षा करसि रघुनान ॥
धनु हुळ ये.बे तु देबु मोर तहिँ ।
निश्चय प्राण मुहिँ हारिबि गोसाइँ ॥
मेरु हुँ शते गुण कोदण्ड अटइ गरु ।
मुहिँ ताहा कहिबाकु नुहइ बळिआरु ॥
शुणिण श्रीराम पृथिबीकि दया कले ।
निज बाम पाद आगकु बढाइले ॥
बुढा आंगुळिर नखर उपरे ।
तहिँ धनु हुळ बसाइले रघुबीरे ॥
शरासन मउळि बाम करे धरि ।
गुण देबाकइ राम आणन्ति उछुडि ॥
मड़ मड शबद शुभइ कोदण्ड ।
थरहर कम्पइ मेदिनी नबखण्ड ॥
गुणर फाशि राम ये. दक्षिण करे धरि ।
धनुर उपर हुळेण नेइ भरि ॥
यहुँ से शरासन निहुडाइ देले गुण ।
शिर नुआँइले सकळ राजागण ॥
चार बरषर पुअ एडेक कर्म कला ।
छत्रिङ्कर मुखे कालि लगाइला ॥
गुण देइ यहुँ धनु धइले सज करि ।
सभाजनङ्क मन आनन्द सबुङ्करि ॥
धनु धरि राम ये. गुण टङ्कारन्ति ।
देखि जनकर फिटिला मन भ्रान्ति ॥
मने बिचारइ केसे बासुदेब ।
नोहिले ये. धनुकु आन आमञ्चिब ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

रुद्रहिँ से बिहित अटइ सामरथ ।
स्वयं नारायण होइछन्ति जात ॥

अवहेळे धनु ये. कलाक आयत्त ।
निश्चयेँ सीता येहाकु होइला परापत ॥

एथुँ श्रीराम सायक करे धरि ।
दक्षिण भुजे गुण आणिले उछुडि ॥

धनु बोइला तु शुण रघुनाथ ।
हेळे नाश न कर ये. मोर पुरुषार्थ ॥

अकळबळ नाम बळ मोर पाइँ ।
छत्रिगणङ्कर मुँ ये. आकर्षि न याइ ॥

नाना देशर नृपतिगणे गले भाजि ।
ईश्वर मो गुण हादे पारइ माजि ॥

तु ये.बे धइलु धन्य तोर बळ ।
यश पउरुष रहिला रबितळ ॥

मुहिँ प्रसन्न ये. होइलि यहुँ तोते ।
तेणु करि राम ये. आमञ्चिलु मोते ॥

येबे थिर करि ये. उछुड रघुबीर ।
करुणा सागर बाना अटइ तोहर ॥

धनुर काकुस्थ बचन राम शुणि ।
हृद कमळ मध्ये हसन्ति रघुमणि ॥

बोलन्ति तरस्त किपा होउ चाप ।
कथा न बुझिण पाउ गरु ताप ॥

तोते आकर्षण ये.बे न करिबि मुहिँ ।
लज्जा पाइबि ना राजाङ्कर तहिँ ॥

तु धनु ामिक ये. अटु ग्यानवन्त ।
कार्य्यकाळे किम्पा न बुझु कथान्त ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

तोते घेनि हर दक्षर यज्ञ नाशि।
देबंकु कोपिला से कपिळास बासी ॥
से काळर प्रायक मणिलु कि आज।
ए देह देइण तु कर परकार्य्य ॥
ये सनेक योग अछइ तोते पूर्बे।
याहा से लेखन करिछि दइबे ॥
ये तेक समय ये ताहार आयुष थिला।
काहार बोले से होइब आन कला ॥
ये सनेक पूर्बे ये अछइ निर्माण।
सीता बिभाकाळे हारिब तोर प्राण ॥
एसनेक बचने तबर शरासन।
गुण देइ राम उछुडन्ति घन घन ॥
दक्षिण कर्ण याए आकर्षिण आणु।
लाठि प्रायेक होइला शिबधनु ॥
श्रीराम विक्रम मूर्त्ति देखि सीता।
मन प्रकृति एक करि जनक दुहिता ॥
नयनरे सञ्च पेषिला एहान्त।
विचारइ ए मोहर अटइ निज कान्त ॥
अति हिँ आमञ्चन्ते निर्बळ शरासन।
मड़ मड़ शबद शुभइ घन घन ॥
मध्यरु भाजिला ये बेनि खण्ड होइ।
देखि राजामाने ये गलेक पळाइ ॥

(जगमोहन रामायण)

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

जगन्नाथ दास

श्रीकृष्ण जन्म

कहन्ति शुक मुनि हसि । हरि चरित परशंसि ॥
परीक्ष मुखकु चाहिँले । आनन्दे लोचन बुजिले ॥
समाधि बसि योग ध्यायि । कृष्ण प्रसन्न लेश पाइ ॥
पुणि क्षणके चक्षु फेड़ । हसि कहन्ति राजा चाहिँ ॥
शुण हे गोबिन्दर जन्म । येणे खण्डिब भवभ्रम ॥
सूर्यर तहुँ षडऋतु । प्रकाश जन सुख हेतु ॥
ऋतुङ्क मध्ये श्रेष्ठ बळ । संपूर्ण बरषार काळ ॥
भाद्रब मासे कृष्ण पक्षे । सकळ ग्रहे छन्ति उच्चे ॥
अष्टमी निशा अर्द्धभागे । रोहिणी नक्षत्र संयोगे ॥
वृष राशिरे निशाकर । नक्षत्र ग्रह बळीयार ॥
गंभीर घोर बज्रघोष । बर्ग उत्तम नव अंश ॥
एहि समये सुरराये । आकाशे उत्सब कराए ॥
दुन्दुभि बाद्यनाद भर । रंगे नाचन्ति अपसर ॥
देवे करन्ति पुष्प बृष्टि । खण्डिबे गोबिन्द अरिष्टि ॥
इन्द्र पवनकु हकारि । बोलन्ति याअ मधुपुरी ॥
तोहर गन्ध गुण घेनि । आनन्दे बहिबु मेदिनी ॥
कंसर बन्दीघरे याइ । बहिबु मळय पुराइ ॥
इन्द्रर आज्ञा पाइ आगे । समीर चळिगला बेगे ॥
पवन गला मधुपुरे । बहे सुगन्ध रसभरे ॥
निर्मळ दिशिला गगन । मही मण्डळ विद्यमान ॥
ग्राम पाटणा पुर देश । मङ्गळ गीत नाद घोष ॥
नदीए उच्छुळिले जळे । पक्षीङ्क नाद बृक्षडाळे ॥
स्तबक पुष्प बने फुटि । गन्ध प्रसरइ प्रकटि ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

विप्रे मंगळ वेद नादे । अनळे क्षेपन्ति समिधे ॥
आनन्द हेउअछि मही । कृष्ण जन्मिबे देह बहि ॥
बथाए देवकी उदर । स्वामिङ्कि कहन्ति उत्तर ॥
भो नाथ चिन्त नारायण । के सहु गर्भर कषण ॥
शुणि बसुदेव उठिला । देवकी कङ्काळ धइला ॥
आवोरि गोबिन्द सुमरि । भये चिन्तइ नरहरि ॥
आकाशे उदे निशाकर । गोबिन्द उदरु बाहार ॥
नीळ जीमूत देह कान्ति । बळय मणि झटकन्ति ॥
पीत वसन कटि शोहे । रूप कोटिए काम मोहे ॥
कटि मेखळा सुना सूता । उत्तरी सुबर्ण पइता ॥
किरीट कुण्डळ कङ्कण । पादे नुपूर रुणझुण ॥
दिशइ शंख चक्र तेज । मर्कत स्तम्भ चारिभुज ॥
गदा कमळ शंख चक्र । अधर ओष्ठ रंग रेख ॥
श्रीवत्स चिह्न हृदे शोहे । रत्न पादुका वेनि पाए ॥
अपूर्व रूप योगेश्वर । देव मानवे अगोचर ॥
देवकी प्रसविग सुत । श्रमे होइला मोहगत ॥
पछे ये. बसुदेव थिला । कष्ण रूपकु अनाइला ॥
स्थिरे चाहिँला बसुदेव । देखिला अनादि माधव ॥
क्षणे रहिला स्थिर होइ । कृष्णंकु देखि विचारइ ॥
पुणि हारिला सेहु ज्ञान । चकिते बिचारइ मन ॥
मनरे गङ्गा स्नान कला । अयुते धेनु उत्सर्गिला ॥
ए सुत कंस न माइले । देवइँ अळङ्कार तुले ॥
ए पुत्र न मले मोहर । सेत्रिवि विप्रङ्क पयर ॥
चाहिँला गोबिन्द वदन । पुणि पाइला दिव्यज्ञान ॥
भये कम्पइ ता शरीर । ए त अनादि चक्रधर ॥
मु छार मनुष्य जोवन । केमन्ते होइले प्रसन्न ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

कि बुद्धि करिबइँ मुहिँ । कंसकु डर मोर देही ॥
बोलइ बसुदेब शोके । ए किपा जात मच्चलोके ॥
तेजे बिराजे बन्दिघर । तिळे हेँ न दिशे अन्धार ॥
कर अञ्जळि देइ शिर । निर्भर बोलइ उत्तर ॥

श्री बसुदेब उबाच :—

तोहर आदि अन्त नाहिँ । प्रकृति तोते न जाणइ ॥
केबळ सूक्ष्म रूप शून्य । मुनिङ्क चित्ते ज्ञानगम्य ॥
तोहर मायारे जगत । महत आदि पञ्चभूत ॥
तहिँरे नोहु तु प्रबेश । प्रबेश प्राय तो प्रकाश ॥
बाहार भितरे अनन्त । सृष्टि करु तु आतजात ॥
बुद्धि लक्षण गुण घेनि । तोते चिन्तन्ति दिब्यज्ञानी ॥
काहुँ देखिबे देहबन्त । तु देब अनादि अच्युत ॥
जगत तोर तहुँ जात । पाळिण पुणि करु अन्त ॥
जगत उपुजिबा काळे । अरुण बर्ण हेउ बेळे ॥
पाळिबा काळे शुक्ळ बर्ग । संसारे बोलाउ तु धर्म ॥
संहार काळे कृष्णरूप । तोर बिहार मोह कल्प ॥
तु एबे मोर घरे नाथ । अंश होइलु देहबन्त ॥
जाणिलि येतेक असुर । नाशि करिबु मही स्थिर ॥
तोहर जन्म मोर घरे । शुणिण कंस कोप भरे ॥
छ पुत्र माइला मोहर । तु कि न जाणु चक्रधर ॥
पाहारीमाने जगिछन्ति । शुणिबे बोलि मने भीति ॥
कंसकु कहिबे तुरिते । से आसि मारिबटि तोते ॥
तोते हो तुहि रक्षा कर । मुँ छार मनुष्य मातर ॥
एमन्ते गडघालि शोइ । कम्पइ कृष्ण मुख चाहिँ ॥
शीतळ बहइ पबन । देबकी पाइला चेतन ॥
चक्षु फेडिण चाहिँ धीरे । येह्ने उदये दिनकरे ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

चाहिँला पुत्रर बदन । चकिते चाहिँ छन छन ॥
अपूर्व काहुँ ए अइला । जगते नाहिँ ना देखिला ॥
एत पुरुषङ्क उत्तम । कि अबा प्रभु भगवान ॥
पूर्ण आनन्द ज्ञानमय । देखि पाइला देवी भय ॥
बिकळे बेनि कर योडि । हा कृष्ण बोलि पादे पडि ॥
चञ्चळ मन करि स्थिर । देवकी बोलइ अस्थिर ॥
भो नाथ निस्तरिलि मुहिँ । तोहर आदि अन्त नाहिँ ॥
मन बचने हेँ न पाइ । प्रसन्न हुअ मोते तुहि ॥
ज्योति-स्वरूप निरञ्जन । निर्मळ पुण्य दिव्यज्ञानं ॥
देवे गोचर नोहे येहु । आत्म प्रदीप महाबाहु ॥
ब्रह्मार अन्ते मही नाशे । ब्रह्माण्ड लुचन्ति आकाशे ॥
मनर मूळे पञ्चभूते । तोहर देहे लीन होन्ते ॥
रवि शशाङ्क नाहिँ केहि । तु मात्र रहु शेष होइ ॥
निमिष आदि येउँ काळ । तोहर चेष्टा अन्तराळ ॥
ए मर्त्ते मृत्यु सर्परूपे । दंशिव बोलि महाकोपे ॥
देखइ प्राणिङ्कि निरत । करइ क्षणे क्षणे ग्रस्त ॥
शरण तोर पादे येहु । मृत्यु पाइब से बा काहुँ ॥
बाहुडि होए से निराश । से प्राणी रहे तोर पाश ॥
तु एवे रख हरि तोते । कंसकु न याइ परते ॥
मोर उदरु तोर जात । लोके करिवे काहुँ सत ॥
तो रूप न जाणइ केहि । कंसकु डरे मोर देहि ॥
शुणि बोलन्ति नारायण । भो मात शुण मो बचन ॥
पुत्र लाज से पाळि मोते । पशिब मोर देह अन्ते ॥
देवङ्क बचने मुँ जात । करिवि असुर निपात ॥
एते कहिते नाहिँ बळ । मोते घेनिण बेगे चळ ॥
नन्दर घरे मोते थोइ । दुहिता आण पालटाइ ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

एमन्त कहि नरहरि । नर बाळक रूप धरि ॥
गोविन्द आज्ञा घेनि शिरे । कोळे धइला चक्रधरे ॥
फिटिला पयरु शाङ्कोळि । पथ कढाइला बिजुळि ॥
कोळरे देखि नारायण । कबाट फिटिला तक्षण ॥
निद्रारे मोहित सकळ । बृष्टि करन्ति मेघमाळ ॥
× × × ×
मिळिला याइ गोपपुरे । तक्षणे नन्दर मन्दिरे ॥
× × × ×
यशोदा कोळे कृष्ण थोइ । कन्या आणिला पालटाइ ॥
× × । तक्षणे पडिला कबाट ॥
लागिला चरणे शाङ्कोळि । दुहिता पाडिला बोबालि ॥
हरिचरित सुधाबाणी । शुणि निर्मळ हुअ प्राणी ॥
श्रीकृष्ण जन्म रसभर । शुणि संसारु हुअ पार ॥
परीक्षे कहे शुक मुनि । पुराण रस एहु बाणी ॥
हरि चरित भागवत । कहइ दास जगन्नाथ ॥

(दशम स्कन्ध— चतुर्थ अध्याय)

—*—

अच्युतानन्द दास

राधांकु भूतप्रास

चळिला चन्द्राबळि ये. कृष्ण कर छाडि ।
खण्डे दूर याइँण से देलाक घोर रड़ि ॥
लम्ब चारु चिकुर ये. पडिअछि पिठि ।
नेतर पणन्त भूमिरे पडुअछि लोटि ॥
नयन बाङ्क करि चाहेँ मुख करइ बिकटाळ
बोलइ राधिका लो पूरिला तोर काळ ॥
भ्रमणीर बेळे मोर लो पडिलु आसि मुखे ।
सुरार सङ्गते मांस तोर भुञ्जिबि आज सुखे ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

हस्त हलाइ दन्त कराइ रटमट ।
सुन्दर बदन गोटि राधार दिशिला बिकट ॥
शम्भु निशम्भु बध काळे ये.मने चामण्डा धइले रूप ।
प्रतक्षे चन्द्राबळ दिशइ तेसन स्वरूप ॥
टह टह हसइ से कान्दइ क्षणे क्षण
क्षणके सिद्धान्त बचन ये. बोलइ बिडम्बण ॥
क्षणके उठइ क्षणके बलइ महीस्थळी ।
क्षणके बिपरीत रूप धरिण से धामइँ बिकराळि ॥
किळिकिळा राब देइण से उपरकु पडइ माड़ि ।
देक्षिण लोकमाने ये. पळाइले पाख छाड़ि ॥
शीघ्रेण धामइ से प्रखरे दिअइ गाळि ।
एमन्ते आपणार सदने याइँ मिळि ॥
गम्भीरि भितरे पशिला बेगे याइँ ।
शाशु शशुर दिअर नणन्द काहाकु न गणइँ ॥
भितरे पशि बेगे कवाट किळि देला ।
प्रचण्ड चण्डी रूप धरि किळिकिळा राब कला ॥
देखिण शङ्का तहिँ पाइले सर्वलोके ।
कुरुम उछुळिला राधिकार उच्च डाके ॥
ताहा शुणि धाइँण ये. पडिले नरनारी ।
राधार शोइला मन्दिर बेढिले सहस्रे पुर करि ॥
शाशु शशुर दिअर ये. बन्धुजनमान ।
राधार गति देखिण व्याकुळ सर्बजन ॥
एकक्कु आरक ये. पुछन्ति बारता ।
नम्रयाक बाजिला ये. राधांकु भूत लागिबार कथा ॥
कुञ्ची लगाइण ये. कवाट फेडाइले ।
भितरे पशिण ये. देखन्ति ये. याहारे ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

मन्त्र पढिण केहु मारन्ति पाणि ।
बाळरे मुद्रामान के बान्धन्ति पुणि पुणि ॥
केहु अबा महिषी पोडुअ याचुछन्ति ।
मन्दार माळ मदिरा के छामुरे बाढन्ति ॥
केहु मण्डळ स्थापिण ये. पढन्ति निज मन्त्र ।
पातन्ति महाजाल ये. ओषध मूळी यन्त्र ॥
मिळिले राउळपाने होइण एकमेळि ।
देखि तांकु अधिक अबतार हुअइ चन्द्राबळी ॥
ये बग देबी पूर्वे आदि अबतार काळे ।
असुरकुळ निसूदन कलाक अबहेळे ॥
एबे सेहि रूप ये. धरिण अछइ ।
ताहांकु बेजमाने कि करिपारिबे मन्त्र मूळि देइ ॥
बेजमानंकु देखिण सेहु पुण कोप करे ।
उठिपडि बेजमाने पळाउ अछन्ति डरे ॥
बोलइ आरे आरे बेजमाने होइल किरे बाइ ।
अण्डिराचण्डी मुहिँ रे अटइ चामण्डाइ ॥
कदम्ब तरु तळे ये. सर्बदा मोर बास ।
आठकोटि ब्रह्म दत्य थाआन्ति मोर पाश ॥
महाकाळ भइरोब रे एहाङ्कर आधिपति ।
ताहाङ्कर आज्ञारे ब्रह्मदत्ये समस्ते चळन्ति ॥
कुञ्जबन भितरे आम्भे क्रीडा करि बुलु थिलु ।
दिगान्त खेळ बेळे आम्भे राधांकु देखिलु ॥
समस्त ब्रह्म दत्यमाने आम्भे अछुँ ये. आबोरि ।
अण्डिराचण्डी आम्भर ये. समस्तङ्कर अधिकारी ॥
राधांकु लागिअछि आम्भमानङ्कर पाइँ ।
बळि भोजा करिण एहाकु बांटिण देबुँ खाइ ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

कालिहुँ बांटिलुणि एहाकु सहस्र भाग करि ।
तुम्भे वेजमाने एठारु न यिबटि रे उबुरि ॥

पेटरे पशि एहार माएँस खाइलुणि खोलि ।
अन्त मिळाइला ये. न बर्ते चन्द्रावळी ॥

एहाकु रखिब रे केबण वेज छार ।
एते बोलि राधिकार ये. होइला अवतार ॥

वेजमाने शुणि बोइले आम्भे समस्त विद्या अछु साधि ।
अण्डिराचण्डी भूतकु आम्भर नाहिँ महोषधि ॥

गद मन्त्र सकळ से छाडिण अलगा हेले ।
आम्भे येहाकु छडाइ न पारुँ बोलि बोइले ॥

एसनेक माया राधिकार केहि बुझि न पारिले ।
बड़ बड़ राउळमाने समस्ते भाजिगले ॥

कान्दइ चन्द्रसेणा ये. राधांकु कोळे घेनि ।
फाटिण अश्रुजळ ये. बहइ चक्षु वेनि ॥

शाशु शशुर ये. दिअर बन्धुजन ।
राधार अवस्था देखिण ये. बिकळ सबुङ्करि मन ॥

मन्त्र न काटिला से ओषधे नोहिला शान्ति ।
समस्ते बोइले राधा न बर्त्तइ ए घान्ति ॥

अनेक उपाय कलुँ मणिमन्त्र महोषधि ।
अण्डिराचण्डी किळिबाकु आम्भर नाहिँ बुद्धि ॥

चन्द्रसेणा बोइला आउ मणिमन्त्र महोषधि नाहिँ ।
ब्रह्मदत्यकु रोधिबा हे प्रबोध कथा कहि ॥

याहा मागिब ताहा येहिक्षणि देबा ।
जीवन थिबायाए चन्द्रावळी तांकु करिथिब सेबा ॥

एहार परा सुलक्षणी अखडे नोहु नाश ।
भो ब्रह्मदत्य देबता क्षमा कर दोष ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

एमन्त बिचारि समस्ते भूतकु स्तुति करि ।
अलेख पुरुष तुहि ये. माया देहधारी ॥
शून्यरु उपुजिलु रूपरेख बिवर्जित तिनि ।
निमिषके ध्वंसिपारु तु सचराचर मेदिनी ॥
अकळ बळ बळवन्त तु कल्पणा कामरूपी ।
दशविंश पञ्चाश योजन निमिषके पारु क्षेपि ॥
गण गन्धर्ब देबता तु समस्तङ्कु पीडा करि ।
कल्पान्तक पुरुष तु समस्त रूप धरि ॥
प्रचण्ड महाबळी तु मूरति बिकराळ ।
याहाकु भेटिब तार तक्षणे पूरे काळ ॥
श्मशान भूमिरे तोर सर्बदा अटे केळि ।
मदिरा पोडा मांस खाउ ए तोर निज बळि ॥
चण्डी चण्ड घंटा ये. चण्डिका डाकिणि ।
सङ्गतरे भ्रमन्ति तोर अनेक गोसामणि ॥
प्रचण्ड मूर्त्ति तोर तेज घोरमए ।
याबत जनमानब तोते करन्ति महाभए ॥
तोहोर स्थापिलार जिना ए नम्र गोपपुर ।
एथिर नरनारीमाने ये. शरणागत तो पयर ॥
तोहर कोप कले कि आनरे होये रखि ।
न जाणि दोष कला तोते राधिका चन्द्रमुखी ॥
समस्त दोषमान एहार कर क्षमा ।
तोहोर होइ ब्रति थाउ पुष्पइ निज जेमा ॥
ए मोहर सत्य सत्य त्रिबार सत्य बाणी ।
याहा तु मागिबु ताहा मुँ देबइ येहिक्षणि ॥
शुणि भून बोइला मुँ येहाकु घेनियान्ति ।
तोहर बचन शुणि होइलि बड शान्ति ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

मुहिँ ये.बे राधिका यिबि आज छाडि ।
भुरि भोजन गोटाए तु पारिबु कि बाढि ॥

चन्द्रसेणा बोइला मुँ सहस्रे भुरि भोजन देबि ।
जीबन थिबा याए तोते सेबा करिथिबि ॥

गोपाळङ्क आतङ्क देखि बोलइ ब्रह्मप्रेत ।
अनेक शगड भात तिउण शगड सात ॥

अनेक भार पिठा ये. सुपक्व रान्धणा ।
सर गोटिका छेना ये. लबगी त्रिगुणा ॥

कर्पूर कस्तूरी गन्ध चन्दन चतुर्सम ।
सुपक्व बिडिआ पान सहस्रे भार नेम ॥

खट ये. चान्दुआमान नाना बस्त्र मूळे ।
समस्त थोइब नेइ कदम्ब तरु तळे ॥

सहस्रे भार फुल चम्पा बकुळ सेबती ।
समस्त थोइब नेइ कदम्ब वृक्ष कति ॥

नोहिले समस्तङ्कु लागि करिबिटि उच्चाट ।
बेळ बुड़िला ठारु केहि न यिब यमुना घाट ॥

मते अबग्यां करिब ये.बा कुञ्ज बनकु यिब ।
ताहाकु लागिबि से केबेहेँ न बर्त्तिब ॥

आजठारु समस्त कथा थिबटि परिमाणि ।
समस्त पदार्थमान भिआअ येहिक्षणि ॥

नन्द उपनन्द ये. बसुनन्द सहिते ।
चन्द्रसेणा आदि करि उत्तम लोक ये.ते ॥

ये. याहार भार तुम्भे कन्धरे थिब घेनि ।
सेठारे बाढिब नेइ रात्र घडि तिनि ॥

रात्र घडि तिनि ठारुँ निशोधन कराइ ।
निज घरुँ बाहार केहि तुम्भेमाने हेब नाहिँ ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

समस्ते घरे पशिथिव कवाटमान किळि ।
दाण्डरे वाद्य बजाइ देव भूत बळि ॥
दिहुड़ि हुळा वती किछिहिँ न थिब ।
एसनक संयाते कुञ्जबनेकु चाळियिब ॥
कदम्ब तरु तळे शोइब समस्ते बाहुड़ि आसिब ।
पछकु लेउटि आउ केवेहेँ न चाहिँब ॥
(हरिवंश)

—*—

दारुब्रह्मरूपे जगन्नाथङ्क अवस्थिति

कृष्णंकु पाण्डबमाने समुद्रे मेलिले ।
भासि भासि देव बाङ्कि मुहाणे लागिले ॥
तार (जारा) पुत्र अटे बसु नामरे शबर ।
सुरेश्वर बन मध्ये अटे तार घर ॥
कंदमूले फळमूळ बनरु आणइ ।
पत्नी सहितरे ताहा भक्षण करइ ॥
तहुँ चारिक्रोश नीळ सुन्दर पर्वत ।
प्रतिदिन से बनकु आसइ किरात ॥
कळप बटर तळे पाइ ठणा गोटि ।
दैब बळरे ताहाकु दिशे देवगोटि ॥
दइब बळे ताहाकु निद्रा आकर्षइ ।
सेठारे शोइला दक्षिणकु शिर देइ ॥
स्वपनरे ताकु देखा देइ चक्रधर ।
बोइले आंभर वाक्य शुण हो शबर ॥
एहिक्षणि तुहि बांकी मुहाणकु यिबु ।
आंभ रूप समुद्रर कूळरे देखिबु ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

रूपगोटि आणि बट तळरे थोइन्तु ।
कंदमूळ भोग देइ आंभकु पुजिवु ।।
जळर भितरे येउँ प्रभु भासुथिले ।
ततक्षण आसिण से कूळरे लागिले ।।
घेनिण नीळसुंदर पर्बतकु गला ।
बटमूळे दिव्यस्थान गोटिए रचिला ।।
तिनि दना कंदमूळ छामुरे थोइला ।
एकांत भक्तिरे ताहा समर्पण कला ।।
कंदमूळ फळ देइ बिष्णु पूजा करे ।
भुंजंति श्रीजगन्नाथ आनंद मनरे ।।
शबर बिनय भाब जाणि नारायण ।
शून्यरे थाइण प्रभु कहंति बचन ॥
भोगरे इच्छा आंभर हेला एते काळ ।
एथिपाइँ चिंता तुहि नकर शबर ॥
से रात्रे इन्द्रद्युम्नंकु प्रभु आज्ञा देले ।
नीळगिरिरे देउळ तोळाअ तु भले ॥
आज्ञा पाइ नरपति बहुन उठिला ।
थाट सैन्य सज करि बेगे बाहुडिला ।।
अपोडा भूमि नृपति तहिँ ठाब करि ।
प्रासाद गोटिए तोळाइले दण्डधारी ।।
नृपतिकु स्वपनरे कहिले श्रीधर ।
मोते ए स्थानरु नेइ देउळरे भर ॥
से दारुकु रत्नसिंहासने से थोइले ।
आपणा इच्छारे प्रभु निर्मित होइले ॥
चतुर्द्धा मूरति तहिँ हेले भगवान ।
बळभद्र जगन्नाथ भद्रा सुदर्शन ।।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

कबाट फिटाइ राजा नयने देखिला ।
कोटिए जनमर पातक ध्वंसिला ॥
छतिश नियोग करि भोग से खंजाइ ।
तिनि धूप पांच अबकाशकु कराइ ॥
बंदइ श्रीजगन्नाथ कमळार साइँ ।
आरत जनंक दुःख फेड भावग्राही ॥
रत्नसिंहासन परे बिजे चक्रधर ।
शंख चक्र गदा पद्म धरिछि हस्तर ॥

× × × ×

रणपुर मध्य ग्रामे बास करिथाइ ।
पद्म नरेंद्र पोषंति अन्नबस्त्र देइ ॥
शूद्र मध्यरे गणना मुहिँ त अटइ ।
दीक्षागोटि पाइअछि गोपकूळे थाइ ॥
सबु गोपाळमानंकु नाम दीक्षा दिए ।
श्रीकृष्ण पादपद्मरे चित्त मोर थाए ॥
सप्तमखंड एठारे होइला संपूर्ण ।
दोष मोर न धरिब आहे सुज्ञजन ॥
(हरिवंश)

—*—

देबदुर्लभ दास

ऋतु बर्णना

राग—करुणा भाटिआरि

ज्येष्ठ + आषाढ

ए महा ग्रीषम ऋतु बैशाखर शेष ।
बहिला झंजा पवन कृशानु बताश ॥
पाचिले आंब पणस तातिले सलिळ ।
जळिला शरीर मो टळिला कळेबर ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

मुँ गो मलि मलि मलि ।
कांत मो ब्रिदेश गले केउँ दोष कलि ।
गंभीर घररे गो ग्रीषम नोहे शोइ ।
दक्षिण मेला मंदिरे प्रभु संगे रहि ॥
कर्पूर चंदन सुशीतळ जळे गोळि ।
स्वामी संगे बिबिध बिनोदे कोळाकोळि ॥
फुटि ताळ सजपणा पड़ड कदळी ।
कर्पूर मरिच खंड सिंगडा तांबुळि ॥
मणोहि करिण सेहु खुआइण खाइ ।
सुस्थ पाइ स्वामी भुज पंजरेण शोइ ॥

श्रावण + भाद्रव

ग्रिषम संपूर्णे सखि ! आषाढर अंते ।
श्राबण प्रबेश गो जळद ऋतु ह्वन्ते ॥
गाजिले गगने मेहु साजिले वरषा ।
न जाणि निबिड घोर अंधकार निशा ॥
घडघडि उपरे पडइ चड़चड़ि ।
चड़चड़ि उपरे निर्घात पडे माढि ॥
विजुळि झमके गो चमकि उठे हिया ।
केसने बंचिब मोर कोळे नाहिँ नाहा ॥
कमळिनी बिधंसिले अबनी उळसि ।
मातिले मंडुके ये. डाहुक डाके मिशि ॥
नदी योड़ बढिले जडिले सुनागरी ।
सुवेश यु.बती कांत पथ अनुसरि ॥
प्रवासी पुरुषमाने सर्बकार्य्य छाडि ।
घरकु अइले प्रिया गुण मने पढि ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

एकमात्र मोर कांत नइले मो पाश ।
निश्चय जाणिलि मोर तेजिले मुहाँस ॥

आश्विन + कार्त्तिक

भाद्रबर अंते सखि ! अशिण पशंते ।
प्रबेश शरद ऋतु प्रतेज आदित्ये ॥
गगनु झडिला हिम शशी फगी पशे ।
बरषा बंचाइ मेघ नाना बर्ण दिशे ॥
उत्तरु अइला शीत बिकांतकु मारि ।
कांत थिला कुमारींकि दूरु अपसरि ॥
फुटिले कैरब किआ चंद्रकांति बढे ।
शोणेहा रति आरते शोणेहींकि लोडे ॥

मार्गशीर + पौष

कार्त्तिक सरंते सखि ! मगुशीर आसे ।
काकर पडिला हिम कटु परकाशे ॥
दहिला कमळ बन बहिला उत्तरा ।
सुथिर होइला सिंधु सधीर उत्तरा ॥
मरुआ हसिला कुंद देखिण बिकाश ।
गाइले गाआंता गीत गुंडकेरी रस ॥
तुटिगले नदी सर्व फिटिगले बाट ।
दिन आसि पाहिगला कांत नाहि भेट ॥
सिंहडा केसर सखि गुआघृते पोइ ।
कर्पूर मरिच मेलि मिठादुधे मोहि ॥
सारिआ खंड मिशाइ बटा भरि थोइ ।
शयन पलंके कांत अधरे योगाइ ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

माघ + फाल्गुन

पुषर अंतरे सखि मकर प्रख्यात ।
प्रवेश शिशिर ऋतु पवित्र जगत ॥
मकर स्नाहान जने धर्म अर्थे करि ।
कुहुडि पडिला गो जाड़िला बसुंधरी ॥
फुटिला माधबो गो तुटिला कइँ फुल ।
उठिला कंचन कढि कामतीर तुल ॥
लेउटिला उत्तरा पवन निजस्थान ।
उठिला लहरी सिंधु अनंतरे फेन ॥
काक गर्भ देखि सखि होइलि चकित ।
एतेवेळे न भेटिलि गउरी बरत ॥
कुरुवेलि चउँरिले अति उग्रवंध ।
चूतर बकुळ देखि कोकिळ आनंद ॥

चैत्र + बैशाख

मकर सरंते सखि ! फगुणर अंते ।
अइला बसंत ऋतु अनंग संगते ॥
बहिलाक मळय पवन गंध तुले ।
पल्लविले तरुलता फुटिगले फुले ॥
चाचेरी गहळ सखि गोबिन्दंक दोळ ।
सर्वसुख घेनिगले मदन गोपाळ ॥
कहुँ कहुँ चूत वृक्ष धरि गले कसि ।
कोकिळ क्रीडइ चूत डाळे डाळे बसि ॥
चइत मासरे राधामाधव सुमरि ।
वृन्दावने पशिण लोडइ अनुसरि ॥
देखइ पल्लव लता तरु फळफुले ।
देव कहे सखी कर धरिधरि बुले ॥

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

संथ प्रशंसा

रहस्य मंजरी ए बिचित्रिमये रस ।
ए सुख जाणिम ये.हु बिबेक पुरुष ॥
अबिबेकी बोलिब ए केउँ शास्त्रे थिला ।
थिला ये.बे कबि किंपा आगहुँ न कला ॥
बिवेकी बोलिबे ए गुपते थिला रहि ।
सरस्वती भंडारे गुपते थिला थोइ ॥
यउँ पुत्र बंदिला ताहाकु कले दये ।
महिमा अनंत केते करिबा निर्णये ॥
शूरूपा प्राएक संथ उदर अटइ ।
से ये.हे सुद्रव्य रखि कुद्रव्य तेजइ ॥
चालुणि जळार प्राए असंथर गर्भ ।
सुलागि पकाइ से अलागि रखे सर्ब ॥
तार प्राए परगुण गळाइ पकाइ ।
अन्य दोष बुद्धि करि पसरा दिअइ ॥
संथ कहे पर गुण आपणार दोष ।
गुरु बइष्णब सेबा न सहइ लेश ॥
मनुष्य कोटिके मिळे उत्तम जणेक ।
कोटिए जनम याइ साधु मिळे एक ॥
कोटि साधु मध्येण वैष्णब एक जाण ।
कोटिये वैष्णवे से लभइ संथ पुण ॥
संथ कोटिकेण से महांत एक जाणि ।
महांत कोटिके एक महात्मा वखाणि ॥
ये.उँ महात्मा सेहु जगन्नाथ स्वामी ।
सबु आत्मा टुळमूळ आत्मा अंतर्यामी ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

एतेक प्रकारे संथ महात्मा महिमा ।
संथ होइ न भावइ अहंकार सीमा ॥

पर दुःखे दुःखी संथ पर सुखे सुखि ।
परम कारणे संथ नोहे मनदुःखी ॥

हानिलाभ बिचारि सर्बते गरु भारि ।
काहारि ठाबर संथ नोहे अवेभारी ॥

सर्बसुख मिळइ प्रापत संथ संग ।
सकळ कळह निंदा असाधु प्रसंग ॥

सबुंकरि संथ बुद्धि ये.वे से हुअंता ।
खडग कमाण बाण किंपाइ रहंता ॥

एकक़ु आरेक न चिह्नंति मत्तभोळे ।
तेणु मरामरि होइ मरंति सकळे ॥

न्याय न बुझंति ये. बुझंति अनमिते ।
मत्त गर्व पुरस्कारे मोह अनुव्रते ॥

देखिबा मात्रके भय लागइ याहाकु ।
केसनेक संथ बोलि बोलिबा ताहाकु ॥

कहिबाकु डरि तेणे न कहिले मरि ।
सृष्टि नाश गला प्रभु बुझिबा बिचारि ॥

एथु उद्धरिण प्रभु बेगे मोते निअ ।
परालब्धे थिले संथ पादतळे थुअ ॥

जय जय जगन्नाथ जगतर नाथ ।
दीनजन सोदर जगत आत्मा तत्व ॥

ए भवसागरु प्रभु पारिकर मोते ।
त्राहि त्राहि आरते फुकारि डाके तोते ॥

(रहस्यमंजरी)

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

लोकनाथ

हंसर राजांकु उपदेश

(राग—चिंता केदार)

पुत्र पराये पाळिबु प्रजा, गुरुजने रखिथिबु लज्जा ।
पराक्रम सबुठारे धर्म, देब-ब्राह्मणरे देब पूजा हे राजन !
नीचजने न करिबु प्रीति, पर धनरे न देबु मति ।
महत महत्त्व ख्यात न करिबु नीतिरे करिबु प्रीति हे ॥
मन्त्र करिबु मन्त्रीकु घेनि, हेबु सबुठारे अबधानी ।
मद-मृगया-रतिरे आसक्त नोहिबु नृपति मणि हे ॥
याहा करिबु थिब से मने, फळे जाणिबे सकळ जने ।
समये कहि जन मन रंजिबु ये.सने पिक-बचने हे ॥
न कहिबु खळे तत्त्वगीर, अहित हिं करिबु शत्रुर ।
असुस्थि होइले औषध से देइ, ज्वररे न देइ क्षीर हे ॥
शत्रु लोकर मधुर भाष, तहिँ न करिबु बिशुआस ।
ये.संत बिष देबा लोक अबश्य दिअइ आच्छादि रस हे ॥
प्रजा कुसुम लता प्रतीम. राजा हेब माळाकार सम ।
सेनेह सलिळ हित करि देइ नेब कर-रतन-कुसुम हे ॥
निरळस बिबेक कुळीन, बिद्याबंत, नीति बिचक्षण ।
अपक्षपाती, धार्मिक अकुमार सचिबर एते गुण हे ॥
दंड बिहिब दंड्य लोकरे, क्षमा करिब हिँ केउँठारे ।
न देब अधिकार द्विज-क्षत्रिय-ज्ञाति-संगी उपकारे हे ॥
ये.उँ जगन्नाथ-पद-ध्याने, देखि नाहांति योगिंद्रमाने ।
ये.उँ बाणपुर-नृप-परसादे देखिले सकळ जने हे ॥
नाम जगन्नाथ कांति मूर्त्ति, कीर्त्ति-चूर्णे धबळित क्षिति ।
भो हरिचंदन शांति गोपीजन बल्लभ रुबारे मति हे ॥

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

शिशुशङ्कर दास

उषा-रूप-बर्ण्णना

दिश-नळिनी गउडा

एथु अनन्तरे शुण रसिकसिहाण ।
बचने कहिब केहु उषा रूपगुण ॥
युबाजनमनचूत चंदनसमीर ।
पुरुषहृदय चंद्रमणि निशाकर ॥
शरदसंपूर्ण-अकळंक हरिणांक ।
लपनलाबण्य लक्ष्मी चहिँण आतंक ॥
स्मितभाब चाहिँण सेबिला यहुँ हर ।
आह्लादगुण तहुँ बहे निशाकर ॥
निर्मळ स्वभाब बहे मदन दर्पण ।
जळरुह बहे तार सुगंध लाबण्य ॥
सुसच्छ-नासिकापुटे लुले गजमोति ।
सुधाबिंदु घेनि कि पौर्ण्णमीनिशापति ॥

× × ×

कुटिळ कुन्तळ कि कोमळ भृङ्गराजि ।
कामरथ ध्वजे नीळ पताका बिराजि ।
युबाजनमनबंदी मंदिर कबरी ।
सेनेहे शशांकपाशे ये.सने शर्बरी ॥
मध्ये शोहे नबघन कुटिळ अळका ॥
मदनमुकुरे चारु मरकतरेखा ॥
अधोभागे अधर बिद्रुमरेखा आभा ।
तदुपरि खंजित मुकुता दन्तशोभा ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

श्रबगयु.गळ बेनि पाश अभिराम ।
त्रिभुवनजय पाश थोइछि कि काम ॥
पुनरपि हरतप भांगित अनंग ।
भ्रूलतागुण साजिला कपाळसारंग ॥
लोचन अमोह शर कज्जळ बिषाइ ।
ताटंक शाणरे कि ता घषुछि बसाइ ॥
कंबुकंठे थोइला सपत आद्यस्वर ।
कोकिळ शिखिले एथु सुस्वर गभीर ॥
शंभुदम्भ यि.ब गंडचिबुक देखिले ।
बहु सामगिर काम पूर्बु भय करे ॥
सुरुचिर गंडयु.ग मदनमुकुर ।
यु.बाजन मनबंदी चिह्न ताटंकर ॥
ललित कोमळ बाहुलता रतापाणि ।
शिरीषमाळारे कोकनदभुंपा जाणि ॥
तुच्छोदरी निम्ननाभि काममोहटोप ।
यु.बाजन बंधने त्रिबळो रज्जुरूप ॥
बिपरीत कनककदळी निंदि जानु ।
याहा आश्रेकरि बिम्ब जिणिला अतनु ॥
स्थळ-सरसिज-शोभा निंदित चरण ।
सुसच्छ अंगुळी नख दिब्य मणिगण ॥
रसाणिला जंबूनद झळि देहरूप ।
गंठि शिरा न दिशइ काममोहटोप ॥

(उषाभिळाष द्वितीय छांद)

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

भूपति पण्डित

श्रीहरे कृष्ण राम नाम । चारि निगमे अनुपम ॥
श्रीपूर्णब्रह्म नाममयी । नाम शबदरूपे थाइ ॥
से सत्य नित्य निरुपम । शबद ब्रह्म निज धाम ॥

× × × ×

एणु ये. भजे कृष्ण नाम । सर्वसम्मते ए उत्तम ॥
ये. सुर नर नाग भाषा । बिबिध बाक्य देश देशा ॥
कृष्ण महिमा यहिँ शुणि । से सर्बवाक्यर मूर्द्धनि ॥
ये.बे नथाइ कृष्ण रस । से संसकृते कार्य किस ॥
पाट बसने गुञ्जफळ । थिले नोहइ बहुमूल्य ॥
सुरभाखा हि रसमये । से नारिकेळ फळप्राये ॥
क्लेशे होअइ रसभोग । सबुंकु नोहे उपयोग ॥
भाषा सुपक्व रंभा प्राय । कोमळ मृदु रसमय ॥
अक्लेशे करि ताकु भोग । सबु जीबने उपयोग ॥
कि पराकृत संसकृत । से भावग्राही नंदसुत ॥
गाळि शुणइ गोपीमुखे । वेद न शुणे तेडे सुखे ॥
ए भाव मनरे बिचारि । भाषाकु अवज्ञा नकरि ॥
गोबिंद रस अनुपम । नृपति परीक्षित नाम ॥

× × × ×

गुहारि शुणंति ये. ठाए । पञ्चचरण आग नोहे ॥
तक्षणे बुझामणा करि । शत्रु मइत्र समसरि ॥
दंड वा मंड सेहिलागे । तेबे चरण तळे आगे ॥
ये.बे शुणंते रिपु बळ । सेहि भावरे अनुकूळ ॥

(प्रेम पञ्चामृत प्रथमाध्याय)

--*--

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

कार्त्तिक दास

प्रदोष वर्णना

प्रबेश होइला आसि प्रदोष काळ ।
शशिकळा दिशिला गगन मण्डळ ॥
दिगसीमन्तिनी-हास्य-दशन कि से ।
काम तरुबर-नब अंकुश कि से ॥
चकोर चंचुक पाटफेड़ाण-कुंचि ।
चक्रबाक-निकृन्तन-कुन्त उइँ छि ॥
मानवती-मान-गजराज-अंकुश ।
तारागण-पद्मबन बिनोद हंस ॥
संयोगिनी-रसरेखा रसिक-प्राण ।
बियोगिनी हृदयकु कतुरी-बाण ॥
कइरबकंठभूषा मुकुता हार ।
कमळिनी-आनंद-बिखण्ड-कुठार ॥
दिनमणि करताप शमकु गला
तरुलता-पल्लब सरमा पाइला ॥
(रुक्मिणी बिभा—षष्ठ छांद)

—*—

नरसिंह सेण

कन्याबिदाय

(राग-मंगळ)

सखीङ्कि समर्पि बाळी तहिँ अत्यन्त सुबेश होइ ।
सखीजने बेढि अछन्ति संगे माताङ्क तहिँ कि याइ । २६ ।
झिअकु देखि माये कान्दि कोळे बसाइलेक नेइ ।
बोलन्ति कुमारी बदन चाहिँ शोके गदगद होइ । २७ ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

तोहर चंद्र बदन आपद मोर मुण्ड़े थाउ ।
तो हरष मुखरे सुन्दरी मोहर जीबन याउ । २८ ।
मोहर तु कुळमण्डनी केमन्ते मूर्च्छिबि तते ।
केमन्ते निशिदिन सरिब किछि हिँ दिशुनाहिँ मते । २६ ।
बोलन्ति आइ शुण परिमळाबती शुण मोह बाणी ।
शाशु श्वशुर पतिङ्कि सेबा करिथिबु मन जाणि । ३० ।
राजार कुमारी बोलिण गरब न धरिबु मने ।
अनवरते परिजन मन रंजिथिबु परिचारी ये.सने । ३१ ।
येथिर प्राये तहिँ न करिबु खेड़रस ।
कुमर मन जाणि खटिथिबु अहर्निशि थिबु पाश । ३२ ।
सत्य तु याहा कराइण अछु बेग ता करिबु भंग ।
भ्रथारे बिनु आन केहि नाहिँ समस्ते अळिख रंग ॥ ३३ ।
येसन माये झिअकु तिआरि लुह पुराइ लोचन ॥
बीरभद्रेश्वर झिअकु देखि हुअंति बिकळ मन ।३४ ।
पुत्रहुँ अधिक तु मो नंदिनी बियोगे दूरे देलि ।
न करिबु येथि शोचना मुँ ये.बे मूढपण कलि । ६५ ।
निज पतिकि मन जाणि माये सेबा करिबु ।
जाणि अबज्ञा न करिबु निश्चये मन हरिबु । ३६ ।
परिमळावती येसन शुणि क्रोधभरे रोदन ।
पिता कोळरे बसिणअछि बाळी करिण हेँ बदन । ३७ ।
कुमारीर गुण सुमरि तहिँ कांदन्ति कुमारी जन ।
शुणि आज्ञा देले राजा केहि न कर रोदन । ३८ ।
अनकूळ बेळ होइला शुभयोगे बाळी यिब ।
येबे तुंभे थिर होइण थाअ पछे गुण सुमरिब । ३६ ।
तड़ति बाळी बेगे उठिला मातांकु प्रणाम कला ।
बाळी से निज मंदिरकु लेउटिण पुण चाहिँला । ४० ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

येथु अंतेक बाळी हांदोळारे बसिलाक याइ ।
सकळ सखीजन कांदन्ति तळे अळन्ति गोडाइ । ४१ ।

बिक्रम केशरी मंदिरकु आपणे कळाबती गले ।
परिमळाबती शाशु आगे झिअ नेइ समर्पिले । ४२ ।

परिमळा धाइमानंकु राइ बोइले पाट महादेइ ।
झिअकु मोर सेबिण थिब अनबरते मन रसाइ । ४३ ।

तुंभंकु संगे पठिआइ निश्चिंत होइण थिबि ।
परिमळाबती नेत्रे न देखिले केमंते दिन बंचिबि । ४४ ।

येमंते सत्य भग्न करइ परिमळाबती ।
मणाइण तुंभे सखीमाने गो करिब कथा संगति । ४५ ।

परिमळा सबुंकु प्रबोधि चळिला आपणा देश ।
बिषाद होइ कळाबती निज मंदिररे प्रबेश ॥ ४६ ।

गमन बिक्रम केशरी राये दिने दिने पथ वाहि ।
तिनि मासरे निजपुरे प्रबेश होइलेक से याइ । ४७ ।
येमंते शाशु शशुरंक घरे दिन वंचइ सुंदरी ।
प्रतिदिनरे से रथ चढिण गमइ अमर पुरी । ४८ ।

(परिमळा)

—*—

दीनकृष्ण दास

कअ अक्षरे होइछि नियम । कथा नोहे दिव्य अदिव्य सम ।
केते कउतुक अछंति एथि । केबळ क्षीरसिंधु प्राय मंथि ।
कर रस जात,
कर धीषणा मंदर पर्वत ॥ २४ ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

कोविद्-देवमाने लभ सुख । करंतु बाळिश-असुरे दुःख ॥
कृष्ण-सेवक गोपीभक्ति या़र । करंतु सेमाने कंठर हार ॥

कठोर-कुटिळ
कपटी लोकंकु ए अमंगळ ॥ २५ ॥

कुटिळ बर्णाबळिरे अद्‌भूत । कबिहृद अबलंबकु जात ॥
कोबिद्-मन-घनाघन बिनु । केवेहेँ न दिशइ इंद्रधनु ॥

कर सुबिचार,
कबित्व शांति जळ एकाकार ॥ २६ ॥

कबिता बनिता कबि ता पिता । कहिबा लोक तार उपमाता ॥
कले ताकु भोग रसिक नेता । केतेहेँ अबा रहइ योग्यता ॥

कुमति-गुआँर
केबळ बइमात्र भाइ तार ॥ २७ ॥

कबित्व मळय पवन बत । करे रसिक-तरु पल्लबित ॥
ककर्श-मूर्ख शुष्क तरुमात्र । केतेबेळे हेँ न धरइ पत्र ॥

कामिनी बिभाब
करइ निकि नपुंसक द्रब ? ॥ २८ ॥

कबित्व-रस उत्तम गोक्षीर । करि तहिँ संग स्नेह शाकर ॥
कर्ण्ण तुंडरे ये़ करइ पान । किछि हिँ स्वादु जाणइ से जन ॥

कुत्सित या़ बुद्धि,
कर ता बचन आँबिळ दधि ॥ २९ ॥

कबित्व-कोपे नाना द्रब्य थाइ । किछि या़'र ज्ञान चक्षु नथाइ ॥
करंति या़इ तहिँ अधिकार । किंचित लाज नथाइ तांकर ॥

कार्य़ पडिगले
केबळ बेभार सरइ भले ॥ ३० ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

कर धरि कहुअछि हे जने । क्रोध अभिमान न धर मने ॥
करुणा-हृदय निरते । कष्ण कथारे एका मन दिअ ॥
कर दीने दान,
कहुँ कहुँ यिवटि ए जीवन ॥ ३१ ॥

केबळ साधु-संगे संग हुअ । कुटिळ लोक पाखकु न याअ ॥
कोमळ करि कथामान कह । कृष्ण भकत-जन-मन मोह ॥
कष्ण कर ध्यान,
कृष्ण चरितमान कर पान ॥ ३२ ॥

(रसकल्लोळ—३४ छान्द)

—●—

उपेन्द्र भंज

विपणीरे शुणि 'राम राजा' बाणी बाहुडे मंथरा त्वरा ।
बारि भरिअछि नयनयुगळे गळे प्राण थिला परा ॥
बृक्ष काटिला प्राये । बिरतित ता अग्रते हुए ॥१०॥

बोले टेकि 'ए कि भरत-जननी' कहुअछि तहुँ जब ।
बड सुभागी बोलाउ रे शोभांगि ! भांगिगला तो गरब ॥
बरे हुए कि तोर । बिष प्राये घारे मो शरीर ॥११॥

बिवेकी धार्मिक शोभा-प्रशंसारे संसारे जणे न गण ।
बाहुळि ताहार बजूरु अधिक कि बर्णिबा तार बाण ॥
बिदित से नंदन । बोलिबु ता बयसरे सान ॥१२॥

बळिष्ठ दानबे पूर्बदेब कहि अनुज देबता इंद्र ।
बोलाइ सपत्नी ये याहार प्रीति कहि होइनाहिँ सांद्र ॥
बश करि नृपति बुद्धि थिले बोधि क्षितिपति ॥१३॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

बिह्वळित मति कितबे अहल्या दूषण लभिला परि ।
बदन माड़ि शयन सदनरे नयनरे पूरि बारि ॥
बिजे नृप एकाळे । बंधु बंधु बोलिण डाकिले ॥ १४

बिषबैद्य पद न मानिला प्राये स्वभावे भोगिनी सेहि ।
बह्नि सेनेहरे पतंग प्रकारे पाशे परबेश लहिँ ॥
बोधे चिबुक धरि । बिना दोषे प्रणयिनी गोरी ॥ १५

बिप्रे इन्धन देबी मंत्रे पूजिले से यथा न कहे कथा ।
बरद होइला प्राये सपनरे बसि न टेकिला मथा ॥
बारे मोते तु चाहाँ । बंधु ! देबि मुँ मागिबु याहा ॥ १६

बोलु नरपति, बोइला युबती तिनिबार सत्य कले ।
बृकासुर ताहा कर निज शिरे यथा देला हरि बोले ॥
बिधि कले नृपति । बिश्वमोहिनी नारीक प्रीति ॥ १७

बाहिलि रथ स्तिरी होइ शंबर समरे नाहिँ कि मन ।
बिहिल सत्य सूत होइ तोषिलु तो सुत हेब राजन ॥
बाळ बालुका खेळ । बिधिरे त आन तुम्भ बोल ॥ १८

बसुधापति पद उचित नोहे से जामाता तार ।
बने हरु दिन चउद बरष पुत्र राजा हेउ मोर ।
बामा बचन शुणि । बिज्ञान से ज्ञाने कहे बाणी ॥ १९

बिरोचन नारी छद्मे होइ हरि ता जीब ये मंते हरि ।
बध सध करि मोर सेहि रूपे तुहि थिलु अवतरि ॥
बोलि एते मउन । बिभोजने हरिले से दिन ॥ २०

बेळाकु न लंघे सत्ये पारावार यथा ताकु न लंघिला ।
बिष भक्षणे बिरुपाक्ष पराये मूके सम्मत दिशिला ॥
बड संतोष राणी । बिज्ञ श्रीराम डकाइ आणि ॥ २१

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

बदिला प्रथमे पितार सत्यकु रखिव कि नाहिँ साधु ।
बंशे याहार भगीरथ संभब उद्धरिले पितृ दग्धु ॥
बोले राम बहन । बिनय कि कर अबधान ॥ २२

बन तुम्भे यिब, भरत होइब कोशळपति कुशळे ।
वेशकु इंगुदी रुद्राक्ष बिभूति थोइ देला आणि तळे ॥
बालिशा ये. मंथरी । बेगे श्रीराम सम्मति करि ॥ २३

बैदेही लक्षण प्रबेश तक्षण संगे यिब्राकु आतुरे ।
बशिष्ठादि पात्रे प्रबेश होइण दशरथंकु पचारे ॥
बिभाबरी प्रांतरे । बिभु हुअंते परा राज्यरे ॥ २४

बिभाकर कुळे नासत्य होइलि सत्य करिबारे मुहिँ ।
बिवेक मोर कैकेयी पूर्बजन्मे पिशाची थिला कि होइ ॥
बाक्य एते मुखरे । बैश्वानर हिँ जळे तहिँरे ॥ २५

बिदुपे धीरे राजा गिरे कहिले ए कथा प्रमाण हेब ।
बाहुळ व्रत फळर धर्मदत्त देब दरशने थिब ॥
बइकुंठ प्रतिम । वसतिरे देवी हेला क्षम ॥ २६

बधिरा प्राये यहिँ लय आवेश, तहिँ से काहिँ न रसे ।
वहन गहन-गामी हेउ राम शिशु पाठ परा घोषे ॥
बळिभुक ये.सन । बनप्रिय मध्ये करे स्वन ॥ २७

बंश नळीरे रखि लेखि बसन देला सीता पाइँ आणि ।
बहिले से पात्र लक्ष्मण इक्ष्वाकु कुळर से चूडामणि ।
बाहारिले से तिनि । बधू बोधंति राम जननी ॥ २८

विपिनरे पोन-उरजा अपूर्ब द्रव्य देखि न मागिबु ।
वेनि सहोदर मध्यरे आदर बिरथरे करिथिबु ॥
बाष्पे तिन्तिला उर । बाणी न स्फुरे कंठु तांकर ॥ २९

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

बोइले सौमित्रे पुत्रे सेबिथिबु श्रीराम मानस जाणि ।
बिनिद्रे सर्व शर्बरीकि हरिबु होइ धनुशर पाणि ॥
बधू याउछि संगे । बड मायाबी राक्षस पुंगे ॥ ३०

बिमाने बसाइ नेबारे सुमन्त्र यिबारे देखिले जने ।
विस्मय होइले पछे गोडाइले निंदा बिहिले राजने ॥
वृद्ध समये किपा । बामाठारे एडे अनुकंपा ॥ ३१

बैशाख होइला मंथरा अयोध्या भांडे थिला क्षीर पूरि ।
वल्लबी कैकेयी मंथनरु नबनीत बिशेष बाहारि ॥
बनबासींकि देइ । वहु लोचन अशन पाइ ॥ ३२

चाकी मंदपण तक चक्र थोइ हृद पिंजरे आसक्ते ।
व्यक्त लोकरे श्रवणे पानकरि छि छि त करिवे तिक्ते ॥
बोलाबोलि एमंत । बिरकते समस्ते शोकित ॥ ३३

वृक्षराज परि साकेत-नगरी करि अलक्ष्मी आश्रित ।
बार रबिर कैकेयी आयतरु अस्परश हेला मत ॥
बळ दळ चळन । वश मंथरा करिणी मन ॥ ३४

बळि तामसी नदीकि बने पशि से दिन तहुँ रहिले ।
वार्त्ता पाइ श्रृंगबेरपति मिळे पुछुँ सुमंत कहिले ॥
बोले शबर ईश । बांटि न देले किपाइ देश ॥ ३५

बांटिले से छळे ए वन नगरे भवन नगरे सेहि ।
व्यक्ति व्यक्त होइ सानुज-युगळ अनुसरणकु बिहि ।
बंचिले से शर्वरी । वेढि सैन्य राजधानी परि ॥ ३६

बतिश अवतारे एक कपिळ पुणि से छवि लम्पट ।
वटक्षीरे जट करि परकट पिंधिले वकळ पट ॥
वाहे इंगुदी-माळ । वहे कर्णे रुद्राक्ष कुंडळ ॥ ३७

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

बोळि हेले भस्म नर नारायण प्राय बेनि भाइ दिशे ।
बदरिका बन भावकु ए बन सेवन कला रभसे ।।
बिकळित रंजन । बिकळित देखि हेबे जन ॥ ३८

बाहुड नम्रकु बोलुँ ये. घेनिल बेढि गति अति त्वरा ।
बसंत गुंडिचा एकाम्र बने कि यात्री अनुगत परा ।।
बिधुचूड़ गउरी । बिभाति कि राम-सीता धरि ॥ ३९

बिलेपन भूति एणु शुभ्रकांति चंद्रार्द्ध छवि मुकुट ।
बरबर्णिनी नाना रत्न भूषण पारुशरे झट झट ॥
बाहक ये. सुमंत । ब्रह्मचारी लक्ष्मण बिनत ।। ४०

बिश्रामंते किछि दूरे कहे नरे बनरे रचिवा पुर ।
बप्रा देइछंति दंडकरे पूर्वे न थिला कि दंडधर ॥
बोल तांकर मान । वर्त्तुं आंभे होइ प्रजा जन ।। ४१

वक्तव्य राघव एथि अनुरूप प्रजा चतुरंग छंति ।
वत्सक सह सुरभि पयोधर ब्रज ब्रज झटकंति ।।
बृत सुनारी चय । विहरंति केते तंतुवाय ।। ४२

ब्युतपन रथ गंधर्व उटजे करिवार विहारकु ।
बिधिरे शाखि फळकधारी शोभा आंभ प्रतिपाळनकु ।।
बोलि मउन हेले । वंचाइ से पथ रातुँ गले ।। ४३

बाहि सुमंत्र विमान राम आज्ञावशे अयोध्या-गमन ।
बाहुडिले जने से चक्रचिह्नकु गोडाइ हरष मन ।।
बन मृगतृष्णारे । बारिबुद्धि यथा मृग करे ।। ४४

वेगी उदवेगी होइ परवेश भरद्वाज आश्रमरे ।
बीक्षण करि सीता राम लक्ष्मण तक्षण सबु पचारे ॥
बोधि कहिले भाष । वीरसिंह अरण्ये बिळस ।। ४५

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

बिदर तीक्ष्ण नाराच करजरे मदांधकारी असुर ।
विमोहित हेब चित्रकूट-गिरि क्रोटे करिबारु पुर ।।
बहे पयस्वी नदी । बिशेषित होइ तहिँ स्वादी ।। ४६

बंचि से दिनक कनकगउरी गउर मर्कतगात्र ।
बर्त्मरे गमन बन्यनारी चाहिँ चकित स्थकित नेत्र ।।
बरकागजचकी । बिलोकंति ये मंत कुतुकी ।। ४७

बोलाबोलि हेले परमसुंदर वर ए पथिक दुइ ।
वल्लभी पुणि रमणी शिरोमणि काहार थिबटि होइ ।।
बोलि निकटे गले । बइदेहींकि से पचारिले ।। ४८

वरारोहा ए पुरुष सार दुहेँ सोदर किवा तुंभर ?
बुलंति जगते घेनि संगतरे सुसमे न मिळे वर ।।
बोलु शिर कंपाइ । वर देवर के याअ कहि ।। ४९

बिळंब करंते प्रलंब कुंतळा डाके लक्ष्मण कुमार ।
वामांकु वोधिले ए देवर बोलि मंथरगति सत्वर ।।
वृद्धि करंते नोहि । वरटा कि गर्भाळसी होइ ।। ५०

वनरुहदळे चळिला पराये परते ए नोहे छद्म ।
विन्यास चरण क्ळास्थळे यहिँ उत्कुटि याउछि पद्म ।।
वसुळंति रोलंव । वालिचिह्नकु दिअंति चुंब ।। ५१

व्यकत होइला याए चाहुँ थिले पक्कणवासी गमिले ।
बिहि भेळा बाळा सहोदर मेळा गंगापार होइगले ।।
बिजे चित्रकूटर । वानपदे कहे वीरवर ।। ५२

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

बिश्वनाथ खुंटिआ

मायामृग बध

(राग—मुखारी पडिताळ)

हेम-हरिणी । धीरे धामंते सुंदर धरणी ।
धरु धरु करुँ मृग पळाउछि गोडाइछंति रघुमणि ॥
केतेबेळे मृग दृष्टिकि न दिशे, केतेबेळे दृष्टिगोचर ।
केतेबेळे दूरे केतेबेळे पाशे रामकु हेला अगोचर ॥
रामंकु बहुत दूर घेनि याइ गला अद्रश्य होइ काहिँ ।
फुटिण राम तरुतळे बसंते पुणि छामुरे हेला याइ ॥
मारिबि बोलि मनरे बिचारिण कोदंडरे कांड संधिले ।
बज्रघात प्राय शबद शुभिला ये तेबेळे शर बिंधिले ॥
लक्ष्मण त्राहि सीता त्राहि बोलिण रामस्वरे उच्चे डाकिला ।
मृग देह छाड़ि निज तनु धरि प्राणहारि तळे पडिला ॥

(बिचित्र रामायण)

—●—

ब्रजनाथ बडजेना

ढेंकानाळ राजा त्रिलोचनंक सैन्यंकु उद्बोधन

(राग— आषाढ शुक्ल)

हथिआर बांधिथिबा लोकर । मरिबाकु ये वे होइब डर ॥
हथिआर छाडि खेत कमाउ । तेबे ताहाकु कहिबा कि आउ ॥
निर्लज्ज जीइबा । क्षत्रिक शोभा रणे प्राण देबा ॥

भीम-अर्जुन-द्रोण-कर्णबीर । काहिँ अछंतिटि घेनि शरीर ॥
यश मात्रक याइअछि रहि । ना-मरदकु के तुंडे बसाइ ॥
एहा न घेनिल । गड छाड छाड समस्ते बोल ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

काहार पृथ्वी के संगते नेब । यश अपयश दुइ रहिब ॥
केते राजा गले पृथ्वी न याइ । दुइ कथारे ये. नाम रहइ ॥
दाता शूरपण । ए बिने आउ नाम नोहे जाण ॥
देख होइअछि केडे मउज । लटि रखिछाइँ एडे फउज ॥
कमर बाँधिछाइँ दिनराति । एथुँ कि बड बासब संपत्ति ॥
छाति उठे फुलि । केमंते बोल गड छाड बोलि ॥
फउज भितरे घोडा पकाइ । मारे बरछि ये. निर्भय होइ ॥
सती पराए पशि झासियिब । फेरि अइले त सकळ लाभ ॥
नोहिले से भले । बासब संगते बसइ भले ॥
हात उठाइ ये. मरिब बीर । ताहाकु मात्र सेहि पटांतर ॥
रणे या अंग होए चेना चेना । ताहार जीबन सुफळ सिना ॥
ये. निसत होए । पुरुष होइले अबळा प्राए ॥
बोळि अंगरे कर्पूर-चंदन । मंडि होइथिब हेम रतन ॥
घरे थिब शचीपति संपत्ति । रकत देखि दुलुके या छाति ॥
से मनुष्य हीन । भोग नोहे से ता रोग समान ॥
काहिँ कि किछा बळे एथि थिवा । चाल ढाल-खंडा होइ मिशिवा ॥
हरि बोलि झासुँ ये. हेब होउ । एते बिचाररु कि फळ आउ ॥
एहि कथा मूळ । के सहिब अइरिक जंजाळ ॥
लेडिरुँ गुड कहुणि कि गले । केमंते अघटण होए भले ॥
कर सारेणी गुण गले छाडि । हाथकु आसइ कि ये.बे लोडि ॥
वइरी कपट । जाणि नाहुँ तांक हुंदर नट ॥
सात कथारे भुले परा सती । तेतेवेळे राजा कले सम्मति ॥
काहाकु केते लंघिबेटि पुण । छाड़िले गड एहि रूपे जाण ॥
कृष्ण पादपद्म । चिंति ब्रजनाथ छाडे बिषाद ॥

(समर तरंग - पंचम छांद)

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

अभिमन्यु सामंतसिंहार

अप्राकृत प्रेममूर्त्ति जय राधा हरि ।
अव्यक्त लीळाकु व्यक्त कर अवतरि ॥

आदि अनादि कारण निर्गुण सगुण ।
आत्माराम सनातन ब्रह्म निरूपण हे ॥

इश्वर स्वतंत्र स्वयं भगवान तुहि ।
इच्छामय सर्वशक्तिवंत तत्त्व बिहि ये. ॥

ईश शेषादि सेवक सेव्य एका तुहि ।
इष्ट अभीष्टद दयानिधि भावग्राही ये. ॥

उत्पत्ति पाळनांत तो भ्रूभंगी बिकारे ।
उतप्लुत तंतुबाय सूत्र परकारे ये. ॥

उर्णनाभि बत खेळु इच्छा शक्ति बळे ।
उद्भव होइ तु धर्म स्थापु काळे काळे हे ॥

ऋक-यजु-साम-वहु श्रुति शास्त्र भेदे ।
रूपे गुण यश अछि अशेष संपादे हे ॥

रुचिर चरण नख छटार महिमा ।
ऋक्ष संख्या कल्पे कलिप न पाइले सीमा हे ॥

लुब्धक तारक हर ब्रह्मा गर्व हर ।
लुटाइ पार कपारे मुकति भंडार हे ॥

लुठ अळि करि कोळि पाइँ यशोदाकु ।
लोलुप गोपी वदनांबुज पीयूषकु-हे ॥

एमंत महिमावंत प्रेम भक्ति रस ।
एकनिष्ठे अभिमन्यु कवि करे आश हे ॥

ऐरावत गति अणिमादि भोग मुक्ति ।
ऐश्वर्य्यादिरे मो चित्त नोहिव आसक्ति हे ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

ओषधीशानन हे मागुछि पद धरि ।
ओ करिबि आलो दासि डाकिले किशोरी ये. ॥

औदार्य्य गांभीर्य्यादि निपुण पदाश्रिते ।
औषध से मोर तुंभे बश हेब सते हे ॥

अनंत कोटि ब्रह्मांड़ ईश्वरी ईश्वर ।
अकैतब करुणाकु परस्परे कर हे ॥

अनंत सिद्धि मोहर तुंभ पदार्चित ।
अविघ्ने हेउ सर्वदा आज्ञा कर दत्त हे ॥

ढमपणे वर्णुछि मुं गोविंद चरित ।
ढगढमाळी हेलेहें साक्षात अमृत हे ॥

॥ इत्यादि ॥

(विदग्ध चिंतामणि-- प्रथम छांद)

संध्या बर्णना

ए उतारु सुविदुप सावधाने घेन रस
निशिमुख आगमन दिबस शेष ।
वारुणी विळासो रवि पूर्वे उदे शशीछबि
रंगिमा शुक्लिमा मनोहर प्रकाश ॥
सहजरे शरद काळ ।
ऋतुमुख जात तिथि निशि मंजुळ ॥

विचारि कि पद्मयोनि सुधा अनुराग घेनि
विश्व तुळनारे तुळि तुळना करे ।
उश्वास भाग उठिला गरुआ तळकु गला
उच्च नीच नीच उच्च जणा विधिरे ॥
सुधा अनुराग संगते ।
सरि करि बोलिपारिब के केमंते ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

तात सिद्धिकि बळिव बिचारि कि कामदेव
माणिक्य हीरा रथांग पेषि देइछि ।
बियोगि सुखदुःखद संयोगी सुखदुःखद
परस्परे बिरोधाभासकु करुछि ॥
तम नाशने त प्रयोग ।
तमे पशे तमे आसे ए कि संयोग ॥
दंति-दंत-समुद्‌गक प्रवाळ ढांकुणी टेक
दिग बणिक कि फेड़ि भिन्ने थोइछि ?
तार तार तार मोति गोटि गोटिके गणंति
करुछि परा अंबरे प्रते हेउछि ॥
स्थान स्थित नीळेंद्रमणि ।
गोटिके कि भ्रम भाळे कि हेब्र गणि ॥
दिनकु कले बिनाश वारुणीरे हेलें बश
द्युमणि द्विदोष हते सिंधु मज्जन ।
दिन ताप बिनाशन तमसकळ खंडन
पुण्यरु मान पाइले बिधु वहन ॥
कर कीर्त्ति घोटिला मही ।
रजत सृष्टि सज के हेला कि बिहि ॥
शिबांक होइले भीम अछंति नाहाँति भ्रम
भीम गंगाकु लोडिले जटा फिटाइ ।
कुसुमबती ब्रतती अदृष्ट रजार रीति
मोतिहारबंती मति चिंताकु पाइ ॥
भ्रमरे भ्रमरे भ्रमंति ।
मधुप पराए कुमुदिनी लोडंति ॥
(त्रिश छांद-प्रथमांश)

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

सालवेग

बृंदाबने बंशी के बजाइला गो मित ।
एका राधा राधा नामे राइला ॥

छिडिला से छिद्र गंठि निबिबंध गला फिटि
पिंधंते तर नोहिला ।

पाषाण होइला पाणि यमुना वहे उजाणि
झरझर मकरंद बहिला ॥

मुनिक आसन टळि रथरे पडिला मिळि
व्याघ्र पछे कुरंगी गोडाइला ।

शुष्क तरुमाने थिले ध्वनि शुणि पल्लबिले
पबन थकित चित्त मोहिला ॥

कहे सालबेग हीन एहि मोर निवेदन
राधाकृष्ण पादे चित्त रहिला ॥

—*—

काहिँ कि आसिछ मन किस नेबा पाइँ रे ।
आसिछ लंगळा होइ यिबु शून्य होइ रे ॥

घर याक मुकुळा तु बंधे केते बांधु रे ।
आपे मले यु.ग याए परपाइँ कांदु रे ॥

तु याहाकु विभा हेलु शाढी शंखा देइ रे ।
खाउअछि सेहि तोते काळरूपी होइ रे ॥

माटिघट पंजुरीरे पाळु सुना शुआ रे ।
अठाकाठि लगाइछि भावबिनोदिआ रे ॥

कहे सालबेग हीन पादपद्म ध्यायि रे ।
श्रीरंगा चरण बिनु अन्य गति नाहिँ रे ॥

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

बनमाली दास

मनाशिक्षा

(राग—दीर्घ बंगळाश्री, ताळ—झुळा)

जगतटि याक हरिमय मन ! देखुथा नयन भरि ।
स्थावर जंगम सर्वत्र समान भाबरे अछंति पूरि रे ।
हरि विना स्थान नाहिँ । हरि एका सबुरि गोसाइँ रे ।।

सर्ब अंतर्यामी ब्रह्माड़र स्वामी पूर्णानंद सनातन ।
परम गुपते बिराजंति नित्ये अखिळ बिश्व मोहन हे ।
भक्त भाबरे से भोळा । श्वेत अमळ कमळ डोळा रे ।। २

जळे स्थळे व्योमे महामनोरमे प्रकाशंति ज्योतिराशि ।
स्वर्ग मर्त्य स्थळ सहिते पाताळ एका सेहि श्रीनिबासी रे ॥
तांकु दिव्य नेत्रे अना । हरि प्रेमे पूराअ कामना रे ।। ३

प्राण सहितरे देहकु समर्पि अभय चरण पदे ।
कर तु कीर्त्तन सदा हरिगुण न छाडिबुटि बिपदे रे ।
बनमाळी दास भणे । भ्रम हुअना संसार बणे रे ।। ४

(बनमाळी पद्याबळी—बाबाजी बैष्णव चरण)

—*—

भक्तचरण दास

मनबोध चउतिशा

कहइ मन आरे मो बोल कर । कळा श्रीमुख बारे देखिबा चाल रे ॥
केते दिनकु मन बांधिछु आंट । कि घेनि यिबु तोर छुटिले घट रे ।।
खंडि ये खंडि तोर पंजरा काठि । खाउण थिबे श्वान शृगाळ बांटि रे ॥
खट-पलंके मन शेयाइ शोउ । खळ दुर्गंध हेब ए तोर देहु रे ।।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

गलेणि तो संगरु ये.तेक जन । गंठिरे बांधि नेले के केते धन रे ॥
गुरु गोबिंद नाम तुंडे न बोलु । गाढे मज्जिण नित्ये धन अर्जिलु रे ॥
घर बोलि अर्जिछु ये.ते पदाथ । घट छुटिले तोते बोलिबे भूत रे ॥
घर घरणी देह कोळाउ थिबे । घेनि बंधु कुटुंब शुद्ध होइबे रे ॥
उद्धार हेबु ये.वे भव सागरु । उपाय करि भज एबे श्रीगुरु रे ॥
ऊणा हेउछि दिनु दितु आयुष । आउ एणिकि अछि केते बयस रे ॥
चित्र प्रतिमा प्राये दिशु सुंदर । चिरि भितर देख कि नारखार रे ॥
चर्म वेढिछि सिना चउराशिकि । चित्त तु दिअ नीळगिरि बासीकि ॥
छार देहकु मन करिछु सज । छंद कपट तेजि गोबिंद भज रे ॥
छुइँवे नाहिँ तोते बोलिबे मडा । छखंडि काठ हेब तो पाइँ लोडा ॥
यम ये. न जाणइ बाळुत यु.बा । जीइबु बोलि मने करिछु अबा रे ॥
जणे हे एथे केहि नाहिँ अमर । जगन्नाथंकु भज हेबु उद्धार रे ॥
झोला कंथा पाछुडा पिंधाकु रसु । झाड संसारे मन न बुझि पशु रे ॥
झुंटि पडिले उठि पारिबु नाहिँ । झडिला पत्र बृक्षे लागिछि काहिँ रे ॥
निशि दिवसे थय नोहुँ ना मन । निद्रारे देखुअछु यथा स्वपन रे ॥
न यिबे संगे केहि यिबु तु एका । नाम मात्र अटइ पथकु सखा रे ॥
टाण करिछु मन सबु मोहरि । टळि पडिले केहि नुहँ काहारि रे ॥
टेरा भितरे ये.हे अपूर्व नारी । टोप चउँरी अछि तो देहे पूरि रे ॥
ठिक मुँ कहुअछि शुण मो कथा । ठके तो देहे अछि शून्य देवता रे ॥
ठकि यिबुटि ठिक मुण्ड पडिले । ठिक्कण गुरुसेबा कर तु भले रे ॥

(इत्यादि)

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

गोपालकृष्ण

उठिलु एडे बेगि काहिँकि रे दुःखिधन !
दधि मंथाइ देवु नाहिँकि रे ॥

देह पाशोरि दंडे निद न गलु एडे
बिटोळ हेलु मोर पाइँकि रे ॥

खेळिबु राम तुले पछे राति पाहिले
शुआइ देबि गीत गाइकि रे ॥

मंथिबि मुँ केमंत खुआ दंडरु हात
छाड देउछि सर खोइकि रे ॥

आहा ए कि प्रमाद छंदना बाबु पाद
डाक या बळराम भाइकि रे ॥

मंथन घटे हात पूराइ नबनीत
काढु बोलंति हेलु बाइकि रे ॥

चुछा हातटा खाइ नाचुछु काहिँपाइँ
शुखि यिबु न चाहाँ छाइकि रे ॥

गृहकृत्य पकाइ बसिथिबि एकाइ
निशिदिन तोते काखेइकि रे ॥

पणतरे बदन पोछि देले चुम्बन
गोपाळकृष्ण चिते दुहिँकि रे ॥

यदुमणि महापात्र

अंध देशकु गलि दर्पण बिकि । कंध हस्तरे देलि गोदान टेकि ।
जडा मध्यरे खडा कलि रंधन । कामुडा घोडा मुखे देलि चुंबन ।
बसंत मुहीँकि उपमा खटु । काम काकरा छणा जालिचटु ।
छबिरे के जिणे नब रांबाके । के पेट पोषे धनुशर बिकि ।
जळडारे भीति काहार निति । कार भय नाहिँ उरग प्रति ।
बिचारि कहिब । चारि पदार्थ एक होइथिब ।

(यदुमणि रहस्य)

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

गौरचरण

नंद दुआर टिकि पिलाटि

टिकि पिला बोलि याहाकु बोलंति
चिरि पकाइला बकार पाटि ॥

जनम काळे एँ तुड़िशाळे पूतना असुरी धइला कोळे
जानुरे बसाइ स्तन देबावेळे
खिर संगे प्राण शोषि नेलाटि ॥

धाईँला दांड़ गोरस तुंडे हात बोळि देला गोपींक मुंडे
धुळिखेळठारे मिळिण चांडे
अंधकु नयन याचि देलाटि ॥

पातिला कर आणिला सर आणि देला क्षणि थरकु थर
दहि दुध छेना शतेक भार
सखि ! ता करकु न अंटिलाटि ॥

गिरि अनळ भक्षिला ताळ बने धेनुकार पूरिला काळ
काळिंदी जळरु विष उडाइ से
पद्म तोळि काळी दळि देलाटि ॥

भक्षिला माटि छाटेक पिटि यशोदा आखिण देखंते पाटि
उदर भितरे दिसन्त ब्रह्मांड
माताकु सेठारे माया कलाटि ॥

एडिकि पिला से टिकि पिला केजाणे गो केउँ राइजे थिला
गउरचरण बोले कंस आळे
बंदीशाळाठारे जन्म हेलाटि ॥

—●—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

भीमभोइ

स्तुतिचिंतामणि

सत्य धर्मे गुरु सेबा ये. करिब छाड छाड गृहबास ।
आपणा पिंड प्राणे आशा न रखि गुरुपादे कर आश ॥
आपणा कामक्रोध लोभमोहकु ग्यानरे कर आयत्त ।
हिंसा-कपट-छंदबाद-कुटिळ निबारि कर दुरांत ॥ २
राग-ईर्षा-तम-अंहकार ये.ते एहाकु आयत्त कर ।
एहि घरे समस्ते रहि अछंति सदग्यानरे बिचार ॥ ३
पर खच-मिछ न धरिब मने नाश बाटरे न थिब ।
अंत मुखरे निरते सत्य कहि तेबे सन्न्यास होइब ॥ ४
आपणा दारा धन सुत बित्तकु मने न धरिब आशा ।
पर कहिला बचने प्रते याइ न कर चित्ते भरसा ॥ ५
आपणा बंधुबांधब बापभाइ न बोलिब मोर मोर ।
देख अनित्य संसार मायामोह केहि नुहँति काहार ॥ ६
पर स्तिरी पर द्रब्यकु देखिले न बळाइब प्रकृति ।
एक पाद ब्रह्म गुरु सेबा कले तेबे बोलाइब यति ॥ ७
गुरु पयरे बिश्वास रखिथिब नोहिब आनरे संग ।
पिंड प्राणकु हेतुघरे रखिले तेबे न टळिब अंग ॥ ८
योनिर जन्म बासना अंगे थिले पाइ नुहेँ ब्रह्म ज्ञान ।
निरंतरे गुरु सेबारे खटिले अखंडित ब्रह्म लीन ॥ ९
देबो खपरु उद्धार हेब ये.ते माटि खपरारे भुंज ।
स्तिरी लिंग नेत्र देखिब ये.मंते माता बोलि मान खंज ॥ १०
अबिकार मत पंचुभूते कर एकांग ब्रह्मकु चिह्नि ।
सकळ जीव समानरे देखिब तेबे हेब ब्रह्मग्यानी ॥ ११

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

जन्म मरणकु भय न करिब मुरुछि थिब आद्यरु ।
पिण्डकु मोर मोर नाहिँ बोलिब याहा करियिबे गुरु ।
निरंतरे अनास्थिति आचरिब, काहाठारे नाहिँ साथि ।
एक पादकु हृदे ये.बे भाबिब लभिब परम गति ।। १३
दिबा निशिरे उदासमते थिब बातुळ पराए होइ ।
बाळकमते ये.बे भ्रमिपारिब तेबे ब्रह्ममते पाइ ।। १४
मेदिनी प्राए देह सहि रहिब निंदा-स्तुति-गाळि शुणि ।
शीत-ग्रीषम-बरषा अंगे सहि तेबे बोलाइब ग्यानी ।। १५
समुद्र प्राए गभीर बुद्धि थिब उश्वास नोहिब केभे ।
प्रसन्न होइण सदगुरु पिता याहा आग्याँ देइथिबे ।। १६
घट भेदरे फंदा-बृत्ति करिब अन्य फंदा नाहिँ कार्य ।
ब्रह्म ग्यानकु तेबे लभि पारिब अनुभब मार्ग हेज ।। १७
धीर समीर हृदयरे बहिब न पांचिब छिद्रबुद्धि ।
प्रकृतिगणे ये.बे संग होइब ए पिंड नुहइ सिद्धि ।। १८
जिह्वा इंद्रि नाशुछंति ए जीबकु संभाळिब यत्न करि ।
अखंड महा ब्रह्म पद्म पादकु दृढबंधे थिब धरि ।। १९
महा ब्रह्मकु मुँ आशा करि करि धरि न पारुछि पाद ।
भणे भीमभोइ गुरु पाद ध्यायि न पाउछि अंत आद्य ।। २०

—*—

कबिसूर्य बलदेव रथ

जगते केबळ

राग—आषाढ शुक्ल

जगते केबळ । जने हसिबे एहि तहुँ फळ ।। घोषा ।।

जटिळ करि स्कंध रोमराजि । शिखरि दरीरे मरु गरजि ।।
कुटिळ करि भ्रूकुटीकु चाहुँ । सरमा कंठीरब हेब काहुँ ।।
अलक्त द्रब नयने बोळि । रसाळ गहळ शाखारे खेळि ।।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

कवळ करु ता कलि कळाप । काक कि करिव पंचमालाप ॥
वर जीब रसे देइ मानस । वरजि वरषे अमेध्य ग्रास ॥
देहे मंदाकिनी रज लगाइ । ग्राम्य शूकर कि होइब गाई ॥
चंचु चरणे लगाइ हिंगुळ । निज तुंडे मंडि खंड मृणाळ ॥
चालु पूर्व अंग फुलाइ बकी । तेवे से मराळी बोलाइब कि ॥
गंजि नायक रंगे चोपदार । खंजिले हेले चाबुक सवार ॥
खिलाइले हेले नाना मसला । तुरंग हुए कि रासभ पिला ॥

× × ×

श्रवण सर्वावयवी मानव । सहस्राक्ष साम्य ये.बे लोडिब ॥
जगते केवळ । जने हसिबे एहि तहुँ फळ ॥

—*—

(राग---साबेरी)

कि हेला रे । कहि त तुहइ भारतीरे ॥

कालि या दूररु देखि कळना कला मो आखि
कळा इंदीबर आरति रे ॥ पद ॥

केळि कदंब लतार कोळे कि श्यामळ तार
तेज से रबि सुतार तीरे ॥

कंपि मोर कळेवर होइगला आर पार
याहाकु डरइ तार तीरे ॥

कुसुम कोदंड कांड केते करिथिला रुण्ड
कर्कश नोहिबा भारतीरे ॥

कहुछि बरजि लज्जा केवळ हेला मो मज्जा
मज्जि यिबि कि उमा रतीरे ॥

कि मोहन लीळा धरि कोटि कळाकर शिरी
पूरिछि से श्याम मूरतिरे ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

कुत्सा करे मुँ धाताकु काहिँकि सरजि ताकु
चिरायु रखिला जरती रे ।।
कि नीति कि जाति शीळ कि कुळ बरत फळ
ठउरि पारिला मो मतिरे ।।
कोमळतर मोहन कुंजकुक्षिरु निस्वन
आसि चुंबि देला मो श्रुतिरे ।।
कलबल छटपट होइ याउछि निपट
संवेश अशन बिरतिरे ।।
कहइ श्री बालुकेश शरण धरणी ईश
एकि दंड बिना पीरतिरे ।।

(किशोरचंद्रानंद चंपू)

—*—

साधु दास

शरीर भेद भजन

ओलट बृक्षे खेळुछि लोटणी पारा ।
अठा-काठि-पंजुरीरे न पडे धरा ॥
से पारार पक्ष नाहिँ, लक्षे योजन उड़इ
जळ फळ न भुंजइ अटे अमरा ॥ १
पारा अछि येउँ ठारे, केहि ता देखि न पारे
शीतळ छाया कोटरे न पडे खरा ॥ २
पारा येवे यिब उडि, बृक्ष पडिब उपुडि
साधु दास बोले भज दुःख पासोरा ॥ ३

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

कबिबर राधानाथ राय

देवि वीणापाणि !

देबि बीणापाणि केउँ पाप फळे ।
करुणा तोहर ऊणा ए उत्कळे ॥

स्वभावे उत्कळ शोभार निधान ।
मात्र ए शोभारे तोर अधिष्ठान ॥

बिनु सिना माता होइछि बिवशा ।
भजिछि अरण्य प्रसूनर दशा ॥

क्षुद्र शिप्रा स्रोत बिख्यात जगते ।
महानदी नाम रहिला गुपते ॥

सुरूपा अंशुपा लोके अगोचर ।
पूजास्पद हेला गोष्पद पुष्कर ॥

तोर कृपा बळे क्षुद्र महीयान ।
तो कृपा बिहुने बड हुए सान ॥

खर्ब गोबर्द्धन गिरींद्र बोलाए ।
महातीर्थ रूपे लोके पूजा पाए ।

स्वभावे गिरींद्र होइ मेघासन ।
लभि नाहिँ गिरि समाजे आसन ॥

तो कृपा बिहुने उत्कळ मातार ।
नाम ख्याति ग्रंथे पडिनाहिँ गार ॥

भाग्य दोषे अंग अज्ञान शर्वरी ।
अंधारे अभागी रखिछि आवोरि ॥

पाहिलाणि घोर तामसी यामिनी ।
फुटिव उत्कळ भाषा कमळिनी ॥

ए घोर यामिनी अवसान शंसी ।
काव्य तारा रूपे बीर गंग वंशी ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

उदिले प्रथमे बामंडा राजन ।
बासुदेव विश्व कल्याण भाजन ॥

रखिले सुनाम येहु काळे काळे ।
गुण यंत्रे खोळि यशोगिरि भाले ॥

तमः पळाउछि होइ तरतर ।
प्राचीनभ नब ।बभारे भास्वर ॥

रवि रूपे एबे उदय अचळे ।
रबिबंशमणि उदित उत्कळे ॥

श्रीमान श्रीरामचंद्र आख्याधारी ।
उत्कळ अज्ञान तम ध्वंसकारी ॥

(चिलिका)

—*—

महायात्रा

धन्य रे उत्कळ तुहि ए घोर अंधारे
तुहि से रखिबु सिना पोषि स्नेह दाने ।

गुपते ए धर्म दीप नीळाद्रि कंदरे
पुण्यधाम ! अस्तगले कमळिनी सखा ।

रखइ मो शिखा यथा आदरे संपादि
पवित्र सावित्र ज्योति तमिस्रा तमसे ।

अज्ञान अंधारे आहा हेबे अंधीभूत
पुणि अल्पदिने आर्य स्वार्थांध ऋत्विजे ।

भिडिबे आहा से पुणि स्वार्थर शांकोळि
भारतर गळदेशे बज्रग्रंथि देइ ।

औषधे शमित व्याधि छिद्र पाइ यथा
आक्रमइ रोगि देह द्विगुण विक्रमे ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

लभिब भारत पुणि दारुण दुर्गति
पाशोरि पुरुषकार महिमा पुरुपे ।
मृत जड़ पिंड बन हेबे अल्पदिने
निरुत्साह निरुद्यम दैव परायण ।
पुणि छिन्न भिन्न होइ परस्परे द्वेषी ।
हेबे आर्य्यावत बासी.......... ।

—●—

व्यास कवि फकीर मोहन सेनापति

मुँ हाट बाहुडा

(राग—चक्रकेळि)

देखिलि संसारे बसिछि हाट,
लोक गहळरे नमिळे बाट ।
दोकान पसरा धाडिकि धाडि,
बाट दुइपाश बसिछि माडि ।
भुलाइबा पाइँ गहकि मन,
हाटुआंक देख केडे यतन ।

हाटुआ बाटुआ अळंति धाइँ,
हाटे किणा बिका करिबा पाइँ ।
हाट करिबाकु बळिला मन,
मात्रक नाहिँ त हातरे धन ।
बाहारिलि हाट देखिबा पाइँ,
दोकानमानंकु देखिलि चाहिँ ।

देखिलि गोटाए चाळि दोकान,
दोकानिर नाम ये. अबधान ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

देशी सड़ा माल बिकइ सेहि,
पिलाए किणंति पइसा देइ ।
देशी माल नाहिँ ता गुण किछि,
दोकानी वापुडा याचि देउछि ।
सउदा सहित लाभ दोकानि,
दुइ चारि बेत दिअइ टाणि ।

पाशे अछि आउ गोटे दोकान,
पिंधिछि दोकानी कोट पेंटलुन ।
माष्टर परा से दोकानी नाम,
पाठ बिका अटे ताहार काम ।
बिलाति माल ये. बिकइ सेहि,
किणुछंति पिला पइसा देइ ।
एहि माल दाम वहुत चढा,
तटका से नुहेँ पचरा सडा ।
नगदा नगदि देइ कउडि,
किणुछंति पिला उभुडा पडि ।

देखिलि बुझिलि एहि दोकान,
केवळ नोहेटि पिला भंडाण ।
सुंदर पाचला फळ बहुत,
दोकान भितरे अछि मजुत ।
बाइरण, पोप, सेक्सपियर,
वाडसार्थ, मिलटन, होमर ।

हिस्ट्रि, फिलसफि, बोटनि,
बिलातु होइछि ए आमदानि ।
पिलाए खाआंति ए सबु फळ,
बाप टंका गणि दिए केवळ ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

ए सबु फळर गुण ओलटा,
हुए देह सरु, बुद्धिटा मोटा ।
मात्रक हजम ये. करि जाणे,
जगत जिणे से आपणा ज्ञाने ।
अळा खाइले घटे जंजाळ,
बहुत खाइले फिटे कपाळ ।

ताह्रा पाशे बसि गोटे दोकानी,
हातरे धरिछि से नासदानि ।
आंठुलुचा सान लुगा से पिंधे,
पुरुणा गामुछा पडिछि कांधे ।
देखिलि दोकाने माल सकळ,
निहाति पुरुणा शुखिला फळ ।
शुखिला नडिआ कलि बिश्वास,
उपरटा कता भितरे रस ।

मात्रक दोकानी करिछि फंदि
सजाडि रखिछि शबर संाध ।
काळिदास, भवभूति, श्रीहर्ष,
ताह्रा गोदामर माल सर्बस्व ।
घटत्व पटत्व वेदांत बहि,
देखि न पचारे गराख केहि ।

डोर देइ रखिअछि गंभीरे,
पोति पडिलाणि मूषा माटिरे ।
देबा पाइँ सेहि गोदाम झाडि,
तुच्छाटारे माल देउछि छाडि ।
पुरुणा मालरे शरधा नाहिँ,
किए घेनियिब ताह्रा किपाइँ ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

मात्रके देखिण फळ पाचिला,
घेनिगले थोके ब्राह्मण पिला ।
पइसा पाइवे भरि भरसा,
खबर कागज लेखा बेबसा ।
करि बसिछंति केते दोकानि,
देखिलि से गुड़ा भारि अज्ञानी ।

याचि याचि माल दिअंति काळि,
टंका मागियाइ खाआंति गाळि ।
एपरि गहकि थोके अछंति,
आग मूल देइ माल निअंति ।
आहुरि देखिलि सबु कथारे,
डरि मरियांति लोकंकठारे ।

मात्र ये विकइ बिलाति माल,
खाइ पिइ तार फुलिछि गाल ।
ताकु डरिथांति बहुत लोक,
काळे बोलिदेव कथा पदक ।
देखि लागिलाणि ताटंगा मोते,
देशी बिलातिरे प्रभेद एते ।

—*—

मधुसूदन राओ

परमेश्वर

याहा मुँ करइ, याहा मुँ कहइ याहा मुँ चिंतइ मने ।
जगतर कर्त्ता परम-ईश्वर जाणुछंति प्रतिक्षणे ॥

मो पाशे अछंति दिबस-रजनी महाप्रभु परात्पर ।
एकथा सुमरि हृदये ताहांकु पूजिबि मुँ निरंतर ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

जन्मभूमि-भारत

(राग—चोखी)

तुहि मा जनम भूमि पवित्र भारत-भूमि
तोहर संतान आंभे अटु सरवे ।
तोर श्रीचरणे सेवा पाइँ मन प्राण देवा
गाइबा तोहर नाम आनंदरवे ॥
तो आनदे होइबा सुखी
कांदिबा दुःखरे तोर होइण दुःखी ॥
धन्य महिमा तोहर नाहिं तार पटांतर
मस्तकरे हिमाळय पर्बतबर ।
दुइ पारुशे जळधि ब्रह्मपुत्र सिंधु नदी
चरणरे बिराजित महा सागर ॥
बिंध्य गिरिबर कटिरे
गंगा आदि केते नदी शोभे शरीरे ॥
जनमिले तो कोळरे केते शूर बीर नरे
रामचंद्र, भीष्म, द्रोण, कर्ण, अर्जुन ।
महाकबि बेदव्यास बाल्मीक काळिदास
गाइले पवित्र कंठे तोहर गुण ॥
चैतन्यादि महात्मा जने
प्रचारिले बिभु नाम आंनद मने ॥
केते केते पुण्यबती केते पतिव्रता सती
केते बीर नारी केते बीर जननी ।
समस्ते तोर दुहिता पद्मिनी, साबित्री, सीता
दुर्गाबती आदि केते बीर रमणी ॥
नमइँ मा भकति भरे
अधम अक्षम सुत तो चरणरे ॥

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

उत्कळ बंदना

जय मा जनम भूमि उदार उत्कळ भूमि
तोर स्नेह कोळे मागो जन्म आंभर ।
कोटि सुत घेनि कोळे पाळुअछु स्नेह भोळे
तुहि मा करुणामयी करि आदर ॥
तो बक्षर अमृत रस
सुखी करुछि मा कोटि कोटि मानस ॥ १

तुहि मा शोभा सदन सिंधु धुअइ चरण
केते नदी गिरि बन शोभे तो देहे ।
धर्मर तु कामधेनु पुण्यमय तोर रेणु
केते महातीर्थ धरिअछु मा स्नेहे ॥
कोटि कोटि मनुष्य नारी
तोर पदतळे बसि मुक्ति भिखारी ॥ २

केते केते तपोधन केते साधु महाजन
तोर सिंधु तटे अबा गिरि कंदरे ।
तपस्या साधन करि हृदे महाभाव धरि
प्रचारिले युगधर्म आनंद भरे ॥
शंकरादि महात्माजने ।
बिमोहित तोर दिव्यज्योति दर्शने ॥ ३

केते केते धर्मवीर निर्मिले महामन्दिर
ययाति ललाट-इंदु अनंग भीम ।
पुणि केते युद्धवीरे यंश अर्जिले महीरे
रणे परकाशि बळवीर्य असीम ॥
तुहि मागो बीर जननी ।
तो यशरे पूरिथिला एहि अबनी ॥ ४

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

जनमिले तो कोळरे सारळादि कबिबरे
पूर्ण तोर काव्य कुंज अमर गीते ।।
तो महिमा तो गौरव तोहर पुण्य विभव
सुमरि मा मातृभूमि तोर अतीते ।।
नमइ मा भकति भरे ।
अधम अक्षम सुत तो चरणरे ।। ५

—*—

स्तव

(वृत्त—शंकराभरण)

अखिळ ब्रह्मांड पति मो जीबन स्वामी ।
हे परम पितामाता प्रभु अंतर्यामी ॥
धन्य करुणा तोहर ।
हे करुणा सिंधु काहिँ तार पटांतर ॥ १

ब्रह्मांडर आदिमूळ निखिळ बिधाता ।
सकळ कळुष हारी हे मंगळ दाता ॥
तोर मंगळ संगीत ।
निखिळ भुबन गाए होइ बिमोहित ॥ २

द्यु लोके भास्कर चंद्र नक्षत्र निकर ।
अंतरीक्षे समीरण संगे जळधर ॥
प्रभो, भूलोके सागर ।
अचळ गहन नदी पशु पक्षी नर ।। ३

सबें तो करुणा सुधा करुछंति पान ।
कोटि ब्रह्मांडर नाथ तु प्रेम निधान ।।
प्रभो, तो प्रेम किरण ।
उज्ज्वळइ बिश्वबासि हृद निकेतन ॥ ४

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

जनक जननी सुत सुता जाया धव ।
सहोदर सहोदरा आत्मीय बांधव ॥
प्रभो, ए सर्व संबंध ।
तोर दया निदर्शन आहे आदिकंद ॥ ५

विराजित तुहि नाथ सकळ जीवने ।
संपदे बिपदे सदा जीवने मरणे ॥
पूर्ण मंगळ आळय ।
देउअछ सर्वजने अभय आश्रय ॥ ६

बिश्व गुरु विश्व राज बिश्व पिता माता ।
बिश्वजन प्राण सखा दुःखहारी त्राता ॥
दीनबंधु कृपासिंधु ।
सुरनर मागुछंति तोर कृपाबिंदु ॥ ७

संकट पूरित घोर भव सिंधु जळे ।
एकमात्र कर्णधार तारु तु सकळे ॥
तोर मंगळ बिधान ।
करिअछि मरणकु अमृत सोपान ॥ ८

सत्य पथे धर्म पथे घेनियाअ मोते ।
भसाअ पराण मोर तब प्रेम स्रोते ॥
प्रभो, परम शरण ।
ए जीवन श्रीचरणे कलि समर्पण ॥ ९

—*—

गंगाधर मेहेर

बिश्वजीवन हे

बिश्वजीवन हे ! तु भंकु करुणा सिंधु
बोलिबाकु मन बळुनाहिँ ये णु सिंधु तब कृपा बिंदु ॥ घोषा ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

तुंभ भजनरे हेबि नाहिँ नाथ माळा जपिबाकु बाध्य ।
कोटि कोटि ग्रह कंठि से माळार के जपि करिब साध्य ॥
देइ नाहँ बळ पादधूळि घेनि पारिब नाहिँ मो मुंड ।
कोटि कोटि रबि धूळि रूपे तुंभ पादे हेउछंति रुंड ॥
हृदयर कथा जाणिबाकु अछि तुंभर असीम शक्ति ।
सेतिकि घेनिब ये.तिकि अछि मो हृदे तुंभ प्रति भक्ति ॥
थापिबाकु तुंभ मूरति मोहर हृदयरे नाहिँ स्थान ।
सर्षप गरभे रहि न पारइ हिमाळय सानुमान ॥
कि देइ पूजिबि य़ाहा मुँ देखुछि सबु तुमरि प्रसाद ।
य़ाहा परसाद तांकु अरपिले हेब सिना अपराध ॥
मुँ-कार मातर मोर नुहेँ बोलि कहिबाकु नाहिँ बाट ।
दूरु श्रीचरणे अर्पण करुछि घेन ता बिश्व सम्राट ॥

रामचंद्रंक प्रति सीतांक पत्र लिखन

जानकी निकटे य़ाइ हर्षे मुनिबर ।
जणाइले अश्वमेध य़ज्ञर खबर ॥
आसिअछि रामदूत करि निमंत्रण ।
शिष्यगण घेनि कालि करिबि गमन ॥
तहिँ संगे कुश लब यिबे यथा शिष्य ।
देखिबे बहुत मुनि लभिबे आशिष ॥
महर्षि प्रस्ताब सती करि समर्थन ।
कुमारंक भार गाढे कले समर्पण ॥
तहुँ ऋषि अंतेबासी मानंकु कहिले ।
अश्वमेध देखि यिबा य़ामिनी पाहिले ॥
कुश लब सहितरे सतीर्थ सकळ ।
सज होइ धरिथिब पाथेय संबळ ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

बाबा कुश लव बीणा संगे थिब धरि ।
सफळ करिब शिक्षा सुसंगीत करि ॥

ये.उँ राम रामायण काव्यर नायक ।
होइछंति तुंभ हृद आनंद दायक ।

सेहि राम करुछंति एहि महा याग ।
आसिबे बहुत दूरु बहु महाभाग ।

× × ×

अक्षरे देखिब याहा देखिछ अक्षरे ।
गाइब सभिक कथा सर्ब समक्षरे ।

संगीत शुणिबे शत शत नरपति ।
तपः प्रभापूर्ण तनु शत शत यति ॥

केहि पचारिले तहिँ तुंभ परिचय ।
बोलिब बाल्मीकि-शिष्य आंभे भ्रातृद्वय ॥

राजा रामचंद्र यदि करिबे आह्वान ।
करिब छामुरे तांक रामायण गान ॥

पचारिले परिचय घेनि कुतूहळ ।
बोलिब बाल्मीकि शिष्य सोदर युगळ ॥

धन देले लोभ तेजि बोलिब बिनये ।
कि करिबुँ धन नेइ तापस निळये ॥

तेबे शुणि मुनिमुखुँ अश्वमेध कथा ।
बैदेही हृदये हेला आकस्मिक व्यथा ॥

भाबिले निश्चय रघुकुळ चूडामणि ।
अंके बसाइले आणि द्वितीया रमणी ।।

काहिँ केउँरूपे कला कि घोर तपस्या ।
तपस्याकु तार मोर बळुछि लाळसा ॥

किए कहिदेब सेहि तपर नियम ।
निश्चय करिबि तहुँ तप गुरुतम ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

उपाये आणिबि सेहि निगूढ़ मंतर ।
विचारि लेखिले सती बिनय पतर ॥

शरण बत्सळ ध्वज रिपु गजांकुश ।
दुःख गिरिबज्र यहिँ देखंति बिदुष ॥

राज राजेश्वरंक से पाद पद्म द्वंद्वे ।
दीन भिकारिणी दूरु नत शिरे बंदे ॥

करिबाकु मधु आशा तिमिर भेदन ।
कातर कांतारे थाइ करे निबेदन ॥

महाराज महायज्ञे होइल दीक्षित ।
नब बामा हेउथिब बामांके बीक्षित ॥

अशेष रतन धन क्षौम बस्त्रमान ।
आचरति महायशे करिब प्रदान ॥

सिद्धकाम हेबे तहिँ अर्थी समुदय ।
मो मानस भिक्षा एक होइछि उदय ॥

ए छार भिक्षारे नाथ न हेब कृपण ।
दया रत्नमय दान बारिधि आपण ॥

ये होइछि आजि तुंभ अंकर भाजन ।
भक्तिभरे देखुथिबे जगतर जन ॥

पूर्वे सेहु करिथिले केउँ घोर तप ।
केउँ ठारे केते काळ केउँ मंत्र जप ॥

एहा मात्र प्रभु मोते देबटि जणाइ ।
अन्य किछि धने मोर प्रयोजन नाहिँ ॥

कोटि अश्वमेधे येते धन हुए दान ।
तहिँरु अधिक ताहा हेब मोर ज्ञान ॥

आउ एक कथा मात्र अछि अनुरोध ।
दुःखिनीर पुत्र युग अत्यंत अबोध ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

नाहिँ तांक पितृकोळ आरोहण भाग्य ।
न जाणंति जन्मकाळु पितृ अनुराग ॥
जाणिछंति जननीर जीबन कंदाइ ।
बीणा तन्त्री सहकारे रामायण गाइ ॥
किए न कांदिब बहि मानब हृदय ।
तरु लताचय यहिँ हुअंति अथय ॥
तुंभर चरिते निजे होइ बिमोहित ।
याउछंति शिशुद्बय महर्षि सहित ॥
करिबाकु तुंभ पद पंकज दर्शन ।
मन तांक नेउअछि करि आकर्षण ॥
शुणाइबे गत तुंभ दुःखर काहाणि ।
या' शुणिले दुःखिनीर हृद हुए हाणि ॥
धीरबर ! से कथाकु घेनि तुंभ श्रुति ।
आणिब यद्यपि दीना बैदेहीर स्मृति ॥
बैदेहीर प्रणयकु मणिब स्वपन ।
चाहिँ नब प्रणयिनी प्रफुल्ल लपन ॥
लेखुथांति पत्र सती हृदय बिकळे ।
पत्र धौत हेउथाए नयनर जळे ॥
आउ कि लेखिबे बोलि भाबुथिले बसि ।
आलिंगले लब कुश मुदे हसिहसि ॥
बोइले गो मात ! धन्य धन्य रघुपति ।
धन्य तांक प्रणयिनी सती भाग्यबती ॥
अश्वमेध करुछंन्ति कौशल्या नन्दन ।
दूत एक आसिअछि धरि निमंत्रण ॥
दूतकु पचारि याहा हेलु अबगत ।
रामचंद्र योगु आजि धन्य ए जगत ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

जन अपवाद राम कले विभंजन ।
प्राण प्रणयिनी सीता करि विसर्जन ॥
अश्वमेध यज्ञे सहधर्मिणी सकाशे ।
कानकी जानकी राम रखिछंति पाशे ॥
थिले कि जननि, तांक यचिता दुर्लभ ।
अन्य जाया न इच्छिले जानकी बल्लभ ॥
काहिँ गले जानकी मा न थिबे जीबने ।
न पारिलु जाणि सेहि कथा रामायणे ॥
कुमरंक बाणी सुधा सागर लहरी ।
सती जीबनकु देला निमज्जित करि ॥

—*—

नंदकिशोर बल

डाआणिआ खरा पडिछि बेळ याउछि बुड़ि ।
कि सुंदर पारा योडिए याउ अछंति उडि ॥
आस आस पारा योडिक मोर पिंडारे बस ।
खाइबाकु देबि तुंभकु मुहिँ नडिआ रस ॥
पिइबाकु देबि तुंभकु पद्म पोखरी पाणि ।
शोइबाकु देबि खटुली माळी घरु मुँ आणि ॥
माळीघर खटुलीरे ये. बाँउशर पातिआ ।
माआ झिअंकर गोडरे रतनर भुटिआ ॥
शारी पचारिला शुआ रे केउँ दांडरे यिबा ।
शुआ बोले शारी चाल लो बड दांडरे यिबा ॥
बड दांडे दांडे याआंते पाउँ गोबर लंड़ि ।
लिपि पोछि देइ याअ मा पूजि मंगळ चंडी ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

डाआणिआ खरा पडिछि बेळ याउछि बुडि ।

अस्ताचळ शिखे तपन याउछंति बाहुडि ।।

बिचित्र बर्णर बोइत प्राये शोभा प्रकाशि ।

बारुणी गगने वउद केते याउछि भासि ।।

धळा कळा नीळ लोहित बर्णे स्तरकु स्तर ।

पंति पंति साजि वउद आहा कि मनोहर ॥

पशु, पक्षी, नीर, पर्वत, लता, पादप साजि ।

बिबिध बर्णरे राजंति नभे बारिद राजि ।।

तारा मथामणि पिंधिण स्वर्गु संध्या सुंदरी ।

निद्रा स्वप्न सह ओह्लांति दिग अंधार करि ॥

—*—

अध्यापक नारायण मोहन दे

मृत्यु चिंता

जन्मिले मरण ध्रुव नाहिँ तार शुभाशुभ

पूरिला मात्रके कुंभ पडे उछुळि ।

अमोघ बिधान तार लंघिबाकु शक्ति कार

नुहेँ त ए फिटिबार ब्रह्म शांकुळि ।

जनम मरण बंधने ।

बंधा ए निखिळ बिश्व हास्य क्रंदने ।। १

बिधि बिधान बिचित्र सुमहान सुपबित्र

निखिळ बिश्वर मित्र शासे बसुधा ।

येउँ सुधामय स्वामी गर्भे संचरिला जाणि

मातृ स्तने काहुँ आणि संचिला सुधा ।

अयाचित सेहु कपारे ।

निर्भर करि बिश्वास न कलु बारे ।। २

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

तोर हित तांकु ये ते जणा, तोते नाहिँ तेते,
तेवे वृथा किंपा एते बागाडंबर ।
तु याकु मणु रे हित से तोर पूर्ण अहित
एभळि त बिपरीत बुद्धि तोहर ।।
तु रे क्षुद्र कीट समान ।
से ये अचिंत्य शकति भूमा महान ॥ ३

केमंते तो क्षीण दृष्टि कळिब रे तांक सृष्टि
तोर ये णु अति मुष्टिमेय शकति ।
क्षीण दृष्टि क्षुद्र प्राण स्वल्प आयु क्षुद्र ज्ञान
मात्र सर्बज्ञ समान तोर भकति ।।
ता खंजनी बाजि बेताळे ।
आपात मधुर मात्र गरळ ढाळे ॥ ४

ये मोहन बंशी गाने निखिळ ए बिश्वधामे
खेळियाए प्राणे प्राणे आनंद धारा ।
धूळिरु धउळि याए कि क्षुद्र कि महाकाये
सर्बे जळे मीन प्राये ब्रह्मांड सारा ॥
ये संगीते होइ मगन ।
आनंदे अनुभबंति भूमा जीबन ॥ ५

सेहि तान मान लय धरि गाअ तांक जय
सर्बत्र अकुतोभय हेबु यदि रे ।
से बिश्व मोहिनी गीति स्वरे बांधि खंजनीटि
अनंत ब्रह्मांड गीति गाअ गंभीरे ।।
दुर्गमे तो फिटिब राहा ।
तांक बळीयार भुज होइले साहा ॥ ६

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

गोठु बाहुडिबा डाक पडिलाणि गिरि पाख
न शुणिले कि बिपाक जाणु रे ताहा ।
न शुणि संकेत बंशी मतुआला परि धसि
ए गळि से गळि पशि भुलिबु राहा ॥
गहन कानन भीषण ।
अंधकारे बुलि पाइबुटि कषण ॥ ७

अनुसरि से मूरली कुंजे कुंजे याअ चळि
सर्व बाधाबिघ्न दळि सरळ पथे ।
बाटे घाटे न बिश्रमि बने गहने न भ्रमि
कुंज पथ अतिक्रमि सुमनोरथे ॥
अचिरे मिळिबु सेठारे ।
से गीत झरइ यहिँ अजस्र धारे ॥ ८

× × × ×

सुंदरु सुंदरतर अंधकारु आलोकर
राज्यकु ये. बंधुवर देखाए पथ ।
यार मंगळ परश स्वरग सुधा सरस
स्वरूप तोर क्रमशः करे प्रकट ॥
मंडि दिव्य प्रभा मंडळे ।
चिन्मय धामकु घेनियाए कौशळे ॥ २६

× + × ×

जीवनर फळ फुल सुरसे याहा अतुळ
बाछि बाछि कर ठुळ पसरा भरि ।
सर्व बांछा कल्पतरु जीवन त नुहेँ मरु
सतत ए जीवनरु पीयूष झरि ॥
अंतःस्रोता फल्गु पराये ।
जीवनु जीवन धाएँ सुधा प्रबाहे ॥ ३५

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

से प्रेम सिंधु तरंगे संतरि संतरि रंगे
तो प्राणबंधुर संगे भेटिबु याइ ।
तहिँ महोत्सबानंदे मातिण बिबिध छंदे
बसिबु परम पदे स्वस्थान पाइ ।।
रह बिरहरे न रसि ।
उच्छुळित्र मिळन मधुर सरसी ॥ ३६

—*—

कुंतला कुमारी साबत

ए कथा मनु न भुल

आजि बाप तोते कहिबि कथाटि शुण तु रे देइ मन ।
काहा कुमर तु काहा कुळमणि जाणिचु कि गंठि-धन ।।
बाप दादि तोर थिले अति बड रखि याइछंति नाम ।
मंदिर तोळाइ पोखरी खोळाइ गढि नाना तीर्थ धाम ॥
कोणार्क मथारे जगन्नाथ पुरे उडे त तांकरि छति ॥
लक्षे देउळरे संज आळतिरे जळे त तांकारे बति ॥
नदी-बंध सबु तांकरि कीरति थिले बड कारिगर ।
पथर उपरे आंकिछंति छबि अपरूप मनोहर।।
थिले बड बीर लक्षे राजांकर मउडमणिर जाति ।
पुरुष उत्तम बीर खारबेळ अनंगभीम ययाति ॥
भंज जगन्नाथ सामंतसिंहार शारळादि कबिकुळ ।
तो पूर्ब पुरुष तांक संतान तु ए कथा मनु न भुल ।।

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

पद्मचरण पट्टनायक

धउळि पाहाड

प्रिय प्रतिबेशी धउळि पाहाड
तुंभ मुख चाहिँ देखुछि निति ।
गौरबशिखरे अनाइँ अनाइँ
केते दिन मोर याउछि बिति ॥
चाहिँ बसिथाए धउळि पाहाड
तब शिरे शुणे बिहङ्ग गीति ।
काने बाजियाए केते युग बाणी
बहियाए प्राणे अनंत प्रीति ॥
लिंगराज तुंग मन्दिर रहिछि
रहिछि त सेहि धउळि गिरि ।
रहिछि अनाइ खण्डगिरि दरी
न गाए कि सुखे से दिन शिरी ॥
न कहे कि सेहि ह्रद बिदारिण
कळिंग पुराण महिमा कथा ।
अतीत काळर गौरब बखाणि
न आणे कि प्राणे दारुण व्यथा ॥
प्रति शिळा खंडे प्रति टांगि मुंडे
न अछि कि गुंथा कीर्त्ति बिराजि ।
एते थाइ थाइ एते देखि देखि
ए देश सपन न याए भाजि ॥
कह तेबे मोर धउळि पाहाड
कह भला बारे मो मुख चाहिँ ।
धउळि देशरे से दिन जीबन
आसिब कि आउ आसिब नाहिँ ॥

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

कुलवृद्ध मधुसूदन

जाति इतिहास

जाति इतिहास जातिर निर्झर
तहुँ बहे सदा जाति प्राणधार ।
से धाररु नीर पिउछि ये. नर
निश्चय हेब से जाति कर्मवीर ।। १
कळ कळ रवे छुटिछि से धार
अतीत कीरति गाइ निरंतर ।
भावी कीरतिर उदये नाचुछि
यथा चन्द्रोदये नाचे रत्नाकर ॥ २
धार मध्ये बिजे मोहिनी प्रतिमा
देख देख सेहि जननी तोहर ।
कान डेरि शुण माता कहुछंति
आस, आस, बत्स नीर पान कर ॥ ३
एहि नीर सेबि बीर मो संताने
बीर प्रसबिनी क्षीर एहि नीर ।
छाड रे आळस्य बढाअ साहस
जाति नंदिघोष कर अग्रसर ॥ ४

उत्कलमणि गोपबंधु दास

धर्मपदर शेष प्रार्थना

चौदिगे बिस्तृत सागर सैकत निस्तब्ध बिजन बेळा ।
सम्मुखे अपार नीळ पारावार चिरंतन उर्मि खेळा ॥
ऊर्द्धे सुशोभित तारका खचित अनंत नीळ आकाश ।
हेला शुद्धप्राणे अपूर्ब उदार महाभाव परकाश ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

जळ स्थळ नभ हेला एक भाव लिभिगला बिचित्रता ।
अनंत अभेदे परम निर्बेदे व्यक्त बिश्व महासत्ता ॥
बाळुत हृदय मिशिगला सेहि महा अनंत बिताने ।
अज भाव भुलि मणे आपणाकु एकीभूत बिश्वप्राणे ॥
मुहूर्त्तके पुणि से क्षुद्र हृदये संकुचित बिश्वसारा ।
भितर बाहार कला एकाकार अमृत संगीत धारा ॥
होइ एकध्यान मिळाइला तान बिश्व संगीत लहरे ।
गाए धर्मपद परम आनंदे जय जगदीश हरे ॥

नमो निरंजन निखिळ निदान व्याप्त सर्व चराचरे ।
प्रभु दयामय मंगळ आळय जय जगदीश हरे ॥
नमो निराकार सर्व बिश्वाधार व्यक्त बाह्य अभ्यंतरे ।
प्रभु बिश्वपति अगतिर गति जय जगदीश हरे ॥
धरि तुंभ बळ बहइ अनिळ अंतरीक्षे निरंतरे ।
आदेश उदधि न लंघे अवधि जय जगदीश हरे ॥

तव दिव्य ज्योति परकाशे निति ग्रह तारा नीळांबरे ।
तव पुण्य हासे कुसुम बिकाशे जय जगदीश हरे ।
नदी बन गिरि भीमकांत शिरी तुंभर कटाक्षे धरे ।
गाए तुंभ गीति ए बिश्व भारती जय जगदीश हरे ॥
अनंत महिमा अतुळ सुषमा दिशे बिश्व स्तरे स्तरे ।
तव महा प्रेम खेळे चराचरे जय जगदीश हरे ॥

से महा महिमा कि बुझिबि प्रभो क्षुद्र नर कळेबरे ।
कि भाषारे तव करिबि हे स्तत्र जय जगदीश हरे ॥
देश काळ सीमा अतीत महिमा अगोचर सुर नरे ।
एक अद्वितीय पूर्ण प्रेममय जय जगदीश हरे ॥
प्रभु परात्पर परम ईश्वर आश्रा दिअ श्रीपयरे ।
पुरु तव इच्छा ए नर पराणे जय जगदीश हरे ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

प्रकाशि करुणा ये. पुण्य प्रेरणा देइअछ्छ सो अंतरे ।
कर ताहा सिद्धि करुणा वारिधि जय जगदीश हरे ।।
मो हृदय स्वामि प्रभु अंतर्यामि देखाइछ्छ याहा थरे ।
से अमृत गति दिअ प्राणपति जय जगदीश हरे ।।
चंद्रभागा सोर घेन नमस्कार निअ सोते निज अंगे ।
बहि मातृस्नेह सिशाअ ए देह अतळ उदधि संगे ।।
गाइ एहिपरि कहि हरि हरि डेइँला से नदी जळे ।
नरहिला तार चिह्न कि आकार गला महासिंधु तळे ।।
आर दिन रवि उइँण चुंबिले संपूर्ण मंदिर-चूळ ।
न जाणिले केहि किए से मुदिला कोणारके ए देउळ ॥
नदी गिरि बने सागर कानने मिशिगला हाडमांस ।
धर्मपद नाम काळसिंधु कला बिस्मृति गरभे ग्रास ॥
लुचि रहे नाहिँ सत्य चिर दिन काळे हुए ता बिवृति ।
नाहिँ धर्मपद भांगिछि देउळ अछि एवे जनश्रुति ॥

पंडित नीलकंठ दास

रामचंडीरे राति

कि कराळ आज रजनी बहे झंझा पवन ।
तारा न दिशइ आकाशे शुभे घन गर्जन ॥
मुषळ धारारे झटिका दिए कचाडि केबे ।
शोइ पडिछ्छ त बापा हे जाणु न थिव लवे ॥
आजि ये. कुआँर पुनिअँ केते सुख शरधा ।
माआ भउणीक आदर नव बसन पिंधा ॥
लुगारे हळदि लगाइ चाहिँ थिबे जननी ।
पिठा पणा खाउ नथिबे सुखे आजि भगिनी ।।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

पवन झंकारे शुणु से शिबे डाक तुंभर ।
पलके पलके चमकि हेउथिबे कातर ॥
फाटि याउथिब जाहाज तांक हृद सागरे ।
निराशारे आशा चमके थिबे सेह जागरे ॥
जननीर गुरु बेदना भगिनीर बिषाद ।
सुमरि सपने चमकि भांगि यिबटि निद ॥
शुअ शुअ धन आरामे शोइथाअ रे शिशु ।
पथ श्रम करि आसिछ श्रमे बिराम मिशु ॥

(कोणार्के काव्य—प्रथम भाग)

—*—

पंडित गोदाबरीश मिश्र

उद्‌बोधन

तुंग शिखरी चूळ — कुंज कानन माळ
पुण्य जळधि जळ खेळिउठु सघने ॥
प्राची गगन शिरे — भासि कनक नीरे
आसु तपन उइँ ए उत्कळ भुवने ॥ घोषा ॥

आजि कि सरग छबि रागे रुचिर
कि नव जीबने भरा कोटि अंतर ।
किबा ए संपद शिरी — हृदे हृदे आसे पूरि
कि पुलक धारा खेळि आसे कोटि बदने ॥ १

बिमळ चिळिका बक्षे उठु से बीचि ।
उठु महोदधि बारि अमृत सिंचि ।
महेन्द्र श्यामळ चूळे — पूत चित्रोत्पळा नीरे
ढाळु से संपद शिरी ग्राम बिल कानने ॥ २

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

धन्य ए उत्कळ किवा सरग भूमि
बिल-बन-शैळ सिंधु सुषमा घेनि ।
जनमि ए देशे आजि ए जननी कोळे राजि
धन्य कोटि नर नारी मननर जीबने ॥ ३

तो भळि जननी थाउ जनम भूमि
कि दुःख ए ओडिशार पराणे पुणि ।
मोहन मूरति सेहि दिअ गो मा आजि फेइ
कोटिए संतान तोर प्रणमु ए चरणे ॥ ४

—*—

कालिजाइ

(राग—बंगळा श्री)

भल करि नाआ बुहा रे नाउरि झिअकु माडुछि डर ।
गडे गड लोके चाहिँ बसिथिबे झिअ यिब शाशु घर ॥
भल करि नाआ बाहुछि नाउरि तलेइ करिछि ठिआ ।
मामु भणजार कोणरु आसे लो बहि सुलु सुलु वाआ ॥
दिन दश घडि हेलाणिटि आसि खरा मारे चाइँ चाइँ ।
पाँच कोश बाट यिबाकु अछि लो वेळ त पाइब नाहिँ ॥
नाउरि बापुडा कात मारुअछि उदासे गाउछि गीत ।
नाआ उडियाए पवन प्राये लो जणा न पडइ बाट ॥
माआ भउणींकु साथी संगातंकु झिअ ये. आसिछि छाडि ।
नाआरे बसि से तांकरि कथा लो हुए निरंतर भाळि ॥
माआ भउणीए साथी संगात से रहिले दूरस्थे काहिँ ?
परते नोहुछि आउ कि दिने लो फेरि से देखिब याइ ।
नाआ चालिअछि पवन समाने मुहूर्त्ते न हुए थय ।
चिह्ना ये.ते तार बग पाहाड लो अनाइ देखंता झिअ ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

घंटशिळा शिखे चाहिँ से कहंता दिश रे मेलाणि मोते ।
भेट आउ दिने नोहिब जीवने याउछि घोर बनस्ते ॥
साळिआ नई ता निति दिन साथि सुखे बुलुथाए कूळे ।
बेळे सुए तार स्नाह्यान सारि लो हसि लेउटइ घरे ॥
कालि अंधारु से चालि ये. अइला देखि त नाइँटि ताकु ।
भारि ख्यात नई नाआँटि तार लो तिनि कोडि कोशे डाकु ॥
माआ भगबती पीठ कूळे तार जगत्र तारिणि नाआँ ।
डाकि कहिथांता नोहिला आउ लो साहा मो थिबुटि माआ ॥
नाआ आसि हेला दंडक भितरे चढेइहगार तळे ।
घंटशिळा आउ न दिशे लुचि लो रहिला साळिआ दूरे ॥
चाहुँ चाहुँ आसि पहँचिला नाआ मझि चिलिकारे पुणि ।
झिअर आखिरु झरइ लुह लो तिति पिंधा छिट कानि ।।
पारिकुद बोलि राइज पुणि से चिलिका मझिरे काहिँ ।
केमंते मूर्च्छिल झिअकु बापा हे एते दूरे देबा पाइँ ।।
वर बोलि यार धराइल हात कि तार देखिल शिरी ।
रूप बिद्या आउ बिभव बापा हे तिह्निऐ तिह्निकि बळि ।।
महीमंड़ळे त थिब नाहिँ जणे मो भळि निरेख जन ।
ए महा समुद्र मझिरे बापा हे केमंते बंचिबि दिन ।।
एडे हीनमान करिबाकु ये.बे मनरे थिला बिचार ।
एंतुडिशाळेटि किपाइँ बापा हे तंटि चिपि न मारिल ॥
झिअकु निश्चिते देइछु पठाइ बनस्तकु जाणु जाणु ।
कपाळ आदरि याउछि बोउ लो पासोरि न देबु मनु ॥
नाआ उड़ि याए पबन समाने नाहिँ क्षणे हुए थय ।
झिअ बसिअछि तुनिटि होइ लो नेत्रु बहियाए लुह ।।
नाआ चालिअछि पवन समाने न माने पाणि पथर ।
तुनि हुअ जाइ न कांद आउ लो एइ दिशिलाणि गड़ ।।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

एते बोलि बापा झिअर आखिरु देले लुहधार पोछि ।
येते परि ताकु बुझांति बसि लो जाइ बुझुनाहि किछि ॥

भल करि नाआ बुहा रे नाउरि झिअकु माडुछि डर ।
एते काळे जाइ नाआरे बसुचि यिब बोलि शाशुघर ।

भल करि नाआ बाहुछि नाउरि भिडि मारुअछि कात ।
सुलु सुलु बाआ बोहि आसुछि लो जगा न पडइ बाट ॥

नाआ भासि आसि दंडक भितरे गंडरे पडिला याइ ।
थिर होइ गला नाउरि ठिआ लो कात आउ पाउ नाहिँ ॥

भालेरि शिखरु कळा मेघ खंडे उठेइ आसिला काहुँ ।
लुचिगले तहिँ सूर्य देवता लो खरा न पडइ आउ ॥

माडि आसुअछि अति बेगे मेघ जटिआ नासिकि धरि ।
बरषा बतासि गरजु अछि लो दिन दिशे राति परि ॥

नाआ पडिअछि मझि गंडे आसि बुडियिब हाती छति ।
टळमळ होइ टळुछि नाआ लो नाउरिर बड भीति ॥

भल करि बेगे बुहा रे नाउरि नाआ हेला टळमळ ।
बरषा बतासि गरजि आसुछि झिअकु माडुछि डर ॥

बरषा बतासि गरजि आसिला नाआ नुहेँ थय करि ।
एका पबनके पाहाडे याइ लो पिटि होइगला चूरि ॥

मेघ चालिगल मेघर बाटे से बतासि होइला थिर ।
पडिगला खरा निमळ होइ लो पाणि हुए कळ कळ ॥

बापा पचारंति खोजि नाउरि रे झिअ मोर गला काहिँ ?
बुजि आखि ठिआ नाउरि निजे लो तुंड ता फिटइ नाहिँ ॥

चिलिका पाणिरे दोळुछि लहरी बोहुछि शीतळ बाआ ।
सोरि सोरि खरा ढळि याउछि लो खेळुछि सहस्र नाआ ॥

पाहाड चढेइ उडुअछि राबि मने कि अछि ता धोका ?
पाणितळे छाइ बुलि याउछि लो जाइटि न अछि एका ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

चारा फेरिआसि बोउंक आगरे कथा न पारंति कहि ।
आरदिन पुणि नाउरि गला लो नाआ सेहि बाटे बाहि ॥
केतेश बरष हेलाणि से दिनु गणि कि कहिब किए ?
नाहिँ किछि आउ से काळ कथा लो जाइ रहिअछि जीए ॥
बालुगाआँ कूळु नाआ गला बेळे पारिकुद गड़ठाकु ।
पाहाड समीपे मणिष तुंड लो न शुणायाए काहाकु ॥
बरषा बतासि चिलिकारे आउ हुए नाहिँ तेडे भळि ।
आपदे बिपदे जणा पडइ लो साहा किए थिला परि ॥
नाउरि केउट पाहाड बाटे से नाआ नेइ गला बेळे ।
कामे आपणार शुभ मनासि लो जुहार करइ थरे ॥
तोळिले पाहाड शिखे काळे लोके सुंदर देउळ टए ।
से देउळे अबा रहिब याइ लो चिलिका मझिरे किए ?
सूर्य बुडिगले निशबद ये.बे हुए सबु संजबेळे ।
एका होइ जाइ लोके कहंति लो बुलु ये. थाए पाहाडे ॥
नेत्र बहुथाए लुह दुइधार शुखि याइथाए मुहँ ।
हेले ठारि हात कांदि काहाकु लो निबर्त्ताइ करे थय ॥
काळिजाइ बड़ प्रत्यक्ष देबता कोटि कोटि दंडबत ।
पाहाडर नाआँ राइजे ख्यात लो काळिजाइ परबत ॥

—*—

लक्ष्मीकांत महापात्र

उत्कळ जननी वंदना

बंदे उत्कळ जननी

चारु हासमयि चारु भासमयि जननी जननी जननी ॥
पूत पयोनिधि धौत शरीरा ताळ तमाळ सुशोभित तीरा ।
शुभ्र तटिनी तट शीतळ समीरा जननी जननी जननी ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

घनघन बन भूमि राजित अंगे नील भूधर माळा शोभित रंगे ।
कळ कळ मुखरित चारु बिहंगे जननी जननी जननी ॥
सुंदर शाळी सुशोभित क्षेत्रा ज्ञान बिज्ञान प्रदर्शित नेत्रा ।
योगी ऋषिगण उटज पवित्रा जननी जननी जननी ॥
सुंदर मंदिर मंडित देशा चारु कळामयी शोभित बेशा ।
पुण्य तीर्थचय पुण्य प्रदेशा जननी जननी जननी ॥

—*—

गोदावरीश महापात्र

एइ ओडिशा भूइँ

महानदीर काकर पाणि बरगड़रे माडे
गछरे फळे फळ ।
तुमर आमर होइले साथी आउ कि डर माडे
बढिब सिना वळ ॥

केउँझरर पाहाड़ तळे रहिछि सुना खणि
खोजिब चाल किए ।
आम ओडिशा माटिरे अछि अष्ट रत्न मणि
आमे ताहारि पुए ॥

करापुटरे फुटिले फुल बारिपदाकु बासे
जाणिछ किए भाइ ?
हीराकुदर बिजुळि आसि घर आलुइ दिशे
एइ ओडिशा भूइँ ॥

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

बलभद्र देब

सहधर्मिणीर उक्ति

पुंसंक सहधर्मिणी अटंति नारीए ।
समाजर अर्द्ध अंग जाणंति सभिए ॥

सबु देशे सबु रूपे शयने भोजने ।
शुभकर्म अनुष्ठाने धर्म उपार्जने ॥

सबु कार्ये सदाबेळे अछंति नारीए ।
गृहाश्रमे बानप्रस्थे रण प्राङ्गणरे ॥

शुभाशुभ बिधायिनी पुरुष मानंक ।
संख्यारे पुरुषठारु अटंति अधिक ॥

पुरुषंक उन्नतिरे समाज येतिकि ।
उठिब नारी उन्नति लोडिब सेतिकि ॥

एका चक्र योगे यथा न चळइ गाडि ।
पुंस उन्नतिरे एका न हेब दउडि ॥

येणु आंभेमाने समभाग समाजर ।
चंद्र लागि सिना शोभा बढइ रातर ॥

समाज उन्नति लागि येबे हेब छिडा ।
आंभर उन्नति संगे संगे हेब लोडा ॥

एकाकी पुरुष जाति समाज नुहंति ।
नारीमाने सदा तहिँ पाशे उभा हंति ॥

उठिबाकु एका याहा करुछ प्रयास ।
न हेब सफळ बृथा हेब से प्रयास ॥

नारींकु संगरे घेनि एणु नरमाने ।
जाणिबा पाइँ कि चेष्टा कर एकमने ॥

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

वैकुंठनाथ पट्टनायक

मूक भगवान

जीबनर यज्ञे यहिँ दीन अकिंचन ।
लभंति आहुति तहिँ पारिछ आसन ।

हे दरिद्र सखा ! निखिळर राजेश्वर ।
करिबाकु ए जीबन सुंदर अमर ॥

बरि नेइअछ आपे दैन्य निर्यातन ।
सहस्र लांछना भोग क्षत अनशन ॥

करिअछ शुभ्र देह शोणित आप्लुत ।
मानब गरळ बसि करुछ अमृत ॥

अश्रु अंतराळु तहिँ फुटाउछ हास ।
निराश अंधारु तब आलोक प्रकाश ॥

प्रभंजन झंजा मेळे हस तुमे शांति ।
मृत जीबनर भस्मे अरबिंद कांति ॥

निखिळ बिश्वर पाप भारे निष्पेषित ।
मंदहासे गाउअछ अमर संगीत ॥

गाउछ दरिद्र पुरे निखिळर व्यथा ।
भ्रांत ए मानब लागि एते हिँ ममता ॥

नयन युगळु बहि याए बारि धारा ।
दिनु दिन बढे येते जीबनर भारा ॥

सभ्यतार काळसर्प बिषे होइ धारि ।
पडे नाहिँ तुम व्यथा जीबने काहारि ॥

तुम अश्रु योगे हुए कुळिश तरळ ।
मूक परबतुँ फाटिपडे अश्रु जळ ॥

हे मूक पाषाण प्रभु ! चिर अबिचळ ।
हे लांछित निष्पेषित हे शिब मंगळ ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

तुमर शोणित अश्रु, दीन कवि प्राण ।
परशिछि कि अ देशे गाइबाकु गान ?
नत शिरे श्रीपयरे मागे आजि भिक्षा ।
दिअ दीन बेश मोते दरिद्रर भिक्षा ॥

--*--

अन्नदाशंकर राय

यौबन

यउबन गले थरे आउ आसेना ।
बृथा बिधुर पराण झुरे बासना ॥
फुल फुटे फुल झडे पुणि फुटे से ।
पूरनिमा शशी बुड़े पुणि उठे से ॥
बरषके थरे आसे मधु चइत ।
बिरहिणी धरणीर प्राण दइत ॥
मातर न आसे फेरि यउबन गो ।
बाहुडइ नाहिँ गोपे गोपधन गो ॥
न फेरइ थर थर चोरा चाहाणि ।
न फेरइ छन छन मन काहाणी ॥
परथम प्रणय गो शरम रंगा ।
बिरह दीर्घ निश्वास मरम भंगा ॥
लुचकाळि खेळे भवे सबु सुषमा ।
हात धराधरि नाचे आलोक अमा ॥
जगते हजे ना किछि हजे जीवने ।
बाहारे बेदना नाहिँ बेदना मने ॥

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

अपर्णा देवी

मागुणि

प्रभो ! मागुणि मातर एतिकि ।
अटळ पराणे तुमरि चरणे
रखि पारथिवि मतिकि ॥

बिपद बिह्वळ ब्याकुळ हृदये
सान्त्वना पछके न दिअ सदये ।
नुआँइ ए मथा सहिबि सबु ता
न भजि ये.परि भीतिकि ॥

गुरु ब्यथा भरा ब्यथित अंतरे
आश्वासना पछे न दिअटि थरे ।
प्रसन्न बदने सहि ता ये.सने
सुमरिबि कर्म गतिकि ॥

अक्षम होइले कर्त्तव्य पाळने
सहाय नोहिब पछे अकिंचने ।
बहिबि ये.सने से भार यतने
प्राणपणे धरि धृतिकि ॥

भव माया मोहे हेले प्रतारित
हुए पछे तव आश्रयु बंचित ।
क्षूण्ण नोहि क्षणे से सबु ये.सने
सहिबि आदरि क्षतिकि ॥

दुःखे फुल्ल मुखे सुखे नम्र शिरे
मान अपमाने चित्त धीरस्थिरे ।
यापिबि ये.परि जीबन सुमरि
तुमरि महिमा शक्तिकि ॥

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

विश्वनाथ बाबा

प्रार्थना

दया सागर हे ! मोर प्रार्थना एतिकि ।
तव नाम प्रेमे रहु सदा मन न याउ अन्य रीतिकि ॥ घोषा ॥
पूर्व बासनारे कर्म बिभागरे धरि धर्म निकितिकि ।
माया कळेबर अनित्य संसार जनम देल तहिँकि ॥ १
अबिळंबे मोते कृपा करि चित्ते देखाअ ज्ञान गतिकि ।
नोहिले अज्ञान कबळित करि छंदिब काळ फाशिकि ॥ २
ब्रह्म भगतिरे चित्त रहु धीरे ये मते प्राप्त शांतिकि ।
जाग्रत स्वप्नरे सुषुप्तावस्थारे रसिबि प्रेम भक्तिकि ॥ ३
पंच बिषयकु श्रोहा करिबाकु न दिअ दुष्ट मतिकि ।
तुंभे सर्बेश्वर प्रभु अणाकार खंड दुःख दुर्गतिकि ॥ ४
पंच कोष मध्ये आच्छादित होइ भरसा तव गीतिकि ।
साधु संग मेळे रहि नित्य भाळे जणाण पाद कतिकि ॥ ५

—*—

गोलोक चंद्र प्रधान

कुरुक्षेत्र

घेन कुरुक्षेत्र बेभार भारतरे सुमने ।
गाइछंति व्यास-सारळा सारळार अर्चने ॥
क्षेत्रराजंकर मुकुट कूट सेठारे नाश ।
तीर्थ राजमणि सुमन मन करंति तोष ॥

× × × ×

यहिँ भीम गदा प्रहार हार करि उरुरे ।
पडिले कौरव नृपति परा पराभवरे ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

रात्रे रक्तनदी संतरि तरिगला बहन ।
दुर्योधन, हेला सहाय हाय ! लक्ष्मणसेन ॥
द्वारकारु आसि मोहन मोह नरक हरि ।
ये स्थाने आराध्या राधांकु थिले दर्शन करि ॥
यहिँ कहि राधा माधवे धबे गोपकु नेले ।
गरबकु सत्यभामार मारपिता गंजिले ॥
भरतिआ गला उद्धरि धरि लाबण्य मूर्त्ति ।
भक्त जनंकर गमन मन यहि तृपति ॥

× × × +

तहिँ थिले रहि भूनाथ नाथ सुशीळा रसे ।
बीर चन्द्रध्वज स्वनाम नाम अबनी घोषे ॥
कुशळ रंजने प्रकृति प्रकृतिए सेबंति ।
बिज्ञानी शूरंक आदर दर पर लभंति ॥
न गमंति केहि बिदेशी देशे नाहिँ तस्कर ।
पूरित सकळ बिभब भव मध्यरे सार ॥
सउध मानरे से पुरी पूरि परमा शोभा ।
रतने राजंति सदळे दळे अळका प्रभा ॥
नागरी बिळास सह से हसे अमराबती ।
देबखात परा सरसी रसि हंसे खेळंति ॥

× × × ×

पतिबरतांक मूरति रति निंदइ हेळे ।
सुषमा लहरी हरिणी इक्षणरे बिहरे ॥
सुशृंखळे राज्य शासित शीतकरे ये सन ।
धरित्रीरे शांति बिराजे राजे शांति तेसन ॥

(इंदुरेखा काव्य—द्वितीय छांद)

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

चिंतामणि महांति

किए तुंभे चिह्निछ कि आपणाकु आपे

महातीर्थ महास्वर्ग उत्कळ प्रदेश ।
विहरंति सदा यहिँ हळी हृषीकेश ।
जन्मिले या अंके तुंभ बापे गोसँ बापे ।
किए तुंभे चिह्निछ कि आपणाकु आपे ॥ १

सुधा कल्प पुष्टिकर यार जळबायु,
प्रवर्द्धन करे नित्य जीब परमायु ।
एकाळे से अबनत तीव्र ब्रह्मशापे,
किए तुंभे चिह्निछ कि आपणाकु आपे ॥ २

निपट ओडिआ पूर्ब-पुरुषे तुंभर,
आकुमारी हिमाळय होइ थरहर ।
कंपि उठुथिला दिने याहांक प्रतापे,
किए तुंभे चिह्निछ कि आपणाकु आपे ॥ ३

पुण्यपूत देवस्तुत स्वाधीनता धात्री,
चिररत्न प्रसविनी रत्नोज्ज्वळ गात्री ।
संकुचित सेहि देश प्रतिवेशी चापे,
किए तुंभे चिह्निछ कि आपणाकु आपे ॥ ४

ये. देशर यशोगीति भाषा अतिक्रमे,
जगत या पादमूळे नमे ससंभ्रमे ।
जन्मिल से देशे तुंभे तार केउँ पापे,
किए तुंभे चिन्हिछ कि आपणाकु आपे ॥ ५

ज्ञान धर्म बितरणे सदा ये. अकुंठ,
शास्त्रीय अभिधा यार मर्त्य बइकुंठ ।
संतापित एबे हाय अभाब संतापे,
किए तुंभे चिन्हिछ कि आपणाकु आपे ॥ ६

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

स्कंद कल्प उत्कळीय बीर जणे जणे,
न करंति भय रणे अथवा मरणे ।
न मारि अरि या खंडा फेरे नाहिँ खापे,
किए तुंभे चिन्हिछ कि आपणाकु आपे ॥ ७

बीरत्वर बरभूषा ये.उँ बीरमाने,
न थिला असाध्य शब्द यांक अभिधाने ।
तांकरि वंशज मत्त आळस्य आळापे,
किए तुंभे चिह्निछ कि आपणाकु आपे ॥ ८

थिले देश दास तुंभ पितामह गण,
मात्र तुंभ मोह मदे तंद्रिळ नयन ।
कह तांक समकच्छ तुंभे केउँ मापे,
किए तुंभे चिन्हिछ कि आपणाकु आपे ॥ ६

ताहांकर रोष दीप्त आरक्त नयन,
करुथिला शत्रु पिंड जीबन शोषण ।
मातिअछ हाय तुंभे बिफळ प्रळापे,
किए तुंभे चिन्हिछ कि आपणाकु आपे ॥ १०

मुँ किए पासोरि मत्त मुँत्वरे केबळ,
कर्म तेजि कपाळकु करंति संबळ ।
चिन्हि नाहँ छि छि निज पण गोसँ बापे,
कि रूपे चिन्हिब भला आपणाकु आपे ॥ ११

निबिड संध्याकु भ्रमे मणुअछ उषा,
अनुकर पर भाषा पर बेशभूषा ।
मणुअछ हास्यरोळ व्याकुळ बिळापे,
केमंते चिन्हिब हाय आपणाकु आपे ॥ १२

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

बांछानिधि महांति

सहयोग

करम तरुटि खिना मुकुता धरे ।
यतन मरुभूइँरु मुकुता भरे ॥

मिळन एकता लता चारु बल्लरी ।
सहजे सहयोग त सुमन शिरी ॥

यउथ बेभार मंजु कुंज कानन ।
आतुर कपक मन नयन हरे ॥

बिळास बासना अबा उदासी मन ।
समाज बनज बने तुषार घन ॥

कपट लंपट रीति चातुरी चोरि ।
समबाय नीति घाती पराणे मारे ॥

आजि ए मिळन दिने सहयोगीर ।
सहयोगी गुरु मुखुँ शुणिब गिर ॥

शुणि से गिर करमे लागिब याइ ।
पल्लीर हित साधने पराण भरे ॥

—*—

ड० मायाधर मानसिंह

बापुजी

मस्तके मोर नित्य पडु हे बापुजी तमर चरण धूळि ।
धन्य हेउ ए क्लिन्न अंग पुण्ये यिब मो पराण पूरि ॥

देह खालि यार सत्य, पुण्य, करुणा मैत्री साधना बहे ।
तार पदरेणु केबळ पथर हीन मृत्तिका नुहेँ त नुहेँ ॥

से रेणु परशे बक्षे मोहर सत्य कुसुम उठिब फुटि ।
युग-युगांत भ्रांति चित्तु मोहर पलके यिब हे तुटि ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

इतिहासे ये.हु जैत्र केतन उडाइले नर रक्त ढाळि ।
आजि अहिंस समर बिजये ह्रदय तांक होइब धारि ॥
तब रणमुखे नाहिं उठे काहिं क्रंदन कोटि अबळा मुखे ।
तथापि हे बीर समर जिणिछ मैत्री फुटाइ बइरी बुके ॥
बार बार करि जिणिल युद्ध हारिले सकळ शत्रु तब ।
निरीह क्षुद्र तपस्वी हे इतिहासे परा ए अभिनव ॥
देशे देशे ये.ते लांछित पददळित मळिन अपमानित ।
तम योगु बहु यु.ग परे हेला महत तांक उत्तोळित ॥
आपणा आलोके आलोकित आजि थिले ये.हु चिर अंधकारे ।
यु.ग यु.ग भीत बुके देल तमे साहस रोधने अत्याचारे ॥
नर देह हीन मृत्तिका नुहें नारायण तार जीबन रस ।
महा चेतनार अंश से एक बिकाश पाइँकि शरीर बश ॥
खोलिले कपाट उठिबे देवता पराण उठिब पुण्ये पूरि ।
अमृत सेहु चिह्नि निजरे न डरिब कार कमाण गुळि ॥
एतत्त्व आजि जगते बापुजि ! शिखाइल पुणि नूतन करि ।
नत दळितर अंतरे आजि नूतन जीबन उठइ थरि ॥
ये. कथा शुणाअ पयगंबर से ये. सनातन नित्य बाणी ।
महा काळ भाले मानब पाइँक बिधाता रखिछि से बाणी हाणि ॥
धरा माटि लोभे नर भुलि याए नित्य काळर सत्य कथा ।
यु.गे यु.गे तेणु बुद्ध रसुल आसि ओठ धरि उठाए मथा ॥
बुद्ध ख्रीष्ट कृष्ण निमाइँ यु.गे यु.गे देले चाचि ये दान ।
सेहि बितरण पाइँ त हे योगि तम जीबनरे ए अभियान ॥
मुक्त पुरुष बद्ध पाइँकि लुहा कारागारे बंदी हेल ।
लांछित पाइँ कोमळ अंगे हसि हसि पद आघात नेल ।

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

कालिंदी चरण पाणिग्राही

छुरिटिए लोड़ा

केते काळ आउ चळिबि एसन भाबे ।
साहा साथी हीन चाळक बिहीन नाबे ?
चउदिगे चाहिँ न दिशइ थळकूळ ।
काहिँ शेष काहिँ ए पथर आदि मूळ ?
दुहिँलि रक्त कलि ये.ते देहपात ।
देबता लागि मुँ बढाइलि ये.बे हात ॥
मुठाइलि याहा पुलकित मने भाळि ।
फिटाइ चाहिँलि शून्य आकाश खालि !
हे देवता ! बोलि नुआँइलि ये.ते मथा ।
पाषाणे बाजि से लभिला दारुण व्यथा ॥
बिचारे रखिबा पाइँ देबतार टेक ।
छुरिटाए लोडा काटिबाकु निज बेक !
निबिड निराशे देबता पाखरु फेरि ।
खोजिलि काहार बजाइबि तेबे भेरी ?
दुनिआँ भितरे साउँटिलि काहिँ के बा ।
मार्जिबि काहिँरे पूजिबि करिबि सेबा ॥
सृजिबि पुलक काहार पीरति गाइ ।
जोइबाकु एथि मात्र दिनक पाइँ ?
मणिष मणिष शुभिला दूररु डाक ।
दुनिआर ये.ते दळित पीडित याक ॥
स्पंदन सेहि पुलक परास रेखा ।
बंधुर पथे बंधु से मोर एका ॥
सेहि से देबता सेहि मोर आराधना ।
सकळ पुलक परासर सरजना ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

दूरे उभा होइ टेकिलि या लागि धूप।
पारुशे आसि त देखिलि अन्य रूप ॥

दळित पीडित मो तहुँ अधिक किए ?
मो तहुँ उष्म निःश्वास ढाळि दिए ॥

बुहाए मो तहुँ अधिक किए बा झाळ।
रुधिर काहार मो तहुँ तीव्र लाल ?

मणिष पाशरे बंधुता कले याइ।
सेहि छुरि लोडा निजकु रखिबा पाइँ ॥

पतने मोर त सुखी तुहेँ ये.हु मने।
तेसन बंधु न पाइलि काहिँ जणे !

सखा होइ जणे न मिळिला काहिँकि त।
सुख देखि मोर न जळइ यार चित्त ॥

तथापि हुए त पाइछि बंधु कोटि।
आजि याए ये.णु काटिनि केहि मो तोटि ॥

आजि याए ये.णु देह धरिअछि भबे।
मणिष जातिरु एहि दया पाइ लबे !

—*—

बीरकिशोर दास

बापुजी-प्रयाणे

कह लो यमुना कह तु किपरि सहिलु एभळि यातना।
देखिलु किपरि ए करुण छबि अतीत मोहर भावना ॥

बापुजीकि मोर तो कोळे शुआइ
जळंता अनळे देले गो जळाइ
कोटि कोटि नेत्रु बहिगला अश्रु,
नोहिला तो हृदे करुणा ॥ १

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

पाषाण कुमारी हेलु तु पाषाणी
लिभाइलु नाहिँ पकाइ तो पाणि
ता चिता पाउँस बोळि निज देहे
पूर्ण कलु प्राण बासना ।। २

देढ श बरषु हेब गो उपर
तो दिल्ली नगरी चाबि गंताघर
हजिथिला खोजि आणि देला किए
समुद्र से पाखु मागणा ॥ ३

निज मुक्ति लागि न थिले से योगी
बिश्व मुक्ति लागि हेला बइरागी
देश लोक हाँते शेष निश्वासटि
देइ कला शेष प्रार्थना ॥ ४

—*—

अनन्त पट्टनायक

उद्बोधनी

नवीन यु.गर तरुण जाग रे जाग बंधनहरा ।
बक्ष शोणिते लक्ष जीबने खेळाअ आलोक धारा ॥

छिन्न कर रे बंधन आजि क्रंदन हेउ शेष ।
लुप्त हेउ रे जाति उपजाति खंडित शत देश ।।
महा मानबर शंख-शबदे शमु रे दुःख ज्वाळा ॥ १

मरण दुआरे चरण अरपि गाअ रे अमर गान ।
पोछि दिअ आजि मानब शिररु बंचना अपमान ।
लंघि बनानी शैळ कानन चूर रे तिमिर कारा ॥ २

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

मरु पथे पथे निर्झर सृजि यात्रा कर हे कर
स्पंदन बहि अंतरु कोटि प्रदीप उच्चे धर
शंकित हेउ कंपित प्राणे चंद्र तपन तारा ।। ३

संधानी तव संधान पथे कंटक टेके शिर ।
सम्मुखे तव कुहेळि रूपर मोह ममतार नीर ।
भिन्न करि से तंद्रा परश हसाअ भुबन सारा ॥ ४

चिर अतीतर जीर्ण जीबन याप आहे भबिष्यत ।
चूर्ण करु रे स्पंदन तव पीडनार परवत ।
भांगि पडु आजि अर्गळ राजि घेन बिजयर माळा ।। ५

—*—

राधामोहन गडनायक

माटि

सकळे चाहिँले मान उच्चासन स्वाधिकार भोग
प्रथमे पाइले ये.बे स्रष्टार नियोग ।
सृष्टि परे,
अनंबर जणाइले सुप्रशांत स्वरे,
"बांछित आसन मोते हे बिधाता दिअ मोते आगे
निखिळ सृष्टिर ऊर्द्ध्व भागे ।"
अंशुमान दिबाकर कले आबेदन
मोहर बिहार लागि मिळु तेबे अनंत अंगन
एइ गगनर बक्ष
साधिबि मुँ तुंभर या लक्ष्य ।"
चंद्र निबेदिले "मोर सेइ अभिळाष
सेइ व्योमे दिअ मोते करिबि मो नैश अधिवास'

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

बारिद मागिले, मते दिअ एहि बर,
मते सूर्य-चंद्र जयी कर,
दिबारात्रि ये.बे उइँ
देखादेबि मुहिँ
सबिता शशांक ये.ह्ने रहिबे संत्रासे
अप्रकाशे ।”
प्रभंजन जणाइले प्रभु मते कर घनंजय
बज्र बिद्यूत् इरम्मद-मय
हेउ पछे घन,
बक्षे तार जगाइ कंपन
उडाइँबि ये.ह्ने तारे मोर इच्छामते ।
बिश्वपथे ।”
सम्राट निकटे ये.बे ये. चाहिँले याहा
चक्षुर पलकपाते से पाइले ताहा ।
तुमे किंतु मौनमयी आगो माटि, सेतेबेळे काहिँ
पद्टिए उच्चारिल नाहिँ ?
एडिदेइ सुबर्ण सुयोग
मागिनेल नाहिँ किछि संभ्रम संभोग ।
म्नबुरि चरण प्रांते पारिनेल मळिन आसन
ये.परि कातर अकिंचन ।
तुमर से नीरबता मौनिता सत्वर
परशिला खिआली से बिधातार गोपन अंतर
दृष्टि ढाळि प्रीति ढळ ढळ
जिज्ञासिले स्रष्टिर ईश्वर ।
“तुंभर कि नाहिँ किछि भिक्षा ?”
“तब इच्छा सेहि मोर दीक्षा ।”

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

"मोर इच्छा भयंकर अति
संभाळि कि पारिब धरति ?
सृजिबि ये. जीबजंतु तब बक्षपरे
निबास बिरचि सर्बे लीळा खेळा रचिबे सादरे,
सबु पाद भार
सहि पारिब त तब अंग सुकुमार ?
सृष्टिर मो श्रेष्ठ करि सृजिबि मनुष्य
दुर्द्दम दुर्द्धर्ष,
कृषिपाइँ कृष्टिपाइँ प्रति मुहूरत
बक्ष तब करिले बिक्षत,
सेतेबेळे बिचळित हेब नाहिँ जीबन संग्रामु ?"
"अचळा मुँ सर्बंसहा मुँ ।"
आउ थरे ढाळिदेइ अमिय चाहाणी
देहमय बोळिदेइ स्नेहमय पाणि ।
प्रकाशिले बिमुग्ध बचने,
"बिजयिनी आजि तुंभे ए बिश्व भुबने ।
सुंदरी कल्याणी,
नम्र होइ होइच बिराट आजि तुमे जगतर राणी ।"
चक्षुर निमिषे
ए कि हेला सारा सृष्टि देशे ।
उन्नत गगनपट प्रणमिले परम आदरे
ललाट लगाइ तळे तब पदतळे ।
संगे संगे प्रतापी तपन
तुमरि चरण प्रान्ते रश्मि-ताप कले बिकिरण
चारु चंद्रिका लेपने
रचिले चंदन चर्चा बिमळिन तब अपघने

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

चाहुँ चाहुँ प्रमत्त मुदिर
अभिषेक बढाइले ढालि धारा-नीर
प्रभंजन
सलिळ हिल्लोळे कले चामर व्यजन ।
सेबादास परि सर्बे चरणे तुमरि
सेबिले परमानंदे दिबस शर्बरी
उत्तोळिले मुग्ध जैत्र बाणी
"जय माटि, जगतर राणी"

—*—

बैष्णब महापात्र

पत्र-पुष्प-फळ

पत्र-पुष्प-फळ तिनि बिबदंति बसि ।
उद्भिद जगते जळ पबने प्रशंसि ।
ग्राम्ये बन्ये भेद तहिँ न रखि पबन ।
पचारइ एके एके फेराइ नयन ॥
बिबाद भिआइ तहिँ बोलइ कदळी ।
पत्र-पुष्प-फळे मोते किए यिब बळि ॥
पत्रे उत्तम भोजन, पुष्पे सुव्यंजन ।
देबप्रिय फळे चळे सुखे दीनजन ॥
मो पट्टे कुसुम मिशि लागे कृष्ण गळे ।
धन्य मो जीबन मुहिँ धन्य धरातळे ॥
नारीकेळ बोले मुहिँ धन्य ए जगते ।
मो फळे न थाए आशा काहार संतते ?
बाह्य मोर कदाकार अंतर निर्मळ ।
सुस्वादु सुरसे पूर्ण मोर कळेबर ॥
बिबाद भिआइ बोले सुमन मल्लीका ।
अटे मुँ जगते पुष्पराणी मतल्लिका ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

× × × ×

बुझाइ कहिले तहुँ पवन सकळे ।
तिनिगोटि उपकारी एहि मही तळे ॥
देख करे खर खर ताळर पतर ।
युग युगांतरु लेखा तहिँरे अक्षर ॥
पर उपकार पाइँ कार्पास सुमन ।
फुटिपडि नरलोके योगाए वसन ॥
अन्नमय पिंडगोटि बंधा धान्य फळे ।
तेणु ए तिनिहेँ धन्य सदा धरातळे ।
स्वार्थवश भाब अटे नीचतार मूळ ।
परार्थ जीबन अटे भवे अप्रतुळ ॥

—*—

सच्चिदानंद राउतराय

(छोट मोर गाआँटि)

छोट मोर गाआँटि,
भूगोळ पोथि पतरे पछे न थाउ तार नाआँटि ।
माटिर सेइ सरग मोर
सेइठि अछि मो षठीघर ।
जळित्र पुणि सेइठि शेषे
मोहरि चिता निआँटि ।
छोट मोर गाआँटि ॥ १

जनमि तार एंतुडि शाळे
बुलिछि केते ता तोटामाळे ।
पाँचटि मोर पंजरा काठि
(शेषे) सेइठि हेब डाहाटि ।
छोट मोर गाआँटि ॥ २

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

ताहारि जळ रकत होइ
शिरारे बहे ये.सन नई ।
निश्वासे मोर ताहारि बायु
चळाए प्राण नाहाटि ।
छोट मोर गाआँटि ॥ ३

ताहारि फुल शागुआ लता
कंठे मोर देला ये. कथा ।
आखिरे देला चाहाणी नूआ
(तार) फगुण उषा पाहाँति ।
छोट मोर गाआँटि ॥ ४

झरणा तार कला ये. कबि
नयने देला रूपर छबि ।
बुहाइ देला सपन ढेउ
पथर बुके निहाति ।
छोट मोर गाआँटि ॥ ५

ताहारि लटा ताहारि बण
ता गाई गोठे मुरली स्वन ।
फसल कटा मधुर गान
सकळ मोर साहाटि ।
छोट मोर गाआँटि ॥ ६

आलुअ तार कि मनोहर
अंधकार ता ठारु भल ।
जीबन पथे सकळ तार
फिटाए नूआ राहाटि ।
छोट मोर गाआँटि ॥ ७

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

दुनिआ कणे चाखंडे थान
अति से छोट निहाति सान ।
तथापि भाळे छबिटि दूरु
थरे मुँ तार चाहाँति ।
छोट मोर गाआँटि ॥ ८

खुदर तार उदर तळे
केते ये, रथी जनम नेले ।
(केते) नाउँआ लोके अंइलें गले
आजि से सबु काहाँति ?
छोट मोर गाआँटि ॥ ९

पेटरे पेटे मामला बुद्धि
जनमि थिले हरि सुबुद्धि ।
साथिकु तांकर गोदर गोड
मंत्री छणि माहांति ।
छोट मोर गाआँटि ॥ १०

खंडिआ कांथ गाआँटा हेला
डिहरे नाचे बिलुआ पिला ।
उच्छन्न हेले आसाम गले
घरे त चाषी नाहाँति ।
छोट मोर गाआँटि ॥ ११

प्रतापशाळी सामंतराय
गाआँरे कले एमंत राय ।
देएणा भारे सकळे हाय
रेंगाम भूइँ धाआंति ।
छोट मोर गाआँटि ॥ १२

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

गाआँरे थिले कपिळ नंदे
चालिले भूइँ लसे ये. खंदे ।
सबु कथारे मुरबि साजि
हलाउथिबे बाहाटि ।
छोट मोर गाआँटि ॥ १३

सरबाकार अगाधु पंढ
गाधोइ सारि दिअंति दंड ।
पोषिले जणे शोषंति पणे
कलम काठि छुआँति ।
छोट मोर गाआँटि ॥ १४

चउकिदार गोबरा भोइ
चिलम टाणि रातिटा शोइ ।
सकाळु कहि बुलाइ देलि
चोरकु कालि भुआँटि ।
छोट मोर गाआँटि ॥ १५

आबर थिला जटिआ बुढी,
पिलाठुँ बड सबुरि खुडी ।
का घरे केते मूषार गाड
सबु ता जिभे थुआटि ।
छोट मोर गाआँटि ॥ १६

मुहँटा तार कातिरु दाढ
पणत कानि छुआँइ बाड ।
लगाइ कळि भुणिब हाड
डाकिब केते कुहाटि ।
छोट मोर गाआँटि ॥ १७

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

गाआँर पुणि बागुडि खेळे
केळुआ, निधि, अइँठा मेळे ।
केते के जीए केते के मरे
मरेना खालि काआटि ।
छोट मोर गाआँटि ॥ १८

गाँर शेषे एकला घरे
बउळ फुल येउँठि झरे ।
थिला ये. पुणि विधबा एक
बाळत तार छुआटि ।
छोट मोर गाआँटि ॥ १९

हबिष खाइ चउरा मूळे
निति से आसि प्रणति ढाळे ।
आकाश दीप होइ से जळे
भोकिला तार 'साहा' टि ।
छोट मोर गाआँटि ॥ २०

ए सबु कथा छबिटि परि
प्रबासे मने उठइ जळि ।
इच्छा हुए माटिरे तार
शिरटि थरे नुआंति ।
छोट मोर गाआँटि ॥ २१

—*—

रामकृष्ण नंद

आहे दयामय विश्वविहारी

आहे दयामय बिश्वविहारी ! घेन दया बहि मोर गुहारी ॥
जळ स्थळ बन गिरि आकाश । तुम लीळा सबुठारे प्रकाश ॥
तुमे शुभ बुद्धि परा शिखाअ । तुमे भल बाट परा देखाअ ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

मोर कामकु कराअ सरस । मोर मुखे दिअ चिर हरष ॥
तुम चरणरे मोर भकति । दिअ बिपदे साहस शकति ॥
कूट कपट स्वभाब याहार । ताकु दूरु मुँ करइ जुहार ॥
मोते न मिशाअ तांक साथिरे । सदा रख साधुजन कतिरे ॥
दया बिनय हेउ मो भूषण । काह्वा मने न दिए मुँ कषण ॥
दुःखी अरक्षित सेबा कारणे । बळ दिअ मोर कर चरणे ॥
सत कहिबाकु किआँ डरिबि । सत कहि पछे मळे मरिबि ॥
मोते एतिकि शिखाअ साइँ हे । मोर धन जन लोडा नाइँ हे ॥

—*—

भारतर निवेदन

शुण हे शत्रु शुण हे मित्र शुण हे भारतबासी ।
नब भारतर निवेदन पदे शुणियाअ थरे आसि ॥
नूआ नुहेँ ए ये, अति पुरातन महा भारतीय बाणी ।
युगे युगे याहा भ्रांत मानबे चेतना देइछि आणि ॥
बुद्ध अशोक शिखाइले येउँ उदार धर्म नीति ।
चिकागोर सभा मंडपे यार शुभिला बिजय गीति ॥
ए युगर महामानब गांधीं कहिगले पुणि थरे ।
सेहि मंत्रटि झंकारि उठे युगे युगे भारतरे ॥
बिश्व पितार संतान आमे गोटिए ये, परिबार ।
रुषिआ जापान चीन आमेरिका सबु एहि बसुधार ॥
लक्ष्य आमर शांति मैत्री सत्य आमर भाषा ।
स्वार्थ लागि ए दुनिआ दळिबु केबे करिनाहुँ आशा ॥
भारतर सेहि अमर बाणी हिंसारे नाहिँ जय ।
शांतिर पथ युद्ध नुहेँ से शक्तिर अपचय ॥
कोटि जनतार काने काने सेहि अमृत बाणी बाजि ।
हिमाळयठारु कुमारिका याए स्पंदन खेळे आजि ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

आस हे शत्रू आस हे मित्र आस मानब जाति ।
भारतर एहि तीर्थ भूमिरे मिळाअ छातिकि छाति ॥
आर्त्त आकुळ भाइ भउणीर लुह पोछिदिअ बीरे ।
फिंगि देइ से उदयान बोमा उर्मिळ बारिधिरे ॥
बिज्ञान देउ भोकीरे अन्न रुग्ण शरीरे बळ ।
अभाब दैन्य याउ अपसरि धरा हेउ निर्मळ ॥
जीबन पुष्प बिकसित हेउ मरीचिका याउ चालि ।
सबुज शोभार लहरी खेलाउ रुक्ष साहारा बालि ॥

—*—

कृष्णचंद्र त्रिपाठी

गोटिए पौष संध्या

आम गाँ दीना स्वाइँ लइँ लइँ काटुअछि धान ।
बेळेबेळे हिड़मुंडे बसुअछि क्लांति ये.बे आसे ।
मुंडरे बांधिछि ठेका हाते तार धरिअछि दाआ ।
बदने आनंदरेखा बेळेबेळे उठुअछि फुटि
बुकुर शोणित देइ करिछि से ए फसल गोटि ।
केमंते नाचिब नाइँ मन तार मोहन उल्लासे ।
मुंडे बोहि काठ गोछा दुइटि माइपि
याउछंति गृहे फेरि । झाळ गमगम
सर्बांगु याउछि झरि । केउँ गछ मूळे
काठगोछा थोइदेइ निअंति बिश्राम ।
सकाळु से खुद याउ खाइथले क'ण
एबे जळुथिब पेट । घरे गले याइ
रांधि बाढि खाइबे से । गाआँ मुहँ हेउ
टिकिए सांत्वना आसे । हाडभंगा काम करि करि

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

दिनमान बितियाए ! एमानंक परि
मणिषर मूल्य नाहिँ ए धरणी तळे ।
चाहाँ रे जगत चाहाँ
ए श्रमिक जीवनरे प्रतिबिंदु घर्म तळे तळे
पृथिवीर समस्त ऐश्वर्य ये.ते रहिछि संचित ।
हे जगत ! एमानंकु दिअ तुहि बिपुळ सम्मान ।
एमानंक पाइँ सिना पृथिवीरे सुनार फसल,
एमानंक पाइँ सिना पृथिवीर कंठे जागे गान ।

—*—

कुंजबिहारी दाश

झडर सहस्र पदध्वनि

माटिरे फळाए सुना
निजे सिए होइगला माटि
नडार कुडिआ तळे छाइ सम रहि
तुम पाइँ देइथिला गढि इटामाटि ।
बुकुर रकत जाळि तुमरि उद्याने
फुटाइला गोलापर कळि
देह ता अंगार सम
जाळि जाळि ग्रीषम हुताशे
तुमकु करिला शुद्ध सुना
झडि गला निजे होइ मळि ।
निजे होइ दिगंबर साजिला तुमर राजबेश
तुमकु निश्चित करि
चितारे से होइला निःशेष ।
निजे हेला अमाच्छाया
कळा कळा सुख शांति ढाळि

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

तुम घरे साजिला पूर्णिमा
जीबनर ये.ते समारोह
सबु सिए देला तुम जिमा ।
तुमरि सउधे भरि कुसुम सुबास
निजे सिए होइला दुर्गंध
निजे होइ छंदहीन
जीबने भरिला तुम छंद ।
लहुरु लहुणी काढि देला तुम हाते
झाडि झाडि आपणार देहे नेला ये.ते रोग
करिला कंटकाकीर्ण पथ तार
ये.तेक दुर्योग ।
स्वेदर सागरु तुमे लक्ष्मी नेल टाणि
निजे सिए होइगला मूक
तुमरि बीणारे भरि बाणी
नाहिँ तार शिळालिपि नाहिँ पदचिह्न
परिचय-हीन परिचय
बिस्मृतिर बेळा बालिपरे
बिलय गाइला तार जीबनर जय ।
ललाटर लिपि मानि
केबे आसि केबे पुणि
मिशिगला घन अंधकारे
भासिला बन्या जळे
देखाइ कंकाळ
ढळि बा पडिला पथधारे ।
भासिगला चिमिनिर धूआँ साथे
कळ त बुझिला नाहिँ भाषा

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

बिंदु बिंदु धूस भस्म सम
भाजिगला लक्ष लक्ष आशा ।
डाकि डाकि माटिकि से शेषे
देला उपहार
निजर सुद्दार
पारे नाहिँ रखि सेहु निजर सम्मान
दस्यु आगे छिडा हुए पद भांगि भांगि
स्वल्प धन लागि
से करिब ध्यान
भगवान !
अर्जिब से पुण्यराशि लभिबाकु स्वरग, बैकुंठ
पठाइछ यहिँ ताकु तुम जेल तुम फासिखुंट
एक हत्या अपराधे
लक्ष कोटि हत्याकारी परम सन्न्यासी
सौधे योग साधे ।
अश्रुर सागरे तेणु मरुभूमि धारे
जागिछि तोफान
पळातक दॆब, भगवान ।
पळातक अतीतर प्रेत
श्मशानर छाया
कुटचक्री इंद्रजाल माया
पळातक झरा पत्र सम
येते रोग व्याधि
मणिषर शिकारी समाधि ।
शुणिथिलि यहिँ दिने अत्याचारी
खड्गर झन्झनि
तहिँ शुणे नब युब अग्रदूत
झडर सहस्र पदध्वनि ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

गुरुप्रसाद महांति

आखिर कपोत मोर

आखिर कपोत मोर आकाशर इस्पात देहरे
बाधापाइ प्रतिदिन फेरिआसे एहि पृथिवीकु
ये.उँठारे तुमे कर प्रतिदिन बिजन प्रतीक्षा
जरा मृत्यु व्याधि पुणि जीबनर अथ बुझिबाकु ।
समुद्रर ढेउ सबु छोट छोट हात पापुलिरे
स्थबिर बालिर देह केबे दिए आउँषि आउँषि
मुँयाए बिव्रत होइ भेदि खरा द्विपहर तप्त धूसरता
मोर पितृपुरुषर स्मृति खोजि तुमर बिबर्ण देहरे—
तुमे कुह कथा कुह घास आउ पतरर गोपनीय कथा
घाटि वण जंगलर कथा ये.ते शिउळी शामुका आउ समुद्रर कथा-
बिषण्ण रातिरे छिन्न बउदरे बिवर्ग जहर
ए पारिरु भासियाए से पारिरे मरियिबा कथा—
चइत्रर जीर्ण देह ए बालिर छोट छोट भउँरी भितरे
ए पाखे से पाखे याए उड़ि उड़ि तुमे निअ साउँटि साउँटि,
तुमे पुणि भलपाअ तुमे पुणि हात धरि डाक
तुमर आत्मा बा काहिँ ? मो देह बा जीबंत केउँठि ?
मेघर इस्पात देह स्थिर पुणि बाधा पाए सेइठि तुमे मनर कपोत,
आखिर कपोत मोर फेरिआसे ये.तेबेळे आकाशर भ्रांति पारि होइ
तुमर देहरे एहि क्लांति आउ भोक शोष उत्तेजना खेद
आउ कोहर भितरे
मो देहर स्वप्न धरि बहियाए समयर नई,
निस्तब्ध दि'पहरे पत्रझडा शुभे नाहिँ शुभे नाहिँ खरार निःश्वास,
झाउँबण मिशियाए धूआँ होइ आकाश भितरे
मने मोर पडे नाहिँ केबे मोर आखिर कपोत
तुमर संधान दिने पाइथिला कटक बा उज्जयनी सहर प्रांतरे

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

वेणुधर राउत

आशाबरी

कुमुदबती संध्यार शांत अबतरणरे
तार नीळ वेपथुर अजस्र तरंगरे
फुटि उठुथिला आकाश अंगनरे असुमारि नक्षत्र कळि,—
सते यिमिति रूपार तोफा तोफा तरळ चंद्रमल्ली ;
आउ, ता'रि भितरे
चंद्रर तरासरे आह्लादिनी मोर बिशाखार समग्र स्मित बिभब ;
मोर मने हेला—हुएत एइ चिरंतन आनंदोत्सब ।

निर्जन जनतामय रातिसारा एकांत गोपनरे
तोळिलि अर्बुद फुल सेइ निभृत अंगनरे,
आउ, भाबिलि, ए फुलरे चिर सद्य स्तबक रचिबि
एबं सजाडिबि एइ अचळा पीनायतना उपर पृथिवी
—प्रीतिर कंदर अबा जैत्र रथे,
प्रतिटि आत्मारे आत्मांतरर अद्वैत संगम मनोरथे ।

किंतु हाय ! अकस्मात् आगंतुका, सूर्याभारे सुबर्णा उषारे
देखिलि से फुल सबु लज्जित ओ ब्याकुळ निराशारे
दबिगला बिंदु बिंदु प्रतिटि घासरे
अश्रुर आकीर्ण मुक्ता परि, कि बथारे ! काहार प्रासरे !!
बोध हुए उषा नुहेँ संध्यार नेळि नेळि बिस्मृति
मो काम्यक उपबन गढिदब प्राणे भरि
से फुलर सुरभित मधु आउ द्युति ।

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

चिंतामणि वेहेरा

शयतान पाइँ गोटिए स्तुति

मोर अस्थि पिंजरकु हातुडिर निर्मम प्रहारे चूर्ण करि
तार निर्यासरे सृष्टि करे मौन आत्मार ये. स्तब्ध संगीत
दुष्ट ग्रहर अधिबासी सेइ कुत्सित शिल्पी शयतानकु मोर प्रणाम ।

ये. शयतान मोर आखिर अश्रुकु बीभत्स आनंदरे सुरा भळि
पान करि
निर्लज उन्मादनारे मोर रक्ताक्त क्षत उपरे फुटाए कंटकित गोलाप
से शयतानर शिल्प चातुरीकु मोर धन्यबाद ।

ये. शयतान तार हिंस्र नखदंतरे मोर असहाय शरीरकु बिदीर्ण करि
मोहरि रक्तरे होरि खेळि उन्मत्त भावरे सृष्टि करे आकाशरे
इंद्रधनुर कबिता
से शयतानर कारिगरि मोर काम्य ।

निर्जीब क्रीडनक भळि ये. शयतान मोते हातरे धरि स्वर्ग नर्करे
नचाइ बुले
मोहरि स्वप्नरे सृष्टि करे आकाशर अगणित तारका
मोहरि प्रवृत्तिरे रचना करे अंतहीन पाताळर बिचित्र वर्णोत्सव
से शयतानकु मोर स्वागत ।
मोहरि करुण कातर निःश्वासरे ये. रंजित करे रात्रिर अनंत
गभीर रूप
मोर जीबंत शरीर उपरे रचना करे ये. श्मशानचारी शिब भळि
प्रळयर तांडब
सकळ अशुभर स्रष्टा सेइ शयतान मोर उपास्य ।
ये.उँ शयतान मोर सकळ स्नायुकु एकत्रित करि प्रस्तुत करे
तार बीणार तंत्री

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

मोते नीरब, करुण ओ निर्जीब करि खिआली भाबरे तोळे तार
बीणार झंकार
ये.उँ झंकाररे मूर्च्छनारे मुँ जन्म निए हिरण्मय सूर्य भळि गभीर
तामसी रात्रिर गर्भरु
सफळ हुए मोर रात्रिर तपस्या
से शयतान मोर सिद्धिदाता देवता
विचित्र काव्यर स्रष्टा — मोर निभृत आत्मार कारिगर।

—*—

विद्युत्प्रभा देवी

खद्योतिका

१ प्रदीप—

निरळस एक नीरव भावुक सरि
संध्यार एहि स्तिमित प्रदीप चाहेँ
क्षिप्त मानसे चिंता हृजिला परि
समीरणे शिखा शून्ये मिळाइ याए।

२ सिंधु—

किए कहिब ता अंतर तळे किबा दुःसह आवेग फुटे
यु.ग यु.ग धरि उन्माद सम काहिँकि पडे से काहिँकि उठे ?

३ झरा सेफाळि—

केउँ देवतार क्षणिक आशिष शुभ्र पाखुडा धरि
सुंदर एहि शरत सकाळे भूतळे पडिलु झरि ?

४ पुष्पिता लता—

पहिलि फुलटि धरि हसे नव प्रसूतिका लता
मुखे ता उठिछि फुटि अनुपम वात्सल्य ममता।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

५ प्रकृति—

दिवसे आवरु धोव पहरण नीळ छिट शाढी निशारे,
तापसीर वेशे केबे आसु केबे बासक सज्जा भूषारे ।

६ लीळा कंदुक—

दुइ हाते दुइ कंदुक घेनि खेळे प्रकृति बसि—
उषा करे धरे रक्तिम रवि प्रदोषर करे शशी ॥

७ षट् ऋतु—

रूपे निरुपमा छअटि भउणि गोटिए गरभुँ जात,
मृदु पाद पाते आसंति मरते धरि जणे आन हात ।

८ मेघ—

शून्य बिहग केउँ राइजर काउँरी मंत्र जाणे,
पक्ष्म मेलिले बिश्वे खेळइ कोटि भाव कोटि प्राणे ।

९ बिजुळि—

कळा काहा पाट शाढीर दीप्त कनक धडि से ?
किए कहे एहि चपळा हेव बरषा बधूर मेखळा
नभ बने अबलतिका घन तरुरे रहिछि जडि से
कळा काहा पाट शाढीर दीप्त कनक धडि से ?

१० बज्र—

केउँ क्रुद्ध दुर्बासार अभिशाप वाणी एइ शुभे
आतंक पडइ महामेरु ठारु तरुलता दुवे ।

११ इन्द्रधनु—

कुआडे केहि नाहिँ मेलाइ देला किए
आकाश पथ धारे रंग छताटिए ?
मुग्धे चाहुँ चाहुँ के पुणि देला बुजि
काहार छता किए न हेला तिळे बुझि ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

१२ कुआँ तारा—

सरग नईर पराची तुठरे प्रभात सिनान सारि ।
गृहे चळे उषा एइ पदुअँटि सरागे गभारे मारि ॥

१३ साधव बोहू—

ए लगने सते केउँ माआ तार भिअकु करिला बिदा ।
आखि पाउ नाहिँ दिग दिशु नाहिँ चाहिँले नयन सिधा ॥
पथे चाले बोहू सघन गगने गरजे अशनि भाट ।
थिर पाद पाते प्रिय भवने ता पहरि ए नालि पाट ॥

—*—

बिनोद चंद्र नायक

गोधूळिर गृध्र छाया

क्लांति पोछि नेबा पाइँ रात्रि लोडा
से रात्रिटि काहिँ
खइबुणा आकाशर भोटिदिआ अगणार
सोळर दीप शिखारे तीर्थयात्रा प्रपितामहर
पोथिपत्र चित्र परि
क्रमे निभियाए
एइ सबु क्लांति ना कि
पचन क्षयिष्णु सबु समाज भूमिर
भ्रांतिर प्रसूत ये ते संक्रामि असुख
शैलिपक आनुसंगरे संहत रक्तिम,
क्लेद ओ शुभ्रता नेइ
किताबर समर्थित सरळरे खिक एक समाधान पाइँ
दुरूह गूढ़ैषा !
तेणु नोळाच दूषित एइ आक्लिष्ट जीवन

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

क्लांति ना कि
अथच अंधारे ज्योतिकीट सम एक
बिश्रामर कांतिमय गौरीदीप रेखा
देखायाए नभे
समुद्र बळय परे गोधूळि गृध्रर
छाया चकित कि केउँ नाविक दूरबीणे
मनरे प्रत्यय आणे तट घन दारुचिनि बने
आश्वास ओ अबकाश बुणि बुणि आसे
अंचळु के प्रिय नारी एक—कोटि ब्रह्मांड सुंदरी।
रात्रि पाइँ ए क्रंदन क्लांति पाइँ ए क्रंदन
निरुपम बाचन रीतिकि
तथापि संबेग-हीन शब्दर कंकाळ
प्रांतर नक्षत्र नदी आकाशरु परित्यक्त
ए ये अपराध
क्षमा देइ पारिब कि बाढि देइ
अंधारर स्वाद अथबा अंधार।

—*—

गोपाल चंद्र मिश्र

अजंता

पाहाड पाहाड पथर ये उँठि मणिष करिछि चूना
पाहाड पथर मणिष हातरे होइछि कमळ सुना
पथर ये उँठि मणिष हातरे धरिछि देवता बेश
कहुछि मुँ कबि कहुछि से परा सुदूर प्रमिळा देश
उडि उडि याअ पाहाड़ पथर उड रे पथर उड
मणिष तो देहे ता हात बजाइ तोळिछि सपन गड़

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

उड रे पथर मणिष तोठारे लगाइ देइछि डेणा
उडिगला मोर अजंता बाटर पक्षी हेला बाटबणा ।
पथर देह त कठिण नुहइ लुहाठारु बळि लुहा
लुहार जउरे का हात रेखारे झरगा हेउछि बुहा
मेघर मयूर चितार तारका गोटि गोटि रेखा टाणि
हेम कमळर फरुआ भितरे पुराइ काकर पाणि
किब्रा टाणि देइ मरु बालुकारे, मुगुनि पथर चिता
नीळ कइँ फुल तनु चुमि चुमि मधुप लभइ व्यथा
पथर ये.उँठि मणिष हातरे पाइछि मणिष शिरी
डाकुछि मुँ कबि अजंता देहर पथर देहळि चिरि ।
पथर देहरे मथा पिटे एबे मणिष एकाकी बसि
शिउळि पातळ खसडा बाटरे पद तार याए खसि
मणिष मनर जागरण तळे रूपशिरी मागे खेळ
तूळी धरि परा यु.ग यु.ग धरि मणिष खोजुछि बेळ
लेखिबा पाइँकि पथर देहरे मणिष मनर छाइ
थकियाए बाहु थकियाए मन, बेळ नाहिँ बेळ नाहिँ
मणिष मनर एहि ये.उँ रूप राजधानी बाट हाट
आहुरि अधार घन गिरि तळे काट रे पथर काट ।

रमाकांत रथ

श्रीराधा

केहि छुइँ नाहुँ काहाकु पदे बि कथा कहि नाहुँ केहि।
किए से परते यित्र ये. एपरि सारा राति गला पाहि ॥
आगरु तमकु याहा जाणिथिलि तमे खालि ताहा नुहँ ।
तमे अशरीरी अथय मो पाखे सबु बेळे रहिथाअ ।
केते रूपे दिशु थाअ
मो दासानुदास केबे त केबे मो संहारकारी हुअ ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

तमे नीळ कइँ रंगर छुरी मते चिरि देइ याअ ।
चाहिँला बेळकु मुँ तुहँ तुमे हिँ रक्तरे बुडि थाअ ॥
आहा करु करु हसि हसि तमे मो बाट आगुळि बस ।
न चाहिँबि बोलि आखि बुजि देले हृदय भितरे दिश ।
न शुणिबि बोलि स्वर
कान रुन्धि देले तमे अभिळाष पालटि अथय कर ॥

रातिरे तुमकु मुँ हुइँ लि नाहिँ काळे छुइँ देबा परे ।
तमे येउँ पाणि येउँ पवन मुँ मिशि यिबि ता भितरे ॥
काळे जन्म जन्म तुमकु लोडिबा कर्मफळ सरियिब ।
काळे मो चेतना बाहारे तमर केउँ रूप रहि यिब ।
प्राण याउ प्राण रहु
पाइ न पाइबा न पाइ पाइबा दुःखसुख लागि थाउ ॥

—*—

ब्रजनाथ रथ

शिमुळी

बसंतर साम्राज्यरे
एते दुःख आसिला केउँठु ?
येउँ दुःख—
क्रूशबिद्ध यीशु सम
शिमुळीर फुल होइ फुटे
येउँ फुल—
रक्तस्रावी यंत्रणार
निर्म्मम दहने दग्ध होइ
आत्म दहनर दुःखे
लोहित स्वाक्षर रखे
आकाशर नीळ नीळ चारु चित्रपटे ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

निरोळा आकाश आउ
सीमाहीन ए स्तब्ध प्रांतर
लंबिअछि यहिँ दूर दिग्वळय याएँ
फगुणर फगु बोलि तहिँ
नीरबता कथा कहे
खालि कथा कहे ;
नीरबता पक्षी होइ उडे
आउ एहि पृथिबीर

अगणित मणिपर भिडे
ये.ते दुःख ये.ते अश्रु
मर्मांतिक ये.तेक बेदना
व्यथा दग्ध हृदयर भग्न पात्रे
संचित ए जीबनर ये.ते रक्त कणा ;
शिमुळीर फुल होइ
कंटकित सहस्र शाखारे
आकाशकु रक्ताप्लुत करे ;
शून्यताकु जणाए प्रार्थना
ए माटिर स्वप्न भंग—तारुण्यर निष्फळ कामना ॥

बसंतर साम्राज्यरे
अगणित दुःख यदि
कंटकित शिमुळीर फुल ;
शिमुळीर फुल हेउ
आकाशरे उद्दीपित
लक्ष लक्ष आशार मशाल ॥

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

सीताकांत महापात्र

संध्यागमे

डुइँ खाता पृष्ठा भरि फुटिथिला फुल,
रक्त आभा बिंचि बिंचि सादा कागज
आजि चारिपटे भर्त्ति घोडा आउ मणिष कुकुर
हाती आउ फुल् टन् पाहाड ओ सूर्य्यक जंगल
अंका बंका रेखा चित्र बहु मुहूर्त्तरे।
सबु याइ एवे खालि क्षीण दीप शिखाटिए।
आकाशर शून्यता बंदना करे,
कळा माटि रंगहीन पाणि ओ पबन
क्लांत बाटोइंक परि पछकु चाहिँले, खालि निज रक्त ढाळि,
रंग रंग कुनि कुनि पतररे काम एवे सरे
रक्तरे पुष्पित ऋतु, पछे रहे अंधकार दइनर सिडि ॥

—*—

यदुनाथ दाश महापात्र

समय ओ समुद्र

नीरबतार महासमुद्र भितरे
सबु ये मिति निश्चुप। माछमाने
पहँरिबा बंद करि स्थिर। शामुका गर्भर
रत्न सबु कदाकार अंगार बिंदु बा......
भूखंडर स्थळभाग समग्रर अंधार भग्नांश
आमर पिठिरे मारि गधछाप—
आगकु चालिचि। आखि बंद
समय एक भंड सन्न्यासी—समय एक
गणिकार रात्रि—पळातक छात्र परि

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

बरकोळि गछतळे नेइछि आश्रय ।
श्मशानर कौतूहळ—के मरिचि
किए से महात्मा —शीत रातिरे
निआँ जाळि शबदाह—मिश्र अनुभूति !
तथापि मणिष मरे—आगकु आगकु चाले
निष्ठुर समय । अभिज्ञ समुद्र बेळे बेळे
अभिनय करे सुंदर ओ भयंकर
लक्ष्मी आउ हळाहळ उभयटा ये.उँठारे मिळे ।
हे मोर उत्तर पुरुष ! समय ओ
समुद्रकु सावधान थिब, कारण
दुहेँ अबिश्वासी ।
शोषरे तंटि शुखिगले समुद्र
तृष्णा मेंटाए ना,
बचिबाकु चाहुँथिले
समय अपेक्षा करेना ।

—*—

रबींद्रनाथ सिंह

बंदीर भाबना

सूर्यर आजि देखा त नाहिँरे नाहिँ
भीम-गंभीरे मेघ फुलाइछि मुहँ,
चारिआडे आजि दुर्द्दिन कळा छाइ
केबे बा हसिब नालिआ सकाळ कुह ॥

सूर्य उदय आगरु अग्नि दाह
पूर्बाशा कूळे केबे देखादेब आहा !
आलोक मुकुरे केबे मणिषर मुहँ
केबे हसिदेब कुमारी-चंद्र-दाआ ?

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

केबे उडियिब बिहग-बरण माळा
संज-बधूर सीमंतरेखा पथे ?
भोर आकाशरे केबे बा शुक्रतारा
थर थर पादे, जीबनर संगीते—

उठिब गगने उषार कामिनी हसि
सद्य प्रसूति शिशु सूर्य ता' कोळे
केउँ दूत देब संबाद मोते आसि ?
आलोकर कबि भाळे मुँ बंदीशाळे ॥

बिषादर मेघ झिपि झिपि चारिदिगे
महाकाळ बसि पकाए दीर्घश्वास,
जनारण्यरे अबिरत भीति जागे
लघुचाप धरे सागरे रुद्रबेश ।

बर्षा सकाळे समुद्र मोडे कर
बेळाभूमि परे आखि मळे सागरिका,
बर्षाबिंदु आहरण चातकर
मळिन माटिरे बरषार बिभीषिका ।

कारार प्राचीरे ओदा डेणा झाड़ काक
दिबाबसानर संकेत दिए घडि,
दिनर देउळे रात्रिर शिळालेख
कळा ओठे मोर अर्द्धदग्ध बिडि—

थिले बि, निभिछि हठात् सेथिरु निआँ
धूसर पोषाके मंत्री रहिछि चाहिँ,
बळ नाहिँ आउ थिले बि त कोटि बाहा
बहुत पुरुष, पौरुष काहिँ काहिँ ?

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

टिकिए कथारे इस्पात गुळि ताते
बंधुक नळि भितरु मरण हसे,
प्रेत-पटुआर छुटे शमशान पथे
यार समाधान थिले बि मणिष हाते ।

भीरु, कापुरुष, राजरोष टेके फणा
प्रतिशोध दूरे, प्रतिरोध नाहिँ नाहिँ,
नब्यनाजीर अत्याचारर दे'णा
मणिष शुझिब केबे, केउँ युगे याइ ?

सेहि सन, सेहि तारिखटा यदि कबि
जाणि पारंति एइ कारा अर्गळ,
मोर धमनीर रुधिरकु करि हबि
ढाळंति सेहि यज्ञरे आजिठारु ।

—*—

दीपक मिश्र

पारि हेबा

निआँकु डेइँ यिबा
नईकु डेइँ यिबा
अपेक्षा
समयकु डेइँ यिबा
आहुरि कठिन काम ।
निआँ डेइँ गले हुएत तुमे
पाइपार जळर संधान,
नई पारिहेले हुएत तुमे
पाइपार मादिर बंधन
किंतु समयर उजुड़ा कूळकु

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

समस्ते हुअंति पारि सहि सहि
कपाळ लिखन— केतेबेळे
आकाश स्वच्छ, केतेबेळे
थम् थम मेघर कळारे ।
कि निष्पत्ति लेखाअछि
'आम कपाळरे समयकु डेइँ बा
पूर्वरु ; किए कहिब सेठारे केहि
पुष्प वृष्टि करे अहोरात्र किंबा
मृत्यु पड़े झरि
बिशुद्ध बिभूति परि लोकंक कांधरे ।
दुःखर दीर्घश्वास
हेउछि समयर एकलब्य ध्यान ।
सुखर स्वर्ण बळय
हेउछि समयर इमन् कल्याण ।
तेणु चंडिदास कहे
रातिर उषुम कोळरे समय शुए
ता'र सुख दुःख भुलि एबं भुलियाए
गृह दाह ओ बिभत्स कळंकर परित्यक्त शेय
क्ळांत नई परि ता' जीबन हजियिबा आहुरि सहज ।

—*—

सौरींद्र बारिक

प्रतीक्षा

मर्मर मूर्त्तिटि परि
पार्कर गोटिए कोणरे चुप्चाप् से ।
ता' मुहँरे दीर्घ प्रतीक्षार क्ळांति, किंतु आखिरे

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

आउ प्रतीक्षा न करिबार अनिच्छा । से ये.मिति
प्रतीक्षा करि करि प्रतीक्षा करिबा कथा पाशोरि देइछि
पहँरि बुलुथिबा हंस योड़ि परि अबा उड़ि बुलुथिबा
हररंगी प्रजापति परि पार्कर अंशटिए बोलि
निजकु मानि नेइछि ।
काहाकु अपेक्षा करिछ ? मो' कथारे चमकि कहिला
मोते एठि बसिबाकु कहि कुआडे ये. गला आउ फेरिलानि
ताकुइत अनाइ बसिछि । ताकु चाहिँ चाहिँ ताकु भुलिलिगि
केउँठु आसिला पुणि केउँठिकि नेब सबु भुलिलिणि
भुलिलिणि मो अपेक्षा करिबा ।
सते क'ण आउ से आसिब ?
एतिकि कहि मोते से चाहिँला । भयार्त्त आखिरे तार
फुटि उठुथिला हंस आउ प्रजापतिर ए लोभनीय पार्क ।

—*—

नृसिंह कुमार रथ

लुलु पाइँ एक ललाबायि

मो लुलु पड़रे शोइ माडि आसे घन घोर रात्ति
झड़ग इगल एइ मातिअछि प्रळय आहबे
पवनरे संदेहं ओ सर्वग्रासी मरणर भय
मो लुलु पडरे शोइ बाजिलाणि घंटारे एगार ।
एठारे एबे रे सबु परिमित, सबुत सीमित
सरळ निष्पाप तु रे किमिति बुझिबु कह किमिति बुझिबु ।
आमे सबु कलुषित, आमे सबु भग्न मंदिररे
केबल हिँ निर्यातित, असहाय निर्वासित प्राण ।
ग्रह, अंतरीक्ष यात्रा सत्वे आम निम्नगामी-मन

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

आमकु नपारे छाडि, अबिश्वास, संघर्षरे आमे
समस्ते जर्जर खालि, बिखंडित समयरे बहुधा बिभक्त
मृत अतीतरे आम लक्ष्य भ्रष्ट आगामी दिनर ।

तेणु सबु निश्चेष्टता, द्विधा, आउ द्वंद्व ओ संकट
भितरे आमर स्थिति, शोइपड़ अबुझा हुअनि
तो पृथिबी भिन्न हेउ आमठारु ! शांत, समाहित
तो पाइँ जीबन हेउ हा हुताश, ब्यर्थतारु मुक्त ।

अमृतर शिशु तु ये, अमृतर करि अन्वेषण
तो पृथिबी भरि उठु स्नेह, प्रेम, प्रत्यय, प्रीतिरे
पशुत्वर मृत्यु हेउ ; तो सकळ सृष्टिर सौंदर्य
निश्चित आश्रय देउ, बंचिबार तीव्र उन्मादना ।

तो पाइँ समय हेउ परिव्याप्त काळ, महाकाळ
क्रमबर्द्धमान हेउ जीबनर प्रतिटि अध्याय
सुदूरप्रसार दृष्टि, परिपूर्ण संभाबना ये ते
तोते रे बिछिन्न करु घृण्य आत्मकेंद्रिक चितारु ।

आगामीर बार्त्ताबह मो लुलुर आखिरे आखिरे
केते ये सपन बोळि निद एइ आसिलाणि घारि
मो कुनि पडरे शोइ चारिआडे शुन्शान राति
चारिआडे अंधकार, अस्थिरता, तो सकाळ आसिबाकु डेरि ।

—*—

ब्रह्मोत्री महांति

प्रत्यय

बिबाहर आगुँ यदि केबे का'रे पाइथाअ भल,
परिणय परे मध्य यदि सेइ स्मृति अनिर्बाण थाए,
अथबा मो सान्निध्य सत्वे

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

नूतन आसक्ति किछि इंद्रधनु सृजिथाए मने
से लागि मो' दुःख नाहिँ मात्र मोर एतिकि मिनति
चिरदिन से रहस्य मो निकटे अप्रकाश रहु
(अयथा औत्सुक्यु मृत्यु) तुम परे बिश्वास मो अब्याहत रखि।
सुनार संसार मोर, हीरा, नीळा मोतिर संसार
मु तहिँ साम्राज्ञी मोर निःसंशय, निरुद्विग्न मन,
अयथा संदेहे रुग्ण मनस्तत्व बिकृत बिचारे
कि लागि जाळिबि ता'रे—मोते तुमे खुब् भल पाअ
एते बेशी भल केहि केवेहेले पाइछि कि कारे ?—
भयानक भुल् करि घरे फेरि गभीर रात्रिरे
मोते किंतु कुह तुमे मंदिररे रामायण ब्याख्या शुणुथिल।

—*—

सौभाग्य मिश्र

ब्यायाम

सिहर अंटारे
हात रखि, पर मुहूर्त्तरे
ता पिठि थापुड़ाइ देबाहिँ त खेळ।
से बुलि चाहिँला बेळकु तुमे अदृश्य
बा अदृश्य होइयिबार इच्छारे मत्त।
निजे अदृश्य हेले आउ किछि
दृश्य हुए नाहिँ, ईश्वर न हेले।
तेणु त ए सामान्य पोकटि तार गात भितरु
शुंढ देखाइ जाहिर करे अस्तित्व।
आमर भोक मरियिबार बेळ हेलाणि
सत, आमर निभियिबार मुहूर्त्त

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

आसिलाणि, अथच देख् तोर
सिंह कटिरे हात मारिबा सरि नाहिँ
व नाहिँ पृथिवी दृश्य थिबायाके

—*—

राजेंद्र किशोर ंड

अनुशासन

तिनोटि प्रार्थना कर :
सैतानकु, मणिषकु अतिमानबकु ।
अमुक फलणामाने फरकटा इलाकागुडारे
निदेइले ।
तुंभेमाने अनाथाश्रमर
छेउँ ड से किशोरीकु प्रेम करुअछ
एहा भाबिनिअ ।
ये मृति कि निरीह !
ट्रेंच तळे पंचशीळ श्लोकर आबर्त्त
शिख ओ शिखाअ ।
बिबर्ण माफ्रे आंकि स्मृतिर शिराळ नक्सामान
रबर पेचार आगे पाटिकर । नाच । डिअँ । मर ।
समुद्री छैलाट भुल ।
शहेथर मरिसारि पुनर्बार मृत्युर अपेक्षा
हास्यास्पद । मस्तिष्कबिकृति ।
टन टन चेतनाकु रप्तानि ओ आमदानी करि
गोदामर गीतगाना "होटेलरे खाइ
हस्पिटालरे मर ।"
तिनोटि प्रार्थना कर :
सैतानकु, मणिषकु अतिमानबकु ॥

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

सरोजरंजन महांति

पुनराभिनय

लोभ
लोभरु पाप
ओ
पापरु मृत्यु—एइ साधारण
सत्यर चेतनाटिकु
मणिष बुझिला नाहिँ बोलि त सिद्धार्थ
छाडिथिले राजभोग राज्य ओ राजत्व एवं
भुलिथिले
यशोधारांक यौबन
ओ निद्रागत राहुळर हसरे लेखा
तांक पितृत्वर इतिहास ! !
ता सत्त्वे पृथिबी
लोभमुक्त हेला नाहिँ बोलि
मरियम् गर्भबती हेले
ओ ईश्वर-पुत्र
क्रूशबिद्ध हेबार संगीत गाइ
पृथिबीकु ओह्लाइ आसिले ॥
तथापि पृथिबी
पापमुक्त हेला नाहिँ एवं
हेला नाहिँ हिंसा किंबा घृणार उच्छेद । तेणु
आउ जणे युगजन्मा
सत्य शांति अहिंसार श्लोक उच्चारण करि
गुळिबिध हेबार गीतापाठ करि
पृथिबीकु आसिले ओ हस ढाळि देले ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

मात्र तिरिशटि मुद्रा बिनिमयरे यु.डास्

कुमारी-मातार

संतानकु तो.ळि देइथिला शत्रुमानंक हातरे सेदिन

एवं निजकु ओ निजर मुक्तिकु वि

बिकि देइथिला से सेदिन । किंतु

आजि आमे आहुरि शस्तारे

बिक्रि करि देउछु निजकु

ओ निजर स्वाधीनता, बिबेक, आत्माकु ॥

किंतु क्रूशबिद्ध करिबाकु, किए

सेदिन योगाइथिला क्रूश-काठ, कंटा ?

किए बिकिथिला बिश्वास

ओ बिश्वस्त अनुगत्यकु सेदिन ?

गुळिबिद्ध करिबाकु किए

योगाइथिला हिंसा ? आमे

एइ पृथिबीर नागरिक । आमे

यु.डास् ओ गड्सेंक उत्तर-पुरुष । आमे

लोभर संतान

प्रतिदिन पुरुणा पापकु

आपणा युक्तिरे गढा नूआ हूआ पोषाक पिंधाइ

करु एठि लोभ ओ पापर

त्रुटिशून्य पुनराभिनय ।

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

प्रतिभा शतपथ

स्मृति

पवनरे ए कि छंद, तरंगरे इए कि उल्लास,
तनुरे कि निर्वेदता आखिरे कि अपूर्ब बिन्यास ;
तुमे काहिँ केते दूर······ तुम मुहँ तुम आखि
मो आखिरे बार बार मिशे

अरण्य पथर फुल सुदूरर सुरभि संभारे
मो नासार रंध्रे रंध्रे छुटे, मुँ सते कि देखिपारे
मो आखिर समुद्ररे से फुलर गंगाजळ मिशे ।
केते दूरे गंगा आउ गोदाबरी, केते दूरे पुण्य पुरी धाम
मुँ एठ पूजारी एक मंदिर मो एकांत निशून ।
देबता गो काहिँ गल चारिदिगे बिचि बिचि
केतकी पाखुडा आउ दयणा फुलर माळ
चंदनर गंध ढाळि शून्य करि मंदिरकु मोर ?
मुँ क'ण निर्माखी आउ तुमकु देखिबि केबे ?
दक्षिण ओडिशाठारु राणीहाट छकयाए यदि बा मुँ घुरे
मुँ क'ण पाइबि केबे ?
बाट नाहिँ—बाट नाहिँ
तुमे ये. लुचिल काहिँ अम्रार्आम्र बनस्त भितरे ।
आहा खालि धरादिअ मनरे, स्मृतिरे ।

—*—

कमलाकांत लेंका

रबिबार

हळदिआ पत्र परि
झुलुथिबा छ'टि फुलंकु
झाडिदिए रबिबार ओ

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

फुर्त्ति परि नरम चमरे
लेपिदिए किछि धोब —किछि नालि रंगर चहट ॥
आनमना यु.बतीर इतस्ततः
पोषाककु पिंधि निए रबिबार
ता' निशून, अर्थहीन श्वासर ह्रातरे ।
कुहुकिनी दुःख परि
पोखरीर भिन्न तुठे
भरि निए शंख शुभ्र कळसी ओ घाटर आझाकु,
रबिबार धोइदिए
दरबुढी इच्छा करे
खराबुडा संजर चमकु ।
रबिबार सद्यस्नाता षोडशीर
बास्नाभिजा देह परि चहट चिक्कण,
तुनितानि गाँर सहर तळि
मणिषर जह्निफुल बेकरे झुलबा भंगी
चिलिकार आर्शि परि मुहँर गढण ॥
रबिबार कुहुळाए दीर्घश्वास ।
झाडिदिए हळदिआ पत्र एवं
पिइ निए टिकि निखि पापर स्वदेशी मद
क्रूशबिद्ध यंत्रणार रंगीन पात्ररे ।
ओ रहस्यरे गढि दिए
एक स्वच्छ सकाळर
झर झर खरार हृदय ।
रबिबार एका एका जगि रहे
पुषि परि, घरमणा मूषा एवं
अधाजळा क्षतर खबर ।

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

फनी महांति

निर्वासन

अबरुद्ध प्रति द्वार
प्रतिटि निःश्वास,
आशंकारे आंदोळित
मन ओ बिश्वास ।

अंधकारे गोपनरे
नारकीय दृश्य
ठारठुर संळापरे
कबंधंक भाष्य ।
उदास उदास
निःश्वासरे संक्रमित
मारात्मक विष ।।
किए तुमे रक्षीदळ ?
निःसंकोचे निर्बिवादे
कर स्तुति गान ;
अनाहारे हतादरे
अणसर बंदी धरे
जर्जरित मन ।
उत्कंठारे संतुळित
संदिग्ध जीवन
रुद्धश्वासे छटपट
प्रतिटि पराण
खोलिदिअ बंदद्वार
देखिबि मुँ निष्पाप नयन ।।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

निर्वासन दंडे मोर
जानुभंग, बंशहानी, दृष्टिशक्ति लोप
ब्रह्मांड ब्रह्मांड व्यापी
आसुरिक शक्तिर प्रकोप ।
जनतार कुहाटरे
भांगियाए निद
राजपथे गुंजरित सारथिर
बिचित्र संबाद ॥

नागुणीर काळफाशे
बंदी मोर सखा
काळकूट कपटरे
खसिपडे शकुनिर मुखा ।
महाकाळ कबळरे
अक्तिआर प्रज्ञा ओ बिबेक
संतर्पणे नागुणीर बंशवृद्धि
बंदीशाळे जतुगृहे
पांडबंक शोक
हुसिआर थिबु सखा
एइ मोर शेष चेतावनी
अणहात होइगले
पुनर्बार कंपिब मेदिनी

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

हृषीकेश मल्लिक

ऋतु हेमंत

कारण हेमंत आसिछि
नई सबु धाडि बांधिछंति समुद्ररु पाहाडकु,
चउद वर्षर तनिमा मोर द्वितीय पत्नी हेबापरे
तथापि हेमंत आसुछि ।
तुमे, मुँ, आम समस्तंक भितरे सेइ
बंधादिआ जीबन । ता जंघ संधिरे यदि
अरुंधती तारा बेळेबेळे लुचिगला
क्षति क'ण अनेक मोटर ओ एरोप्लेन ओलटि पड़िला ।
केडे खोला युबतीर मुकुळा छाति
केडे खोला ए हेमंत ऋतु !!
मोर दुइ दुइटा बिबाह परे बि,
हेमंत मने पकेइदिए मो प्रेमिकार
बाम स्तनर तिळ चिह्न ।
मृता पत्नीर मुक्ताहार परि
ए शिशिर केबळ झुरेइ देइ याए
ए जह्नटा केबळ मने पकेइदेइ याए
अंधारकु अतीतकु ॥

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

परिशिष्ट

मार्कण्डेय दास

गला पुत्र बाहुडि नइला

कोइलि केशब ये. मथुराकु गला ।
काह्ना बोले गला पुत्र बाहुडि नइला ! लो कोइलि ।।

कोइलि ! खंडक्षीर देबि मुँ काहाकु
खाइबार पुत्र गला मथुरा पुरकु । लो कोइलि ।।

कोइलि ! गला पुत्र बाहुडि नइला ।
गहन त वृंदाबन शोभा न पाइला । लो कोइलि ।।

कोइलि ! घर मोर न मगंति नंद ।
घटण न दिशे पुर न थिले गोबिंद । लो कोइलि ।।

कोइलि ! नंद देह पाषाणे गढिला ।
नयने कज्जळ देइ रथे बसाइला । लो कोइलि ।।

कोइलि ! चळुथाइ कटिस्थ मेखळो ।
चकित होइले शुणि गोप पुर बाळो । लो कोइलि ।।

कोइलि ! छाटेके मुँ माइलि पूरुबे ।
छाडि अत्रा गले कृष्ण सेहि पराभबे । लो कोइलि ।।

कोइलि ! दृढ पणे अइला अक्रूर ।
यात्रा बोलि भंडि नेला बसाइ रथर । लो कोइलि ।।

कोइलि ! झुरु झुरु लुह न रहिला ।
झगडा सारिण कृष्ण मथुरा रहिला । लो कोइलि ।।

---

* असुबिधाबशतः केतेक प्रसिद्ध कबिमानंकर रचना सन्निबेशित करायाइ पारि न थिला । से गुडिकु 'परिशिष्ट'रे सन्निबेशित करागला ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

कोइलि ! निशा काळे हरि मागे चांद ।
नयन टेकिण तांकु राउथांति नंद । लो कोइलि ॥
कोइलि ! टह टह हसुथांति कोळे ।
टळ टळ हेउथांति झुलिबार बेळे । लो कोइलि ॥
कोइलि ! ठण ये सुंदर बेनि पोए ।
ठकि भंडि गले कृष्ण नोइले बेढाए । लो कोइलि ॥
कोइलि ! डाळरे राबइ येह्वे शारी ।
डाळरत्न शुआ प्राये भापुथांति हरि । लो कोइलि ॥
कोइलि ! ढळूछंति माए यशोबंती ।
ढाळे हराइलि पुत्र मोर शिरीपति । लो कोइलि ॥
कोइलि ! अनेक हिंसिला राय कंस ।
अणहेळा करिण आपणे गला नाश । लो कोइलि ॥
कोइलि ! तनुरे ता लेपइ कुंकुम ।
तनय खेळाउ थांति भाइ बळराम । लो कोइलि ॥
कोइलि ! थन भांगि खीरपान देलि ।
थबिर काळकु पुत्र देखि न पारिलि । लो कोइलि ॥
कोइलि ! दउड़िरे बांधिलि पुत्रकु ।
दामोदर रागे गले मथुरा पुरकु । लो कोइलि ॥
कोइलि ! धन्य सेहि दइबकी नारी ।
धर्म थिला पुत्र गोटि होइला ताहारि । लो कोइलि ॥
कोइलि ! न शोभइ गोप पुर मोर ।
नारायण गला दिनु मथुरा नगर । लो कोइलि ॥
कोइलि ! पवित्र पुरुष मो माधोइ ।
पवित्र मुँ हेउथिलि कृष्ण मुख चाहिँ । लो कोइलि ॥
कोइलि ! फाळ्बाकु नाहिं मोर आश ।
फाळबार फळ गला बसुदेब पाश । लो कोइलि ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

कोइलि ! बहुत सहिलि तांक अळि ।
बढाइ शरधा भांगि गले बनमाळी । लो कोइलि ॥

कोइलि ! भंडि मोते गले बेनि पोए ।
भाइ तांक बळराम नइले बेढाए । लो कोइलि ।।

कोइलि ! मथुराकु यिबिकि मु धाइँ ।
माधब मधुसूदन आणिबि कढाइ । लो कोइलि ।।

कोइलि ! यिबे ये. आसिबे बोलि गले ।
जगत जीवन प्रभु बेढाए नइले । लो कोइलि ॥

कोइलि ! रतन बस्त्र अळंकार मान ।
रामकृष्ण श्री अंगकु दिशे शोभाबन । लो कोइलि ।।

कोइलि ! लक्ष्मीबंत अटे नारायण ।
लळितरे नाम देले से गर्ग ब्राह्मण । लो कोइलि ।।

कोइलि ! बृंदाबन न शोभइ मोर ।
बत्सा किए चराइब यमुनार तीर । लो कोइलि ॥

कोइलि ! श्रीमंत पुरुष मो माधोइ ।
शिरि रंग गला दिनु नंद हेले बाइ । लो कोइलि ।।

कोइलि ! शशी ये.हे दिनु दिन क्षीण ।
सेहि भांत क्षीण हेले मो नंद राजन । लो कोइलि ।।

कोइलि ! सातदिन इंद्र बृष्टि कला ।
सपत बरष पुअ मंदर धइला । लो कोइलि ।।

कोइलि ! हाइ ये. मारइ पुत्र तुंड ।
हृदये दिशिला तार सपत ब्रह्मांड । लो कोइलि ।।

कोइलि ! क्षदणि वंदणि भुजदंड ।
क्षमाकर दोष मोर भणे मारकंड । लो कोइलि ॥

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

यशोवंत दास

हाडि तु न बोल हाडिपा तु बोल

तुहि ये.उँ दिनु गभरे उदय सेहि दिनु दुःख नाहिँ ।

नदी कूळे याइ बालुका पूजइ शहे पुत्र हेबा पाइँ ॥ १

दांड़ खरकइ चउरा लिपइ धनकु पाइबा पाइँ ।

न देखिले मन बिकळ हुअइ का आगे कहिबि याइ ॥ २

तोहरि पाइ कि गोबिंद चंद्र रे नाना तीर्थव्रत कलि ।

भुवनेश्वररे ऊनकोटि लिंग समस्तंकु सेबा कलि ॥ ३

योडा योडा करि शहे योडा नीर शंभु शिररे तोळिलि ।

लक्षे चंपा पुष्प गएस ये. आदि माळ माळ चढाइलि ॥ ४

पार्वती कहांत ईश्वर शुणंति सुता भोळानाथे रहि ।

निमदेइ राणी जणाग करुछि पुत्रमान हेबा पाइँ ॥ ५

प्रथम गर्भरे पुत्र जन्म हेले ताकु योगी कराइब ।

द्वितीय गर्भरे पुत्र जन्म हेले प्रजांकु सेहु पाळिब ॥ ६

तहुँ पांचमास गर्भरे थइलि अंग अळस लागइ ।

षडमास यहुँ गर्भरे रहिलु तुंड सुआद छाडइ ॥ ७

भरा दशमास संपूर्ण होइला पृथ्वीरे जनम तोर ।

तुहि ये.तेबेळे जनम हेलु रे चेता नाहिँ देहे मोर ॥ ८

सेतिकि बेळरे कुमरमणि रे पोइलि नेले छडाइ ।

तांकरि हस्तरे नाभि नाड़ काटि सेकि साकि देले श्वाइ ॥ ९

पूर्ब पांच दिन बळारे राजन पंचुआति घर कले ।

सपत दिनरे गोबिंद चंद्र रे सत्यपीर पूजा कले ॥ १०

एकोइश दिन होइलाक यहुँ नामराशि गणाइले ।

नायक ब्राह्मण डकाइण आणि नाम करण करिले ॥ ११

षोहळ शतर अठर ये. एकबिंश बरषे निधन ।

आदि व्याधि कष्ट पाइलि धन रे धिक जाणि ए जीवन ॥ १२

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

सेहि दिनु मुहिँ बांछा ये करिलि पुअ याउ योगी घर ।
तुहि ये.बे सुत यिबु सेहि पथ तेबे होइबु अमर ॥ १३

बाद्य बडकाठ बसाइ धनकु योगी करि मनासिलि ।
एते दिन याए गुपत रखि ता आजि तो आगे कहिलि ॥ १४

योगी त होइले तरिबु रे धन राजा होइले मरिबु ।
छार मरणकु किपाइँ डरिबु योगी लाउरे भरिबु ॥ १५

अज्ञान काळरे बाळूत बेळरे योगी न कलु किपाइँ ।
ये.तेबेळे दांडे खेळ खेळुथिलि धूळिआ धूसर होइ ॥ १६

सेतेबेळे माता योगी न कलु लो हाडिचंडाळरे देइ ।
रजाघरे पुत्र जनम हेले लो सुखे दुधभात खाइ ॥ १७

एतेबेळे मात मो संगे लागिछु रजा ।यिबे योगी होइ।
भल भल घर कन्याटि मानंकु बिभाकलु काहिँ पाइँ ॥ १८

से कन्यामानंक नाम जननी लो शुणि के धरिब देही ।
ए नब बयसबेळे छाडिकरि देह धरिछि के मही ॥ १६

काहा नाम हीरा, काहा नाम लीळा काहा नाम जंबुबती ।
धरि यंत्रबीणा बजाउ थिबे गो ब्रह्मा झिअ सरस्वती ॥ २०

एहिपरि नाम बहिबा सुंदरीमान बिभा कराइलु ।
अनेश्वत राजाझिअ आणिकरि एडे दंड किपा देलु ॥ २१

यदि तु जननी हाडिपाणे पुणि मोते देइथांतु टेकि ।
एमानंक कष्ट सहि मुँ न थांति जगते बोलिबे कि कि ॥

पुत्रर बदनु ए बचन शुणि बोलइ मुकुता देई ।
अजर अमर हेबुरे कुमर मो बचन कर तुहि ॥ २३

नाम ब्रह्मकु तु भज रे कुमर ए दुःख रहिब नाहिँ ।
नंद नंदनकु डाक बार बार करुणा करिबे सेहि ॥ २४

तरकिबु ये.बे रहियिबु तेबे देब नाहिँ यम दुःख ।
कारण न मानि न शुणिले कथा ठाब हेब कुंभीपाक ॥ २५

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

जाणिशुणि येबे रतन छाडिबु करिबु गरड़ हार ।
टह टह हसि करि नाना टाहि टाणिबे यम किंकर ॥ २६
हाडि तु न बोल हाडिपा तु बोल हाडिपाटि ब्रह्मज्ञान ।
सात समुद्ररे पाणि न लागिब कले ता नाम स्मरण ॥ २७
(टीका गोबिंदचंद्र)

—*--

शंकर दाश

आरे बाबु चापधारि

आरे बाबु चापधारि ! कि दंड हेला मोहरि
कांदि कउशल्या बोलंति कैकेयी अरजिब केउँ शिरी
लो कोइलि ॥ १
एहि मगुशिर मास काकर पडे बिशेष
शीतळ पबन बहे घन घन मो पुत्र करिब किस,
लो कोइलि ॥ २
पुषमासे बड शीत कष्ट दिए अप्रमित
बिना बसनरे वृक्ष बकळरे कि दुःख न हेब जात,
लो कोइलि ॥ ३
माघरे तहुँ अधिक गरिब दुःख दायक
अमूल्य सुपाति तेजि रघुपति बुलइ कानन याक,
लो कोइलि ॥ ४
फगुणे फगु खेळरे मातिछंति घरे घरे
मो अंधुणी धन मोठुँ होइ भिन्न भसाइला शोक नीरे,
लो कोइलि ॥ ५
चइत्र मासर खरा नीरस करइ धरा
शरीररु झाळ बहे अनर्गळ पराण हुए घाबरा,
लो कोइलि ॥ ६

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

बइशाख खरा चाहिँ बाहारकु नोहे याइ
केउँ वृक्षमूळे जीबन बिकळे थिब मोर पुत्र रहि,
लो कोइलि ।। ७

ज्येष्ठे मो ज्येष्ठ नंदन जानकी सह लक्ष्मण
नाना पक्व फळ खोजि बुलुथिबे बिधिर ए बिडंबन,
लो कोइलि ।। ८

आषाढ मासरे मेघ गरजिला ये.हे बाघ
बेळे बेळे दृश्य हुअइ अदृश्य घोटियाए चउदिग,
लो कोइलि ।। ९

देख धारा शिराबण जळ पडे अनुक्षण
घर घाट नाहिँ मो दुःखी संखाळी किरूपे काटिब दिन,
लो कोइलि ।। १०

भाद्रब हेलें प्रबेश सुनिर्मळ दश दिश
अति सुकुमारी जनक कुमारी मने भाळुथिबे किस,
लो कोइलि ।। ११

आश्विने चंद्र किरण करइ मन हरण
केते मते केते उत्सब करंते घरे थिले रघु राण,
लो कोइलि ।। १२

ए महा कार्त्तिक मास भणिले शंकर दाश
सीता संगे घेनि रघु-कुळमणि भोगकले बारमास,
लो कोइलि ।। १३

(बारमासी कोइलि)

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

भोमा धीवर

बारुणाबंतरे दुःशा

शुण आहे सुज्ञ नर बारुणाबंत नगर
हस्तिनाकु द्वादश योजन अटइ
पवनहुँ खरतर धाइँला से दुःशा बीर
प्रवेश हेला बारुणाबंतरे याइ
पदाघाते मही चमके
आरे आरे पांडबा रे बोलिण डाके ।। १
भय पाइ नम्र लोके पळाइण गले थोके
सिंहद्वारे दुःशासन पशिला ठेलि
द्वारे द्वारीमाने थिले कुंतींक आगे कहिले
दुर्योधन भ्रात दुःशा आसुछि पेलि
शुणि कौंत भोज कुमारी
याइ सिंहद्वार माडि बसिले नारी ।। २
कुंती बोइले रे बाबु रह रह कथा सबु
पचारिबा किंपा तुहि भितरे पशु
सिंहर भुबने आसि श्रृगाळ पशइ फासि
कह ए चरित मनु संशय नाशु
दुःशा करयोड़ि जणाए
मंद कत्य कले मागो तुंभर पोए ।। ३
युधिष्ठि हस्तिना गले मानगोबिंदर तुले
पशाखेळ रसे माति होइले भोळ
राजदंड सिंहासन नकुळ भीम अर्ज्जुन
द्रौपदी सहिते पीढ कले सकळ
हारिले से धर्मंक सुत
जिणिले मानगोबिंद शुण गो मात ।। ४

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

आज्ञा मीते छंति देइ राजा भानुमती साइँ
द्रौपदीर केश धरि घेनि मुँ यिबि
आगे मात छाड द्वार यिबइँ भितर पुर
उछुर होइले पराभव पाइबि
कुंती देबी पुछिले सबु
केउँ पीढे द्रौपदींकि हारिले बाबु ।। ५
दुःशासन बोले मात प्रथमे धर्मंक सुत
हारिले सकळ घर धन भंडार
द्वितीयरे पीढ करि दंड सिंहासन हारि
तृतीये हारिले तुंभ भीम कुमर
चतुर्थे हारिले अर्जुन
पंचमे हारिले मागो माद्री नंदन ।। ६
षष्ठ बेळे पीढ करि हारिले द्रौपदी नारी
सप्तबेळे हारि अंग हेले मउन
कुंती बोइले द्रौपदी प्रथम बिबाही सती
प्रथम पीढे हारिले निअंत पुण
भाइ भाइ करिछि गोळ
ए छार कथाकु दुःशा करु कटाळ ।। ७
सोदरे सोदरे पुणि हेउछंति हणाहणि
कह द्रौपदी कि दोष करिछि तहिँ
शुणि करि दुःशासन बुलाइ बेनि नयन
आड हुअ बोलि कुंती देबींकि कहि
ठेलि करे देला पकाइ
कबाट कणरे देबी पडिले याइ ।। ८
कुंती उच्चे कले हुरि द्रुपद राजकुमारी
सुभद्रांकु घेनियाइ भितरे पश

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

बळात्कारे दुःशासन पशिले आंभ भबन
गुपत भावरे रहि हुअ अदृश्य
ताहा शुणि सुभद्रादेइ
चंद्रशाळा पुरे बेगे लुचिले याइ ॥ ९

द्रौपदी ये. भय पाइ आकुळे अंग थरइ
तरतर होइ उठि गले पळाइ
केश पाश कटीबास फिटि बहे खरश्वास
रोषेइशाळ मध्यरे लुचिले याइ
व्याघ्र भये ये.ह्ने मृगुणी
चंचळ नयन मुखु न स्फुरे बाणी ॥ १०

पुरे पुरे दुःशासन खोजइ सर्व भुवन
नेत्रपुर बासपुर डाळिंब पुर
भीनपुर रत्नपुर कउस्तुभ मणिपुर
इंद्र अवकाश पुर खोजइ बोर
युधिष्ठिर शोइबा पुरे
इंद्रपुर सम नोहे ताकु लक्ष्यरे ॥ ११

चारिकोण दीर्घ प्रति अटइ से पुर स्थिति
हीरानीळा खंजा अछि अष्ट रतन
क्षुद्र मोति केरा केरा लंबिछि मुकुता भरा
प्रबाळर स्तंभ होइअछि शोभन
दिव्य पाटवस्त्र चांदुआ
मर्कत चामरमान लंबिछि नूआ ॥ १२

से पुररे दुःशासन न पाइ द्रौपदी चिह्न
बिस्मय होइ बहन लेउटि आसे
खोजि न पाइण भेट रोषेइशाळ निकट
आंठु भरादेइ चाहँ चारि पारुशे

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

पूर्बदिगे उदे कि भानु
सेहिमति दिशुअछि द्रौपदी तनु ॥ २३
देखिण दुःशा चकित बोलइ कि दिननाथ
आकाशकु छाडिआसि एथे रहिला
कि अबा राहुर भये शशधर एथि रहे
केबण चरित मोते जणा नगला
पुणि गला पाहुंडे चालि
निकटे जाणिला बीर द्रौपदी बोलि ॥ १४
शुण हे सुजन जन मुँ छार पामर हीन
कहिबाकु योग्य निकि महाभारत
अर्थकु अर्थ मिशाइ पदकु पद पकाइ
छंद प्रति बंधरे मुँ कलइँ गीत
साधुजन न घेन दोष
कहे हीन भीमा कृष्ण चरणे आश ॥ १५

(कपट पाशा—तृतीय छांद)

—*—

प्रताप राय

शशिसेणा

शरद चंद्रमा आनन, घेनि चिकुर कि से ?
फुल्लारबिंद सुगंधे कि अळि लाळसे त्रसे ? १
भ्रूलता कि काम कमाण शर लोचन बेनि
ताटंक शाणे बसाइण, बिंधे अपांग घेनि । २
मळय समीर मंदिर नासा अटइ तार,
बसंत आसे बिघसित हुए किंशुकधर । ३
घन कुटिळ भृंग निंदे तार चारु चिकुर
दळित अंजन चिक्कण मृगमद सुंदर । ४

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

कुसुमे साजे सुकबरी भरि बिरही मन
फांदे बंधन कि करिछि मनसिज राजन ॥ ५
कंबुरूप वीणा बिळाप, पिक सुस्वर वाणी
अमीयसान ढुळ करि बिहि कंठ निर्माणि । ६
शुक, सनक, सनातन मुनि शुणिले बाणी
योग तेजि भोग इच्छिबे मनेबांछा तरुणी । ७
बळे बाहु मृणाळ सार बहे मुकुर ज्योति
कणय लतार शिखरे कि बसे भृगुपति । ८
हेम कुंदन पीनस्तन बेनि शइळ किसे
हिममळय गिरि दुइ एक ठावरे बसे । ६
छडऋतु घेनि अनंग बास करिछि तहिँ
त्रिभुवन जिणि निर्भय सेहु हरकु पाइ । १०
मोतिसरि मेरु तटरु बहे जाह्नवी नदी
तुच्छ उदरे रोमराजि कि से मिशे काळंदी । ११
सरस्वती कूप अटइ तार गभीर नाभि
त्रिवेणी संगे पुण्यथिले, एहु तीर्थकु लभि । १२
नितंब करी कुंभकटो रहे केशरी तहिँ
जाणि बिधाता बंधकला रज्जुत्रीबली देइ । १३
उरु से कनक करभ, देखि रमणी मोहे
पुरुषर धइर्य काहिँ, योगी भांगिब लये ॥ १४
शोण पद्मचरण बेनि, रत्नमंजीर साजे
थळ तेजि जळ मराळे देखि पशिले लाजे । १५
गति युवती गजराज जिणि देखे अबनी
सुंदर पणे सम नाहिँ येहु भुवन तिनि । १६

(शशिसेणा—द्वितीय छांद)

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

रघुनाथ हरिचंदन

नटी

नटी अति शाळी करि जुडा पाडिअछि
चूळर मूळरे करि पानिआ खोपिछि । १

बणमल्ली कुसुमे वेढाइ अछि गभा
चूत पल्लव डाळे हे पाउअछि शोभा । २

अप्रमित कळनारे घेनिछि कज्जळ
वेनि स्रुकणीरु बहि याइछि तांबुळ । ३

धूपशिर पानपत्र चिताभाले शोहे
रंगपाट वरते बांधिछि बाम बाहे । ४

गळारे केशाइ बोळि बांधि काचमाळी
बन हळदीरे अछि तनु भूमि शाळी । ५

दक्षिण बाहारे बांधिअछि विदमाळी
मंजुआंतिरे पचाइ अछि नखावळी । ६

रस मुदिरे मंडित बाम हस्तांगुळ
अंगुष्ठे आउ दर्पण मुदे महाभळी । ७

काखरे पन्नग पेडि करे धरि डाकि
बक सामळ बानाए पाइछि मह्रीकि । ८

वेनि पादे अछि रजतर वेनि बळा
बाम पादरे अछि पुणि धंड सिकुळा । ९

बिचित्र कामरे वेनि पादरे अळता
बिदमाळा संगे बाहे अछि रूपासूता । १०

परिहास सहइ जाणइ पुणि कहि
प्रगळ्भ पणे काहाकु भ्रुक्षेप नाहिँ । ११

(लीळावती — नवम छांद)

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

बृंदावती दासी

त्रिभंगी

श्रीबृंदावनर भितरे । सपतावरण मध्यरे ॥
संतान पादप मूळरे । मणि निर्मित वेदी परे ॥
विजये अखिळ निधान । से ये. मोहर प्राणधन ॥
बाम चरण भरे रहि । दक्षिण पाद बक्रे नेइ ॥
से पादे अंगुळि बक्ररे । तळे देइण अबनीरे ॥
प्रथम भंगी जाण एहि । वेनि बक्ररे अछि होइ ॥
द्वितीय भंगी कटि जाण । बक्र दिशइ शोभाबन ॥
तृतीय भंगी ग्रीवादेशे । बक्रे ढाळंति बाम अंसे ॥
एमंत प्रकारे त्रिभंगी । छांचरे उभा व्रज संगी ॥
बंशी धरिण बक्र होइ । कर वेनि अछंति राहि ॥
अधर बंशी वादनरे । बक्रता होइछि वेभारे ॥
लोचन अंत बक्र भावे । राधांकु चाहांते स्वभावे ॥
बंशी वादने भूरु वेनि । बक्रे टेकंति पुणि पुणि ॥
चंद्रिक चूळ शिरदेशे । बक्रे सुमंजुळ आभासे ॥
एमंत भावे बक्रनवे । सुंदर दिशंति स्वभावे ॥
बक्रे अटंति असुंदर । काळिमा भावे ये. आबर ॥
से ये. काळिमा बक्र दुइ । कृष्ण तनु देशकु पाइ ॥
के कहु ताहांक सुंदर । नाहिँ देबाकु पटांतर ॥
से अंगे अळंकार थाइ । सुंदर नोहिवे किंपाइँ ॥
बाम कुंडळ अंसे लोळे । भ्रूलता मंदे मंदे चळे ॥
से भुरु चाळिबाकु चाहिँ । धइर्य. के पारिव रहि ॥
बंशीवादने मनोहर । कुंचित दिशइ अधर ॥
इषित हास परकाशे । होइला परा होइ दिशे ॥
मरिवि मरिबि ता चाहिँ । धइर्य. धरि न पारइ ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

मंजुळ अंगुळि निकरे । चळंति बंशीर उपरे ॥
धरि बंशीर रंध्रमान । पुरांति अधर पवन ॥
लोचन दिशइ प्रसार । नाहिँ देबाकु पटांतर ॥
से आन चक्षुर निमेष । हरंति न रखंति लेश ॥

(पूर्णतम चंद्रोदय — नवम अध्याय)

—*—

दाशरथि दास

हाथी झुलइरे

नाना रंगे खेळंति गुळगुंचा । खंड दूर याइण पछघुंचा ॥
तुंडे अंगुळि लागे जरजर । खंड केश तइळे सर सर ॥
ताळू चूळ अळका बेढी बेणी । पक्ष चुंबेकि शिशु अळि श्रेणी ॥
कर्णे हेम गुणा गुंथा प्रबाळ । गळे हेम पदक कंठि माळ ॥
बाहे बाहुटि करेण कंकण । क्षुद्र मुदि अंगुळि बितपन ॥
नब नीरद ये. निर्मळ गात्र । मणि बिद्रुम कटि हेम सूत्र ॥
पादे नूपुर रुणु झुणु बाजे । छुआ सिंह बिक्रम ठाणि साजे ॥
करे लबणी आंठुआरि चाले । अमा अमा बोलण हेमा गाळ ॥
माए धूळि झाडि कोळे धरंति । सुखे चुंब देइ गेल करंति ॥
कोळे बसाइ जानु आउजाइ । स्नेह लाळसे मनकु मजाइ ॥
मुख निरोपि हिआ उलुसइ । सुख बात्सल्य रसे बिळसइ ॥
नाना कउतुक हास प्रळापे । बेढि बरज कामिनी कळापे ॥
काहा स्तनरु क्षीर नसिआइ । मुख देइ के कथा भाषिआइ ॥
केहु कर प्रसारिण घेनइ । धाई खिआटिकि एहि कहाइ ॥
केहु शरधारे कर बढाइ । एक आरेक घेनंति छडाइ ॥
तरु मळय लागंते येसन । गोपीकृष्ण अंग लागि तेसन ॥
निज सहज बिकार लेंछिले । कृष्ण अनुराग भाबे लेंछिले ॥
काख करि घेनि कोउँ कामिनी । हिआ परे नचाइ करे घेनि ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

घन कठिन कुचपरे नाचि । व्यथा कमळ पाद पाइ घुंचि ॥
हेमगिरि शिखर कि शिखिन । नृत्य करइ रमणी मोहन ॥
केहु बजाइण ताळि धरइ । हाथी झुल झुल बोलि बोलइ ॥
चउपादे रहि हरि बुलंति । देह फुटिब बोलिण बोलंति ॥
हाथी झुलइरे हाथी झुलइ । दहिदुध खाइ हाथी फुलइ ॥
हाथी कपाळे सिंदुर शोहिछि । हाथी ताळपरे चूळ बोहिछि ॥
हाथी पलाशि चालिबा साजइ । हाथी बळय नूपुर बाजइ ॥
काहिँ थिला ए गोपकु अइला । सबु सर-लवणी त खाइला ॥
हाथी गोपरे प्रमाद करिब । केहु पारिब ए हाथी धरिब ॥
हाथी बहिब कंधरे याहाकु । केहु बोले योग थिब याहाकु ॥
केहु बोले छुआ सिंह कहाइ । आगे चालिण पछकु अनाइँ ॥
केहु बोले कस्तुरी जीब गोटि । अंग सउरभ गंध प्रकटि ॥
केहु बोलइ निधनी-धनिआ । दुःख संखाळी रंकुणी सुनिआ ॥
एक आरके मुख बाहुनाइ । एथु सुख संसारे आउ नाहिँ ॥
येते अर्छात व्रजपुरवासी । सर्व जन मन मोहि आकर्षि ॥

—*— (व्रजबिहार—प्रथम बोलि)

कृपासिंधु दास

आउ अछिकि से रामा

कहिबारे आउ अछिकि से रामा रहिबारे नाहिँ जीवन।
सहिबारे नाहिँ चंदन सुमन बहिबारे नाहिँ मंडन
कृष्ण हे ! अहि बारे सम मणुछि
नोहिबारे तुंभ दर्शन बशरु दहिबारे काम लागिछि ॥ १
छाड़िलानि सुधा अशन बसन आड़िलानि देह दुःखकु।
एड़िलानि वेश चातुरी चतुरी मोड़िलानि मुख सुखकु
बाळा ये ! हुड़िलानि कथा बेळरे
उड़िलानि तृण पराये मन ता बुडिलानि खेद जळरे ॥ २

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

लाखिलानि प्रेम पंके येंउँ दिनु लेखिलानि धाता ए ताप ।
रखिलानि लाज दूर करि यहुँ देखिलानि शाम स्वरूप ।
बाळा ये ! चाखिलानि प्रेम मधुर
शुखिलानि कठ से रस आश्वादि शिखिलानि चिंता विधुर ॥ ३

माजिलानि गुण टंकारि मदन साजिलानि फुल सायक ।
भजिलानि भस्म दशाकु बेभारे भाजिलानि दृढ कायक ।
बाळा ये ! हजिलानि अनुरागकु
पूजिलानि कामदेव चराचर बुजिलानि नेत्र युगकु ॥ ४

रटिलानि गुण केतेक एबे से खटिलानि सबु कर्मकु ।
हटिलानि एते प्रकारे मदन भेटिलानि आसि कर्मकु ।
बाळा ये ! तुटिलानि न्याय पथरु
त्रटिलाणि येणु देखाइ दइब घटिलानि कथा एठारु ॥ ५

घषिलेनि घनसार ये ते सखी हसिलेनि शांति न देखि ।
खसिलेनि प्रति अंगरु सुषमा दूषिलेनि चंपा केतकी ।
कृष्ण हे ! बसिलेनि कक्षा दळरे
कषिलेनि हेम कषटिरे यहुँ दिशिलेनि तनु तुळरे ॥ ६

छटक चाहिँबा भंगी अछि निकि हाटक बरणी सहीर ।
झटक गति तार कहि बसिले नाटक रीतिरु बाहार ।
कृष्ण हे ! कटक धुनि करि येहु
अटक करिपारे मननयन मटक पकाइब केहु ॥ ७

ढाळिला बाते लता प्राये एबे से जळिला बिरह हृदरे ।
बळिला चंद्रमा कळाकु कशरे चाळिला ता कर मुदिरे ।
बाळा ये भुलिला बिबेक नीतिरे !
छळिला आरत भंजन नामकु काळिला तुंभंकु प्रीतिरे ॥ ८

ललीत लीळा बिळासरु बिधिरे स्खळित होइअछि बाळा ।
चाळित दृष्टि रखिछि कि आउ से दळित कज्वळ कुंतळा ।
कृष्ण हे ! फळित पाके हेला एहि
पाळित टभास्तनी पद पळाशे कळित करिअछि देही ॥ ९

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

दनेइ दास

चंद्रावळींक फुलबेश

ताहाशुणि चंद्रावळी हरष । गोप सुंदरी होइ फुलबेश ॥
समस्ते मिशि फुलबेश कले । पंचुवर्ण बेश तहिँ होइले ॥
फुलर पांडोइ फुल नेपुर । फुल भुंटिआ लगाइ गोड़र ॥
फुलर मुदि अंगुष्ठिरे शोभा । फुल माढी गाटि पिंधिले राधा ॥
फुल कांचला शरीररे भिडि । फुल माळामान गळारे पडि ॥
फुलर चुडि फुलर ताडबिद । फुलर बसाणि नोथ संपाद ॥
फुलर गुणा नासे शोहे पुणि । काप मळकाढि फुलरे जाणि ॥
चंद्र फासिआ फुलरे निबाड । फुल भिआ काठि गभा उपर ॥
फुलर अळका फुलर गभा । फुलरे भूषण होइले राधा ॥
फुलरे छांत गोटि सज करि । फुलरे भूषण पत्र काहालि ॥
फुलर आलट फुल बिचणि । एमंत बेश करि ताकु पुणि ॥
फुल बनरु होइल बाहार । बृंदाबने याइ मिळे सत्वर ॥
फुल भूषण सिंहासन कले । तहिँरे चंद्रावळी बसिले ॥

(गोपी भाषा—ऊनविंश छांद)

—*—

नित्यानंद महापात्र

ए मरण नुहँ नुहँ

सेठि मुँ देखिछि भोक उपासरे पिठि पेट एकाकार
एठि मुँ देखइ मेदर बृद्धि उदर सर्बसार ।

सेठि मुँ देखिछि पंजरा तळु उठिबार अणचाश
एठि साकी सुरा सहितरे भुरु भुरु अगुरुर बास ।

सेठि परबरे गरभ जळइ शह शह दीपावली
बिजुळि आलुअ उजाळि उठइ एठि देखे भळि भळि ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

सेठि केतेंकर जीबन याउछि काणि कउडिर मूले
मणिमाणिकर तउला एठेइँ मणिष हृदय तुले ।
सेठि भोक पोष रोग भोग करे रक्त माउँस देह
एठि मणिषर मनर लालसा चाटि खाए अहरह ।
सेठि भाजिपडे गड गड़ होइ गढा बेढा कोणारक
एठि देउळरे दिअँ नाहिँ खालि मुखशाळा चक चक ।
भोकिला पेटर सहितरे सेठि मरणर बादीपाला
एठि काळकीट काटे टिकि टिकि हृदयर फुल डाला ।
जीबन सेठेइँ जीबन हेउछि सोके शोषे मरि मरि
बिळासर तळे पळातक एठि मरण पशुछि डरि ।
जीबनर एहि बेळातटे मुहिँ पडिछि दुइर मुहेँ
से मरण मुहिँ बरिबाकु चाहेँ ए मरण नुहेँ नुहेँ ।

—*—

कालिचरण पट्टनायक

गत बसंत

जरिबुटा खजा आखि अपहुँच नेळिआ चांदुआ तळे,
काहिँकि केजाणि निछाटिआटारे बसिलि मुँ बळे बळे ।
पूरुबे जळुछि रूपेलि दिहुडि दक्षिणा मारुछि बाआ,
पसरा न करि ठेसि होइगला निलजी हेनार साहा ।
पासोरा घरर घोषरा दुआरे दरदी किए से आसि,
उँकिमारि चाहिँ चारिआखि बेळे चिहिँकि छपिला खसि ।
चकिते शुणिलि एतिकि बेळरे कुहु कुहु कुहु कुहु,
हेजि पारुनाहिँ मो काने शुभिला किस से 'कुहु' ना 'उहु' ।
ठउर करि मुँ बारि न पारिलि चेता मोर अछि निकि,
एइ चांद अबा, एइमिति चांद से दिन संजरे टिकि ?

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

कु'जतले एइ मिरिग छालर आसन थिलाकि नाइँ,
एइ मल्ली आसि गेह्लाइ हेबार मने पडे छाइ छाइ ।
मेला आखि आगे जीअंता सपन गोटि गोटि भासिगला,
किए पर मोर किए आपणार अटकळ न पाइला ।
केते मोर बोलि से ये.उँ दिनकु आपणार करिथिलि,
से दिन कोइलि, सेइ संज, जह्न केते आजि खोजि हेलि ।
उदुआ चांदिनी अमानिआँ बाआ से दिनर कथा ये.ते,
किए अपासोरा, कि अधा पासोरा सभिंकि डाकिलि केते ।
हात प्रसारि मुँ बिनयी कहिलि "आस पदे कथा कुह",
चमकिलि पाइ खोला हातरे मो दि टोपा ततला लुह ।

—*—

ड० कु'जबिहारी त्रिपाठो

समुद्र बर्णना

राम अबतार हरि बिभीषणे राज्य भरि
लंकानगरी बिबिध रतनयु.ता ।
बिरह बिधुर करि सगह्णे पुष्पतरी
आरोहिले, आग करि बिदेहसुता ।
रत्नाकर देखि आगरे ।
बोइले एकांते कांते अनुरागरे । १ ।
प्रिये ! फेनिळ जळधि बिभक्त मळयाबधि
सेतुरे मोहरि, यथा शारदाकाश,
सुनिर्मळ तारकित छायापथे द्विखण्डित,
देख कमनीय रूप करे प्रकाश ।
आम्भ पूर्बबंशी सगर
कीर्त्ति बोलि नाम तार अटे सागर २ ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

तपन-कर-कळाप एथिरु जळीय बाष्प
नेइ लोक उपकार करे साधन ।
प्रबाळ मुकुता फल आदि रतन सकळ
बढ़ंति एथिरे; एत अक्षय धन ।
चंद्रमार होइ जनक ।
क्षमागुणे बडबाग्निर ए धारक । ३ ।

महिमारे दश दिश ब्यापि ए सरित-ईश
भिन्न भिन्न अबस्थाकु करे प्रकाश ।
केबे क्षुब्ध भयंकर, केबे शांत मनोहर
तेणु ए सागर अटे बिष्णुसंकाश ।
कि आकृति कि परिमाण
बिष्णुकल्प सागरर के करु मान । ५ ।
युगांत काळे शाश्वत पुरुष खिल जगत
संहरि निज जठरे कले स्थापन ।
प्रळय पयोधि जळे योगनिद्राभ्यासबळे
आत्मनिष्ठ होइ करिथांति शयन ।
तांक नाभिजात कमळे
बसि आदिब्रह्मा स्तुति गाए मङ्गळे । ५ ।
शत शत महीधर पक्षछेदी इंद्रंकर
पराभबे ए सागरे गले शरण ।
बिजिगीषु नृपतिर पीडारे नृपनिकर
यथा माध्यम धार्मिके करे बरण ।
बिपन्न रक्षणे समर्थ
हेबारु बिपदबंधु नाम अब्यर्थ । ६ ।

आदि बराह मूरति धरि येबे बिश्वपति
पाताळु धराकु कले उदबहन ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

सेकाळे सागर जळ अति प्रबृद्ध निर्मळ
क्षणे धरामुख करि अवगुंठन ।
लज्जा तार कला हरण ।
के ता' सम अबळा सम्मान रक्षण ।

* '* *

नदी मुहाणे विपुळ- काय तिमि होइ ठुळ
ससत्व नदी सलिळ विवृत आस्ये
घेनि संरोधंते मुख सछिद्र ताळुरे तुङ्ग
धारा उठि जळयन्त्रलीळा प्रकाशे ।
प्राणि मध्ये विशाळतम
तिमि देखि मग्न शैळ उपुजे भ्रम । ८ ।

देख, सलिळ मातंग भेदि फेनिळ तरंग
उल्लंफंते, फेनराशि द्विधा खंडित ।
कपोळ तळे सर्पण काळे फेनराशि कर्ण-
चळ-चामर-चारुता करे डंबिन ।
बुडियाइ पुणि जळरे
तिमिठारु अपसरि रहे दूररे । ९ ।

देख प्रिये ! ए भुजंगे विशाळ तरंग भंगे
वारि तुहँति सदृश आकृति हेतु ।
मात्रक तपन कर पडंते होंति गोचर
फण-मणिगण-उज्ज्वळता-संकेतु ।
तीर समीरण सेबन ।
करिवाकु प्रसरंति ए फणि-गण । १० ।

देख प्रिये, शंखयु.थ उर्मिवेगरे पर्यस्त
होइ तबाधरस्पर्द्धि-प्रबाळांकुरे ।
लग्नमुख होइ पछे अपसरियांति कृच्छ्रे
पुणि निमग्न हुअंति तरंग घूरे ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

तव ग्रीबा अनुकरण
करिण ए शंखयूथ प्राणीरे धन्य । ११ ।
देख पारावार-जळ- पिपासु-घनपटळ
ओह्लाइ सागर वक्षे भउँरि वळे,
पडि हुअंते घूर्णित दिशे, अत्यंत मथित
हेला परि अब्धि पुणि गिरि-मन्दरे
जळस्तम्भे ऊद्ध्वंकु नीत
होइ पुणि जळचर हेवे पतित । १२ ।

—*—

आचार्य हरिहर दास, भागीरथि महापात्र, गोपबंधु चौधुरी

गीता

भोजन, यज्ञ, सर्मिक तपस्या, दान आबर ।
शुण धनंजय यथा बिभक्त तिनि प्रकार ॥

आयु, सत्त्व, स्वास्थ्य पुणि सामर्थ्य सुखबर्द्धक ।
रसाळ चिक्कण रम्य रोचक खाद्य सात्त्विक ॥

अम्ळ, उष्ण, तिक्त, तीक्ष्ण, बिदाही, रुक्ष, लबण ।
दुःख शोक रोगप्रद राजस प्रियभोजन ॥

शीतपुतिगन्धयुक्त उच्छिष्ट रसबिहीन ।
अपबित्र पर्य्युषित तामस-प्रिय भोजन ॥

फळाभिळाषरहित अवश्य कर्त्तव्यज्ञाने ।
बिधिरे संपन्न यज्ञ शास्त्र ता सात्त्विक भणे ॥

फळअभिळाषयुक्त निज महत्त्व बर्द्धने ।
संपादित यज्ञ पार्थ राजस शास्त्र ता भणे ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

विधिहीन मन्त्रहीन श्रद्धाविरहित मने ।
असृष्टान्न यज्ञ पार्थ तामस शास्त्र ता भणे ॥

देबद्विज गुरु पाद पूजा सारल्य अहिंसा ।
ब्रह्मचर्य शौच मिशि ज्ञात कायिक तपस्या ॥

उद्‌वेग न दिए येउँ बाक्य सत्य प्रिय हित ।
बेदाध्ययन अभ्यास बाचिक तपस्या उक्त ।

सौम्य भाब शुद्धि मौन चित्तप्रसन्नता पुणि ।
बचने संयमरक्षा मानसिक तप जाणि ॥

युक्तचित्त अनासक्त नर अतिश्रद्धाभरे ।
करे ये त्रिविध तप सात्त्विक ता नाम धरे ॥

प्रशंसा सम्मान पूजा लागि दम्भे आचरित ।
अनिश्चित क्षणिक से तप राजस कथित ॥

पीडा जम्भाइ स्वदेहे, मनासि परबिनाश ।
मूर्खभावे दुराग्रहे करिबा तप तामस ॥

अनुपकारी मानवे कर्त्तव्य बोधे दिअइ ।
देश काळ पात्रे दान सात्त्विक दान अटइ ॥

प्रतिउपकार अबा फळप्राप्त आशा रखि ।
कुंठामने दान करे राजस दान ता लेखि ।

अस्थाने असमये बा अपात्रे दिअइ दान ।
अनादर तिरस्कार दान ता तामस जाण ॥

फळकामना बरजि अनासक्त करि चित्त ।
तप दान यज्ञ पार्थ, कर्त्तव्य ध्रुव मो मत ॥

आरम्भे गरळ किंतु सुधातुल्य या अंतिम ।
आत्मज्ञानप्रसादज सत्त्विक सुख उत्तम ॥

विषयेन्द्रियसंयोगु आरम्भ अमृतसम ।
विष परिणाम यार राजस सुख ता नाम ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

आरम्भे अबसाने या सुखबृद्धि मोहकर ।
निद्रालसप्रमादज तापस सुख आबर ॥
मोठारे शरण पशि सकळ कर्म आचरि ।
पांति मो प्रसादे नित्य अव्यय पद मोहरि ॥
सकळ धरम छाड एका मो शरण पश ।
सर्बपापुँ मु तारिबि, न कर शोचना लेश ॥

—*—

लोकगीत

चक्रधर महापात्र

(ढग)

कउडि ! शत्रुकु दिए घउडि ।
घरर उपरे घर । सुनाखम्ब परि तिनि दिअर, चन्द्र उदिआ बर ।
छि लो छतु ! पाणि पडिले केते तु मातु !
जाणिथिलि कि, अधे सुना, अधे पितळ
मुँ निकिति पकाइ तुळिथिलि कि ।
कुहा याउथाए सिना । तुहाइ तुहाइ
पुट देउथिले लुहा कि होइब सुना ?
घर देख, बर देख, कान्थ भांगि कुज देख !
देखिले हरि, खाइले मरि, तो सांगे कि पीरति करि ।
किआटि ! चइत मासरे नुआ गुड़ खाइ,
कंडु कु़डाइले पिआटि ।
खरखरी सात पतर, मो भाइ दुधमातर ।
खरखरी मा लागिला लो
छड़ाइ देब के । सरु शंखा बन हळदि खरखरी कि दे ।
(बाळिकामानंक खरखरी-देवी-पूजा-गीति)

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

उत्कळ गाउँलि गीत

पहिलि पालि, बोउ ! देलु पठाइ ।
सांगरे थाइथिले सान ककेइ ॥
अधा बाटकु बोलि मो नना गले ।
'झिअ ! याउछि' बोलि मेलाणि देले ॥
नना-मुहकु मुँ ये. चाहिँलि मुहिँ ।
नना धर्य धरि पारंति नाहिँ लो ॥
गतीश्वरंक माळी सेठारे थिला ।
ननांक आखि लुह पोछिण देला ॥
काहिँकि कान्द मिश्रे ! याअ घरकु ।
झिअ-जनम सिना पर घरकु हे ॥

--*—

मो जीवन

जागर दुतीआ दिन
चउधुरी-पुअ बुझाइ दिन, बोइला बोहूकु आण ।
साइ पडिशाए थिले
तोराणि पिइबाकु डकेइ नेले, फरुआ पानिआ देले ॥
नयने कजळ देइ,
अट्ठ अळंकार खंजंति नेइ, तोहर त बाबु नाहिँ ।
पयरे अळता देइ
लेउटि मुहँकु चाहिँलि मुहिँ, याउछि लोतक बहि ॥
ये.तेबेले अनुकूल,
ठाकुर-प्रसाद धइलु कर, बोइलि हेल अन्तर ।
गउड ये. थिले तहिँ ।
चिल परि करि नेले उड़ाइ, आउ त देखिलि नाहिँ ॥
मास तिनि दिन बाट ।
किमिति खाइबु प्रबासे मात, तो कर्मे थिला ए कष्ट ।
पंजर तळे मु थाइ ।
निति भगबती जणाउथाइ, मो बन्धु आसिब काहिँ ।

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

समर गीतिका

पाएक आगुळ ओ फिटाण

उत्तार (३) पृष्ठा ४७६

एकाधुषि बेळामंडना पद निरते ध्यान
याहा कृपालेश पाइ मु पद करे रचन ॥
शुण हो पाइक श्रुतिरे तोते पचारे मुहिँ
क्षत्रिवृत्ति विद्याध्ययन ताहा पाइलु काहिँ ॥
पशुरामविद्या अटइ क्षत्रिवृत्त साधन
काळे लोप हेला साजिले महामेघबाहन ॥
रंग देखि कले प्रशंसा मोर राजाधीश्वर
हार बाहुटि स्वर्णबळा पाइलि पुरस्कार ॥

× × × × ×

इळापुट बेळाप्रसादे क्षत्रिवृत्ति बंचिला ॥
जन्मरु पाइकदेशे मुँ हेलि मर्त्ते प्रकाश
एकाधुषि बळा मंडना मोते कले पौरुष ॥

—*—

ड० कुंजबिहारी दाश

पल्लीगीतिसंचयन

प्रथमभाग, विश्वभारती, १९५४

९० । चाळरे खोसिलि मठा
बड़घर देखि देइछ नना हे गणंति चितोउ पिठा । (पृ-१३३)

८४ । दुआर मुहँरे चुन
न सहिपारिलि कटुवचन लो अळका नईकि मन । (पृ-१३३)

९२ । नडिआ गोटमा कषि
दूर राइजरे देइछ नना हे दिन गणुथिबि बसि । (पृ-१३४)

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

६४। कपाखाइ राउ राउ

कानकु फाल्गिआ न देलु बोउ लो लोके कले हाउ हाउ।

६५। तोटाकु तोटा लागिछि

मधुवन तोटा भांगिपडुछि लो मो बोउ मने पडुछि।

१०६। पाचिला आंबरु फाले

नना डाकुछंति दांडदुआरे झिअ मो नाहिँ कि घरे।

१७३। खट तले गला बिछा

भाइं कि के देला दूर चाकिरि, पलङ्क पडिला तुछा।

२१०। पाचेरी अधारे दुब

दुब धरि शुभ मनासु थिब, मो काच बजर हेब।

२४३। बाइरे हांडिआ ताळ लो

झिअ देइ बापा अचिंता होइले महानदी कला काळ लो।

—*—

धनंजय भंज

चित्रमृग

राग—चिंताकेदार

शुणि सचिव बचन राजा क्रोधे कंपि बढाए पहिजा

ये वे मोर आज्ञा करिबु अवज्ञा

वेगे संजीवनी पुर या, या रे सचिव ।१।

एहु स्वरूप बचन शुणि मने मने से मारीच भणि

रामहस्ते हत होइवा मंगळ

एहा हस्ते मृत्यु हीन पुणि हे दइब।२।

एते बिचारि कला सम्मत, राजा संगे चळिला तुरित

एहि बिचार तार मने जाणिण

मने चिंते दशरथ सुत, हे दइब।३।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

एहा जाणिण से रावणारि, एकांतरे सीतांकु हकारि
कहंति शुण रे चंद्रमा बदनी
दुष्ट आसुअछि तोते हरि रे, सुंदरी । ४ ।

अंतर्हित तु अनळे हुअ, मायारूप तो मंदिरे थुअ
बियातार कथा तुमरे बिदित
येणे मरिब बिश्रवा पुअ, रे सुन्दरी । ५ ।

राम आदेश पाइ अबळा अनळरे रहिला निर्मळा
छाया स्वरूप से कुटीरे रखंते
देखि सुखी हेले रघु बळा, हे दइव । ६ ।

एहि समये सुन्द नन्दन हेला हेम मृग ततक्षण
बन मृगगण संगते मिळिण
हेला सीता पुरते बहन, हे दइव । ७ ।

अबिदूरे करुअछि लीळा ताहा देखिला नेत्रे अबळा
नाना रत्नगुणे होइछि निर्मित
लोहे होइला मति चंचळा, से जानकी । ८ ।

बोले शुणिवा प्रभु श्रीराम एहु मृगरे बढे मो काम
एहाकु निधन करि आणि दिअ
शय्या करिबि मुँ एहा चर्म, हे राघब । ९ ।

शुणि अबळा बाणी कोमळ उठि सज दशरथबाळ
बोलंति लक्ष्मण देख चित्र मृग
एथे हेला सीता मति भोळ, हे लक्ष्मण । १० ।

शुणि लक्ष्मण कहे बचन, एहु मृग नुहइँ राजन
ए मारीच बने ए रूप धरिण
राज कुमार करे निधन, हे श्रीराम । ११ ।

काहिँ नाहिँत एसन शुणि, रत्न मृग अछइ धरणी

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

तुंभे सुजाण रघुकुळ अमणी
एथे लोभी हेउअछ जाणि हे राघव । १२ ।

शुणि सौमित्रि बचन राम, हसि बाणी कहे मनोरम
जाण बाबु एहु बिधातार कृत
एथे न हुअ तु केंभे बाम, हे लक्ष्मण । १३ ।

ये.बे राजा माते मृगयार, नाश करंति श्वापदबर
आहार निमंते हरिण मारंति
एहा मने नकर बिचार, हे लक्ष्मण । १४ ।

ये.बे असुर निश्चये जाण तेबे बधाई अटे ए पुण
ऋषिमानंकु ए करइ अधार
तेबे बाणे नाशिबि जाण, हे लक्ष्मण । १५ ।

अश्वतरी गर्भ प्राये होइ, मृग रूपकु अछि ए बहि
एसन प्रकारे लक्ष्मणकु कहि
पुणि बोलन्ति शुणिमा तुहि, हे सौमित्रि । १६ ।

बाबु सीतांकु रखिण थिब एहि स्थानु केणिकि न यिब
रजनीचरचक्रे एहु पुरिछि
एथि जानकी भय लभिब, हे लक्ष्मण । १७ ।

तुंभे जटायुष बेनिजन सीता रखि थाअ एहि स्थान
आंभे मृग मारि आसिबार याये
तुंभे केणे न कर गमन, हे सौमित्रि । १८ ।

किछि न कह मोहर आन, एथि होइथाअ साबधान
एते बोलिण से गले रघुबीर
करे धरिण से धनुर्बाण, हे दइब । १९ ।

(रघुनाथ बिळास—२२श छांद)

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

त्रिविक्रम भंज

बर बरषा ह्ेला परबेश

बर बरषा ह्ेला परबेश । रसार सारकु करि प्रकाश ॥
घन घन करि डाकइ घन । दिन दीन करि गिळिला ईन ॥
आशा आसारे पूर्ण होइगला । झटझंट क्षणप्रभा दिशिला ॥
झांकिझांकि झंझाबात बहइ । झाडिझाडि लता धाड़ि दिअइ ॥
माळ माळरी बासरे बासिले । अळि आळी मधुपाने रसिले ॥
ताति तति तात ता ताति तात । तत तंत्री तंतु तत तत्र त ॥
एहा मृदु ध्वनिरु महीधरे । शिक्षा कले सुखे दरीमुखरे ॥
कुके कंक ककु केकी केकाकु । ककी काकींकि कोक कोकिकाकु ॥
भेक भेकींकि करिछंति भेक । कोकंक तृष्णा होइगला स्तोक ॥
कमळरे बुडिले ये. कमळ । कोमळ ध्वनिकि कले कमळ ॥
नगकूटरे दिशिले कूटज । केहु बोले एहु कामकूटज ॥
एहि काळरे केदारे सुन्दर । एहि काळरे केदारे सुन्दर ॥
केहु सुभाग्यबंत जगतिरे । रामा घेनि बसिला जगतिरे ॥
परबासे केहि ह्ेला प्रबेश । ताप पाइला देखि प्रिया कृश ॥
एहि समयरे केहि बिळासी । कहे प्रियाकु कोळे धरि बसि ॥
एहि काळ देख रे प्राणधन । धाता सर्ज्जनाकु कलाणि आन ॥
ह्ेला जीमूत गमन आकाशे । जातिकुळे मधुप शोभा दिशे ॥
रजनीकर बने ह्ेले लीन । बिटपी कोळे शुभे द्विजस्वन ॥
तीक्ष्णतर बारिधार पतने । मोदे हसिले ये. गणिकामाने ॥
नीळकंठ गिरीशे कले नृत्य । कले अमृत धनंजय हत ॥
कबंध डेइले ये. अतिशये । देखि कुमुद होइला उदये ॥
एहिपरि ये. केते परकारे । प्रिया धरि कउतुके बिहरे ॥
याहा समीपरे न थिला कांता । ताकु स्मर कला महा अहन्ता ॥
एहि ऋतुकु देखि नृपसुत । चित्रपट देखि ह्ेला मूर्च्छित ॥

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

किछि बेळ उत्तारु पाइ ज्ञान । शोके बोइला रे, रामारतन ॥
तोह संगे मोते केहु करिब । ए दुःख सिधुरु उद्धरि नेब ॥
केउँ तपस्या अबा अछि मोर । कोळे रसि बसिबु रामाबर ॥
हर काहिँ कि बा दया करिबे । केउँ सेबारु भूपजाकु देबे ॥
एहा देखि बोलइ मंत्री सुत । ए चरित कि तुंभंकु उचित ॥
मकरकु सिना भूपप्रकर । दरशन करिबे शिरोकर ॥
देख ये.मा अनुरूपरे बर । बिचारिबे से नरेन्द्र शेखर ॥
एबे होइअछि घन समय । अंबुकुळरे दुस्तर ये. रय ॥
एथि उत्तारु होइब शरद । स्फुटे प्रकाशिब मही संपद ॥
तदुत्तारे हेब हेम प्रबेश । ये.हु करिब तुंभ मन तोष ॥
एहि रूपरे नाना परि बाणी । कुमारकु सचिब सुत भणि ॥
करि किंचित चित्त तार तोष । घेनि हरुथांति निशि दिबस ॥
तेणे ए ऋतु देखि भूपजेमा । होइ अतिशयरे दुःखीतमा ॥
देइ सकळ जळदरे दृष्टि । बेळके बेळ क्षिन्न बिबउष्टी ॥
स्तनितरे जनितरे करे भय । चंचळाकु चमके अतिशय ॥
केकी भेकी डाहुक निनादरे । मंदिररु न बाहारइ दरे ॥
मनु तेजिला आहार बिहार । हास्य लास्य मंडन हेला भार ॥
नाना बिरह शांतिमान कले । अति यत्ने प्राबृटकाळ नेले ॥
आहे बिधुमा धनंजय प्रिय । भंज राजार नाश तापत्रय ॥

(कनक लता—१३श छांद)

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

सदानंद कविसूर्य ब्रह्मा

नाहिँ मो डर

कहइ नागरी वर
केउँ सजनी आगर
काढिलि ओढणा होइलि बाहार
श्याम बंधु हेउ मोर । १ ।

खळकु नाहिँ मो डर
खटिबि चरणे तार
खसिला खसणि सरकि रहइ
मो मन हेलाणि तार । २ ।

ग्यान ध्यान सबु मोर
गोबिंद नंद किशोर
गुपते सिना मुँ तोते कहुअछि
पापकु नाहिँ मो डर । ३ ।

घेनिथा मनरे एते
घोर बिजन बनस्ते,
घनश्याम चंद्र— मुख देखुथिले
बैकुंठ छार बा केते । ४ ।

निष्ठा एहि कथा मोर
न पाइ नट नागर
नारायण पुरे बास न योगाइ
नरके पडिबा सार । ५ ।

चूर्ण्ण कुंतळ आवृत
चंद्र बदन मो कांत
चउद ब्रह्मांड लोक छडाइले
छाडि न पारइ चित्त । ६ ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

छइळ छबि छटक
छडाइ देला बिबेक
छन्न छन्न होए मन अबिच्छन्न
हृद हुए दकदक । ७ ।

जगमोहिनी मंतर
जाणंति मूरलीधर
या गीतरे द्रब पाषाण होअइ
पाणि हेब कि पथर । ८ ।

झटति पल्लबे तरु
झटति पल्लबे दारु
झाम याइ उड़ि गला पक्षी उडे
कि छार अबळा भीरु । ९ ।

निबर्त्ताउ परा मोते
मुँ एबे कहुछि तोते
निज मनकु तु तोहरि पचार
कि हुअइ बंशी गीते । १० ।

टळइ मेरु मंदर
टळिब कि बाणी मोर
टमक निशाण बाजे त्रिभुबन
राधा हेलेणि कृष्णर । ११ ।

ठुळ पुरुष उत्तम
ठिके रसिक राये नाम,
ठिके सदानंद कबिसूर्य ब्रह्मा
लभि हेब पूर्णकाम । १२ ।

(प्रेमचिंतामणि चउतिशा)

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

केशव पट्टनायक

तुंभ संगे मुहिँ यिबि

(राग—घंटारव)

सीता—तुंभ संगे मुहिँ यिबि, हे
नाहिँ कले न मानिाब,
छाइ परि पाशे सेबा करिबि हे रघुनंदन !
रूप शोभा देखुथिबि ।

राम— सखि ! तु एहा न कह गो,
शाशु पादे चित्त दिअ,
जननीमानंक मन तु निअ गो, रामारतन !
श्वशुरंकु सेबि थाअ ।

सीता—ये.ते ऋषि पूर्बे थिले हे,
ये.ते रामायण कले,
जाण कि जानकी संगे न नेले हे, रघुनंदन !
राम बनबास गले ।

राम— हंसुली तुळारे शोइ रे
निद्रा ये. आसइ नाहिँ ।
फळमूळ खाइ डाळ शेये. शोइ रे रामारतन !
कि काळ काटिबु तुहि ।

सीता—तुंभकु बिना मो आश हे,
तुंभे मो लोभ मुहाँस
तुंभर ये.सते अरण्ये बास हे, रघुनंदन !
घरे मुँ करिबि किस ?

राम— अति सुकुमारी तुहि गो,
लबणी पितुळा देही ।
खराबेळे बाट चालिबु केहि रे, रामारतन !
तातला पथर भूइँ ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

सीता—अंतर कले ए घांति हे,
झुरिमरुथिबि निति
असर होइब बासर राति, हे रघुनंदन।
फाटि याउथिब छाति।

राम— न पारि तु अशकते गो,
निसते बसिबु पथे,
जळ जात कले जळज नेत्रे, गो रामारतन।
कि दुःख न देबु मोते।

सीता—कहुछ केते चातर हे,
तुंभे कि एका चतुर,
तुंभ ठारु परा मुँ सुकुमार हे रघुनंदन।
रख रख ए बिचार।

राम— लउलि बयस तोर गो,
लता तरु बन घोर,
लंघि पारिबु कि गिरि शिखर, गो रामारतन।
तुहँ ए अयोध्यापुर।

सीता—केउँ सधके रहिबि हे,
काहाकु दुःख कहिबि,
कैकेयी गुमान मुँ कि सहिबि, हे रघुनंदन।
प्राण सिना हराइबि।

राम— आपणा छाइकि डरु गो,
चमकि भयरे थरु।
केउँ दंभपणे घरु वाहारु, गो रामारतन।
किपा मो संसार सारु।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

सीता—निश्चें ये.वे छाडि यिब हे,
एहि यश अरजिब ।
निकर मोर ए आखर हेब, हे रघुनंदन ।
आसि आउ न देखिब ।

(नृत्य रामायण—३३श छांद)

—*—

ज्ञानीन्द्र बर्मा

मूर्त्ति उ मंदिर

शास्तर बाहारे पुणि तुमे ए ये. बुल
कह हे ईश्वर,
तमकु कि पाइछंति सते लोक केते
आम ए बिश्वर ?

तमकु ये. पाइ किस करि याइछंति
कह आहे कह,
तम भळि धन पाइ से कि पारिछंति
नाशि दुःखि लुह ?

तब नामे अनुष्ठान याहा से गढिले
काहिँ हे मंगळ,
दीन एक कृषकर कुटीरु त ताहा
नुहे महत्तर ।

दुनिआँरे बैषम्यर स्थान यदि थाए
ताहा त मंदिर
कारागृह मो बिचारे एहाठारु भल,
एहाठुँ रुचिर ।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

आर्द्र आखे बंदी बसि निज पाप नाशे
ढाळे ग्लानि नीर,
एठि ये. मंजीर बाजे प्रत्यह प्रदोषे
व्यभिचारिणीर ।

तेबे तुमे किस कर ए मंदिरे बसि
मुँ पचारे थरे
एहि किबा काम तब मणिषकु नेबा
पिच्छिळ पथरे ?
परकीया तब अंगे निभाइबा
लभे प्रादुर्भाव,
सीतार दहन तब सती दाहे यथा
होइला संभव ।
तुमे थिब, थिब पुणि तब इतिहास,
थिबे प्रवंचक,

कोटि युगे न पारिब भारत उद्धारि
कौणसि पावक ।
भरतिआ विधु नाम गाए ये.उँ देशे
मृग करे स्तुति,
अति भंड ये.उँ देशे साधु होइ पारे
माखिले बिभूति ।
बृक्षरे सिंदूर बाजुँ तमे जन्म निअ
से देशुँ किपरि
निर्बासित तमे हेब, हे पाषाण प्राण,
बृक्षमय हरि !

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

मंदिर भांगिब सत शिळा त रहिब,
रहिब त तरु ;
तेबे किबा एहि देशे करिबाकु हेब
आरबर मरु ?
बेदुइन परि पछ जीवन काटिबा
ताहा बरं श्रेय,
ध्वंस हेउ अंधकार कुंभीपाक बास
ए जीबन हेय ।

—*—

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy